

## **Resource: Indian Revised Version**

### **License Information**

**Indian Revised Version** (Hindi) is based on: Hindi Indian Revised Version, [Bridge Connectivity Solutions](#), 2019, which is licensed under a [CC BY-SA 4.0 license](#).

This PDF version is provided under the same license.

## **Indian Revised Version**

1SA



28:17, 1 Samuel 28:18, 1 Samuel 28:19, 1 Samuel 28:20, 1 Samuel 28:21, 1 Samuel 28:22, 1 Samuel 28:23, 1 Samuel 28:24, 1 Samuel 28:25, 1 Samuel 29:1, 1 Samuel 29:2, 1 Samuel 29:3, 1 Samuel 29:4, 1 Samuel 29:5, 1 Samuel 29:6, 1 Samuel 29:7, 1 Samuel 29:8, 1 Samuel 29:9, 1 Samuel 29:10, 1 Samuel 29:11, 1 Samuel 30:1, 1 Samuel 30:2, 1 Samuel 30:3, 1 Samuel 30:4, 1 Samuel 30:5, 1 Samuel 30:6, 1 Samuel 30:7, 1 Samuel 30:8, 1 Samuel 30:9, 1 Samuel 30:10, 1 Samuel 30:11, 1 Samuel 30:12, 1 Samuel 30:13, 1 Samuel 30:14, 1 Samuel 30:15, 1 Samuel 30:16, 1 Samuel 30:17, 1 Samuel 30:18, 1 Samuel 30:19, 1 Samuel 30:20, 1 Samuel 30:21, 1 Samuel 30:22, 1 Samuel 30:23, 1 Samuel 30:24, 1 Samuel 30:25, 1 Samuel 30:26, 1 Samuel 30:27, 1 Samuel 30:28, 1 Samuel 30:29, 1 Samuel 30:30, 1 Samuel 30:31, 1 Samuel 31:1, 1 Samuel 31:2, 1 Samuel 31:3, 1 Samuel 31:4, 1 Samuel 31:5, 1 Samuel 31:6, 1 Samuel 31:7, 1 Samuel 31:8, 1 Samuel 31:9, 1 Samuel 31:10, 1 Samuel 31:11, 1 Samuel 31:12, 1 Samuel 31:13

## 1 Samuel 1:1

<sup>1</sup> एप्रैम के पहाड़ी देश के रामातैम सोपीम नगर का निवासी एल्काना नामक एक पुरुष था, वह एप्रैमी था, और सूफ के पुत्र तोहू का परपोता, एलीहू का पोता, और यरोहाम का पुत्र था।

## 1 Samuel 1:2

<sup>2</sup> और उसकी दो पत्नियाँ थीं; एक का नाम हन्ना और दूसरी का पनिन्ना था। पनिन्ना के तो बालक हुए, परन्तु हन्ना के कोई बालक न हुआ।

## 1 Samuel 1:3

<sup>3</sup> वह पुरुष प्रतिवर्ष अपने नगर से सेनाओं के यहोवा को दण्डवत करने और मेलबलि चढ़ाने के लिये शीलो में जाता था; और वहाँ होप्नी और पीनहास नामक एली के दोनों पुत्र रहते थे, जो यहोवा के याजक थे।

## 1 Samuel 1:4

<sup>4</sup> और जब जब एल्काना मेलबलि चढ़ाता था तब-तब वह अपनी पत्नी पनिन्ना को और उसके सब बेटे-बेटियों को दान दिया करता था;

## 1 Samuel 1:5

<sup>5</sup> परन्तु हन्ना को वह दो गुना दान दिया करता था, क्योंकि वह हन्ना से प्रीति रखता था; तो भी यहोवा ने उसकी कोख बन्द कर रखी थी।

## 1 Samuel 1:6

<sup>6</sup> परन्तु उसकी सौत इस कारण से, कि यहोवा ने उसकी कोख बन्द कर रखी थी, उसे अत्यन्त चिढ़ाकर कुछाती रहती थी।

## 1 Samuel 1:7

<sup>7</sup> वह तो प्रतिवर्ष ऐसा ही करता था; और जब हन्ना यहोवा के भवन को जाती थी तब पनिन्ना उसको चिढ़ाती थी। इसलिए वह रोती और खाना न खाती थी।

## 1 Samuel 1:8

<sup>8</sup> इसलिए उसके पति एल्काना ने उससे कहा, “हे हन्ना, तू क्यों रोती है? और खाना क्यों नहीं खाती? और तेरा मन क्यों उदास है? क्या तेरे लिये मैं दस बेटों से भी अच्छा नहीं हूँ?”

## 1 Samuel 1:9

<sup>9</sup> तब शीलो में खाने और पीने के बाद हन्ना उठी। और यहोवा के मन्दिर के चौखट के एक बाजू के पास एली याजक कुर्सी पर बैठा हुआ था।

## 1 Samuel 1:10

<sup>10</sup> वह मन में व्याकुल होकर यहोवा से प्रार्थना करने और बिलख-बिलख कर रोने लगी।

## 1 Samuel 1:11

<sup>11</sup> और उसने यह मन्त्र मानी, “हे सेनाओं के यहोवा, यदि तू अपनी दासी के दुःख पर सचमुच दृष्टि करे, और मेरी सुधि ले, और अपनी दासी को भूल न जाए, और अपनी दासी को पुत्र दे, तो मैं उसके जीवन भर के लिये यहोवा को अर्पण करूँगी, और उसके सिर पर छुरा फिरने न पाएगा।”

**1 Samuel 1:12**

<sup>12</sup> जब वह यहोवा के सामने ऐसी प्रार्थना कर रही थी, तब एली उसके मुँह की ओर ताक रहा था।

**1 Samuel 1:13**

<sup>13</sup> हन्ना मन ही मन कह रही थी; उसके होंठ तो हिलते थे परन्तु उसका शब्द न सुन पड़ता था; इसलिए एली ने समझा कि वह नशे में है।

**1 Samuel 1:14**

<sup>14</sup> तब एली ने उससे कहा, ‘तू कब तक नशे में रहेगी? अपना नशा उतार।’

**1 Samuel 1:15**

<sup>15</sup> हन्ना ने कहा, “नहीं, हे मेरे प्रभु, मैं तो दुःखिया हूँ; मैंने न तो दाखमधु पिया है और न मदिरा, मैंने अपने मन की बात खोलकर यहोवा से कही है।

**1 Samuel 1:16**

<sup>16</sup> अपनी दासी को ओछी स्त्री न जान, जो कुछ मैंने अब तक कहा है, वह बहुत ही शोकित होने और चिढ़ाई जाने के कारण कहा है।”

**1 Samuel 1:17**

<sup>17</sup> एली ने कहा, “कुशल से चली जा; इसाएल का परमेश्वर तुझे मन चाहा वर दे।”

**1 Samuel 1:18**

<sup>18</sup> उसने कहा, ‘तेरी दासी तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाए।’ तब वह स्त्री चली गई और खाना खाया, और उसका मुँह फिर उदास न रहा।

**1 Samuel 1:19**

<sup>19</sup> वे सवेरे उठ यहोवा को दण्डवत् करके रामाह में अपने घर लौट गए। और एल्काना अपनी स्त्री हन्ना के पास गया, और यहोवा ने उसकी सुधि ली;

**1 Samuel 1:20**

<sup>20</sup> तब हन्ना गर्भवती हुई और समय पर उसके एक पुत्र हुआ, और उसका नाम शमूएल रखा, क्योंकि वह कहने लगी, “मैंने यहोवा से माँगकर इसी पाया है।”

**1 Samuel 1:21**

<sup>21</sup> फिर एल्काना अपने पूरे घराने समेत यहोवा के सामने प्रतिवर्ष की मेलबलि चढ़ाने और अपनी मन्त्रत पूरी करने के लिये गया।

**1 Samuel 1:22**

<sup>22</sup> परन्तु हन्ना अपने पति से यह कहकर घर में रह गई, “जब बालक का दूध छूट जाएगा तब मैं उसको ले जाऊँगी, कि वह यहोवा को मुँह दिखाए, और वहाँ सदा बना रहे।”

**1 Samuel 1:23**

<sup>23</sup> उसके पति एल्काना ने उससे कहा, “जो तुझे भला लगे वही कर जब तक तू उसका दूध न छुड़ाए तब तक यहीं ठहरी रह; केवल इतना ही कि यहोवा अपना वचन पूरा करे।” इसलिए वह स्त्री वहीं घर पर रह गई और अपने पुत्र के दूध छूटने के समय तक उसको पिलाती रही।

**1 Samuel 1:24**

<sup>24</sup> जब उसने उसका दूध छुड़ाया तब वह उसको संग ले गई, और तीन बछड़े, और एपा भर आटा, और कुप्पी भर दाखमधु भी ले गई, और उस लड़के को शीलो में यहोवा के भवन में पहुँचा दिया; उस समय वह लड़का ही था।

**1 Samuel 1:25**

<sup>25</sup> और उन्होंने बछड़ा बलि करके बालक को एली के पास पहुँचा दिया।

**1 Samuel 1:26**

<sup>26</sup> तब हन्ना ने कहा, “हे मेरे प्रभु, तेरे जीवन की शपथ, हे मेरे प्रभु, मैं वही स्त्री हूँ जो तेरे पास यहीं खड़ी होकर यहोवा से प्रार्थना करती थी।

**1 Samuel 1:27**

<sup>27</sup> यह वही बालक है जिसके लिये मैंने प्रार्थना की थी; और यहोवा ने मुझे मुँह माँगा वर दिया है।

**1 Samuel 1:28**

<sup>28</sup> इसलिए मैं भी उसे यहोवा को अर्पण कर देती हूँ; कि यह अपने जीवन भर यहोवा ही का बना रहे।” तब उसने वहीं यहोवा को दण्डवत् किया।

**1 Samuel 2:1**

<sup>1</sup> तब हन्ना ने प्रार्थना करके कहा, “मेरा मन यहोवा के कारण मग्न है; मेरा सींग यहोवा के कारण ऊँचा हुआ है। मेरा मुँह मेरे शत्रुओं के विरुद्ध खुल गया, क्योंकि मैं तेरे किए हुए उद्धार से आनन्दित हूँ।

**1 Samuel 2:2**

<sup>2</sup> “यहोवा के तुल्य कोई पवित्र नहीं, क्योंकि तुझको छोड़ और कोई है ही नहीं; और हमारे परमेश्वर के समान कोई चट्टान नहीं है।

**1 Samuel 2:3**

<sup>3</sup> फूलकर अहंकार की ओर बातें मत करो, और अंधेर की बातें तुम्हारे मुँह से न निकलें; क्योंकि यहोवा ज्ञानी परमेश्वर है, और कामों का तौलनेवाला है।

**1 Samuel 2:4**

<sup>4</sup> शूरवीरों के धनुष टूट गए, और ठोकर खानेवालों की कमर में बल का फेटा कसा गया।

**1 Samuel 2:5**

<sup>5</sup> जो पेट भरते थे उन्हें रोटी के लिये मजदूरी करनी पड़ी, जो भूखे थे वे फिर ऐसे न रहे। वरन् जो बाँझ थी उसके सात हुए, और अनेक बालकों की माता घुलती जाती है।

**1 Samuel 2:6**

<sup>6</sup> यहोवा मारता है और जिलाता भी है; वही अधोलोक में उतारता और उससे निकालता भी है।

**1 Samuel 2:7**

<sup>7</sup> यहोवा निर्धन करता है और धनी भी बनाता है, वही नीचा करता और ऊँचा भी करता है।

**1 Samuel 2:8**

<sup>8</sup> वह कंगाल को धूलि में से उठाता; और दरिद्र को धूरे में से निकाल खड़ा करता है, ताकि उनको अधिपतियों के संग बैठाए, और महिमायुक्त सिंहासन के अधिकारी बनाए। क्योंकि पृथ्वी के खम्मे यहोवा के हैं, और उसने उन पर जगत को धरा है।

**1 Samuel 2:9**

<sup>9</sup> “वह अपने भक्तों के पाँवों को सम्माले रहेगा, परन्तु दुष्ट अंधियारे में चुपचाप पड़े रहेंगे; क्योंकि कोई मनुष्य अपने बल के कारण प्रबल न होगा।

**1 Samuel 2:10**

<sup>10</sup> जो यहोवा से झागड़ते हैं वे चकनाचूर होंगे; वह उनके विरुद्ध आकाश में गरजेगा। यहोवा पृथ्वी की छोर तक न्याय करेगा; और अपने राजा को बल देगा, और अपने अभिषिक्त के सींग को ऊँचा करेगा।”

**1 Samuel 2:11**

<sup>11</sup> तब एल्काना रामाह को अपने घर चला गया। और वह बालक एली याजक के सामने यहोवा की सेवा टहल करने लगा।

**1 Samuel 2:12**

<sup>12</sup> एली के पुत्र तो लुच्चे थे; उन्होंने यहोवा को न पहचाना।

**1 Samuel 2:13**

<sup>13</sup> याजकों की रीति लोगों के साथ यह थी, कि जब कोई मनुष्य मेलबलि चढ़ाता था तब याजक का सेवक माँस पकाने के समय एक नौकवाला काँटा हाथ में लिये हुए आकर,

**1 Samuel 2:14**

<sup>14</sup> उसे कड़ाही, या हाण्डी, या हँडे, या तसले के भीतर डालता था; और जितना माँस काँटे में लग जाता था उतना याजक आप ले लेता था। ऐसा ही वे शीलों में सारे इसाएलियों से किया करते थे जो वहाँ आते थे।

**1 Samuel 2:15**

<sup>15</sup> और चर्बी जलाने से पहले भी याजक का सेवक आकर मेलबलि चढ़ानेवाले से कहता था, “भूनने के लिये याजक को माँस दे; वह तुझ से पका हुआ नहीं, कच्चा ही माँस लेगा।”

**1 Samuel 2:16**

<sup>16</sup> और जब कोई उससे कहता, “निश्चय चर्बी अभी जलाई जाएगी, तब जितना तेरा जी चाहे उतना ले लेना,” तब वह कहता था, “नहीं, अभी दे; नहीं तो मैं छीन लूँगा।”

**1 Samuel 2:17**

<sup>17</sup> इसलिए उन जवानों का पाप यहोवा की वृष्टि में बहुत भारी हुआ; क्योंकि वे मनुष्य यहोवा की भेट का तिरस्कार करते थे।

**1 Samuel 2:18**

<sup>18</sup> परन्तु शमूएल जो बालक था सनी का एपोद पहने हुए यहोवा के सामने सेवा टहल किया करता था।

**1 Samuel 2:19**

<sup>19</sup> और उसकी माता प्रतिवर्ष उसके लिये एक छोटा सा बागा बनाकर जब अपने पति के संग प्रतिवर्ष की मेलबलि चढ़ाने आती थी तब बागों को उसके पास लाया करती थी।

**1 Samuel 2:20**

<sup>20</sup> एली ने एल्काना और उसकी पत्नी को आशीर्वाद देकर कहा, “यहोवा इस अर्पण किए हुए बालक के बदले जो उसको अर्पण किया गया है तुझको इस पत्नी से वंश दे;” तब वे अपने यहाँ चले गए।

**1 Samuel 2:21**

<sup>21</sup> यहोवा ने हन्ना की सुधि ली, और वह गर्भवती हुई और उसके तीन बेटे और दो बेटियाँ उत्पन्न हुईं। और बालक शमूएल यहोवा के संग रहता हुआ बढ़ता गया।

**1 Samuel 2:22**

<sup>22</sup> एली तो अति बूढ़ा हो गया था, और उसने सुना कि उसके पुत्र सारे इसाएल से कैसा-कैसा व्यवहार करते हैं, वरन् मिलापवाले तम्बू के द्वार पर सेवा करनेवाली स्त्रियों के संग कुकर्म भी करते हैं।

**1 Samuel 2:23**

<sup>23</sup> तब उसने उनसे कहा, “तुम ऐसे-ऐसे काम क्यों करते हो? मैं इन सब लोगों से तुम्हारे कुकर्मों की चर्चा सुना करता हूँ।

**1 Samuel 2:24**

<sup>24</sup> हे मेरे बेटों, ऐसा न करो, क्योंकि जो समाचार मेरे सुनने में आता है वह अच्छा नहीं; तुम तो यहोवा की प्रजा से अपराध कराते हो।

**1 Samuel 2:25**

<sup>25</sup> यदि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का अपराध करे, तब तो न्यायी उसका न्याय करेगा; परन्तु यदि कोई मनुष्य यहोवा के विरुद्ध पाप करे, तो उसके लिये कौन विनती करेगा?” तो भी उन्होंने अपने पिता की बात न मानी; क्योंकि यहोवा की इच्छा उन्हें मार डालने की थी।

**1 Samuel 2:26**

<sup>26</sup> परन्तु शमूएल बालक बढ़ता गया और यहोवा और मनुष्य दोनों उससे प्रसन्न रहते थे।

### 1 Samuel 2:27

<sup>27</sup> परमेश्वर का एक जन एली के पास जाकर उससे कहने लगा, “यहोवा यह कहता है, कि जब तेरे मूलपुरुष का घराना मिस्र में फ़िरौन के घराने के बश में था, तब क्या मैं उस पर निश्चय प्रगट न हुआ था?

### 1 Samuel 2:28

<sup>28</sup> और क्या मैंने उसे इसाएल के सब गोत्रों में से इसलिए चुन नहीं लिया था, कि मेरा याजक होकर मेरी वेदी के ऊपर चढ़ावे चढ़ाए, और धूप जलाए, और मेरे सामने एपोद पहना करे? और क्या मैंने तेरे मूलपुरुष के घराने को इसाएलियों के सारे हव्य न दिए थे?

### 1 Samuel 2:29

<sup>29</sup> इसलिए मेरे मेलबलि और अन्नबलि को जिनको मैंने अपने धाम में चढ़ाने की आज्ञा दी है, उन्हें तुम लोग क्यों पाँव तले रौंदते हो? और तू क्यों अपने पुत्रों का मुझसे अधिक आदर करता है, कि तुम लोग मेरी इसाएली प्रजा की अच्छी से अच्छी भेंट खा खाके मोटे हो जाओ?

### 1 Samuel 2:30

<sup>30</sup> इसलिए इसाएल के परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, कि मैंने कहा तो था, कि तेरा घराना और तेरे मूलपुरुष का घराना मेरे सामने सदैव चला करेगा; परन्तु अब यहोवा की वाणी यह है, कि यह बात मुझसे दूर हो; क्योंकि जो मेरा आदर करें मैं उनका आदर करूँगा, और जो मुझे तुच्छ जानें वे छोटे समझे जाएँगे।

### 1 Samuel 2:31

<sup>31</sup> सुन, वे दिन आते हैं, कि मैं तेरा भुजबल और तेरे मूलपुरुष के घराने का भुजबल ऐसा तोड़ डालूँगा, कि तेरे घराने में कोई बूढ़ा होने न पाएगा।

### 1 Samuel 2:32

<sup>32</sup> इसाएल का कितना ही कल्याण क्यों न हो, तो भी तुझे मेरे धाम का दुःख देख पड़ेगा, और तेरे घराने में कोई कभी बूढ़ा न होने पाएगा।

### 1 Samuel 2:33

<sup>33</sup> मैं तेरे कुल के सब किसी से तो अपनी वेदी की सेवा न छीनूँगा, परन्तु तो भी तेरी आँखें देखती रह जाएँगी, और तेरा मन शोकित होगा, और तेरे घर की बढ़ती सब अपनी पूरी जवानी ही में मर मिटेंगे।

### 1 Samuel 2:34

<sup>34</sup> और मेरी इस बात का चिन्ह वह विपत्ति होगी जो होप्ती और पीनहास नामक तेरे दोनों पुत्रों पर पड़ेगी; अर्थात् वे दोनों के दोनों एक ही दिन मर जाएँग।

### 1 Samuel 2:35

<sup>35</sup> और मैं अपने लिये एक विश्वासयोग्य याजक ठहराऊँगा, जो मेरे हृदय और मन की इच्छा के अनुसार किया करेगा, और मैं उसका घर बसाऊँगा और स्थिर करूँगा, और वह मेरे अभिषिक्त के आगे-आगे सब दिन चला फिरा करेगा।

### 1 Samuel 2:36

<sup>36</sup> और ऐसा होगा कि जो कोई तेरे घराने में बचा रहेगा वह उसी के पास जाकर एक छोटे से टुकड़े चाँदी के या एक रोटी के लिये दण्डवत् करके कहेगा, याजक के किसी काम में मुझे लगा, जिससे मुझे एक टुकड़ा रोटी मिले।”

### 1 Samuel 3:1

<sup>1</sup> वह बालक शमूएल एली के सामने यहोवा की सेवा ठहल करता था। उन दिनों में यहोवा का वचन दुर्लभ था; और दर्शन कम मिलता था।

### 1 Samuel 3:2

<sup>2</sup> और उस समय ऐसा हुआ कि (एली की आँखें तो धूँधली होने लगी थीं और उसे न सूझ पड़ता था) जब वह अपने स्थान में लेटा हुआ था,

### 1 Samuel 3:3

<sup>3</sup> और परमेश्वर का दीपक अब तक बुझा नहीं था, और शमूएल यहोवा के मन्दिर में जहाँ परमेश्वर का सन्दूक था, लेटा था;

**1 Samuel 3:4**

<sup>4</sup> तब यहोवा ने शमूएल को पुकारा; और उसने कहा, “क्या आज्ञा!”

**1 Samuel 3:5**

<sup>5</sup> तब उसने एली के पास दौड़कर कहा, “क्या आज्ञा, तूने तो मुझे पुकारा है।” वह बोला, “मैंने नहीं पुकारा; फिर जा लेटा रह।” तो वह जाकर लेट गया।

**1 Samuel 3:6**

<sup>6</sup> तब यहोवा ने फिर पुकारके कहा, “हे शमूएल!” शमूएल उठकर एली के पास गया, और कहा, “क्या आज्ञा, तूने तो मुझे पुकारा है।” उसने कहा, “हे मेरे बेटे, मैंने नहीं पुकारा; फिर जा लेटा रह।”

**1 Samuel 3:7**

<sup>7</sup> उस समय तक तो शमूएल यहोवा को नहीं पहचानता था, और न यहोवा का वचन ही उस पर प्रगट हुआ था।

**1 Samuel 3:8**

<sup>8</sup> फिर तीसरी बार यहोवा ने शमूएल को पुकारा। और वह उठकर एली के पास गया, और कहा, “क्या आज्ञा, तूने तो मुझे पुकारा है।” तब एली ने समझ लिया कि इस बालक को यहोवा ने पुकारा है।

**1 Samuel 3:9**

<sup>9</sup> इसलिए एली ने शमूएल से कहा, “जा लेटा रह; और यदि वह तुझे फिर पुकारे, तो तू कहना, ‘हे यहोवा, कह, क्योंकि तेरा दास सुन रहा है।’” तब शमूएल अपने स्थान पर जाकर लेट गया।

**1 Samuel 3:10**

<sup>10</sup> तब यहोवा आ खड़ा हुआ, और पहले के समान पुकारा, “शमूएल! शमूएल!” शमूएल ने कहा, “कह, क्योंकि तेरा दास सुन रहा है।”

**1 Samuel 3:11**

<sup>11</sup> यहोवा ने शमूएल से कहा, “सुन, मैं इसाएल में एक ऐसा काम करने पर हूँ, जिससे सब सुननेवालों पर बड़ा सन्नाटा छा जाएगा।

**1 Samuel 3:12**

<sup>12</sup> उस दिन मैं एली के विरुद्ध वह सब कुछ पूरा करूँगा जो मैंने उसके घराने के विषय में कहा, उसे आरम्भ से अन्त तक पूरा करूँगा।

**1 Samuel 3:13**

<sup>13</sup> क्योंकि मैं तो उसको यह कहकर जता चुका हूँ, कि मैं उस अधर्म का दण्ड जिसे वह जानता है सदा के लिये उसके घर का न्याय करूँगा, क्योंकि उसके पुत्र आप श्रापित हुए हैं, और उसने उन्हें नहीं रोका।

**1 Samuel 3:14**

<sup>14</sup> इस कारण मैंने एली के घराने के विषय यह शपथ खाई, कि एली के घराने के अधर्म का प्रायश्चित न तो मेलबलि से कभी होगा, और न अन्नबलि से।”

**1 Samuel 3:15**

<sup>15</sup> और शमूएल भोर तक लेटा रहा; तब उसने यहोवा के भवन के किवाड़ों को खोला। और शमूएल एली को उस दर्शन की बातें बताने से डरा।

**1 Samuel 3:16**

<sup>16</sup> तब एली ने शमूएल को पुकारकर कहा, “हे मेरे बेटे, शमूएल!” वह बोला, “क्या आज्ञा।”

**1 Samuel 3:17**

<sup>17</sup> तब उसने पूछा, “वह कौन सी बात है जो यहोवा ने तुझ से कही है? उसे मुझसे न छिपा। जो कुछ उसने तुझ से कहा हो यदि तू उसमें से कुछ भी मुझसे छिपाए, तो परमेश्वर तुझ से वैसा ही वरन् उससे भी अधिक करे।”

**1 Samuel 3:18**

<sup>18</sup> तब शमूएल ने उसको रत्ती-रत्ती बातें कह सुनाई, और कुछ भी न छिपा रखा। वह बोला, “वह तो यहोवा है; जो कुछ वह भला जाने वही करे।”

**1 Samuel 3:19**

<sup>19</sup> और शमूएल बड़ा होता गया, और यहोवा उसके संग रहा, और उसने शमूएल की कोई भी बात निष्फल होने नहीं दी।

**1 Samuel 3:20**

<sup>20</sup> और दान से बेर्शेबा तक के रहनेवाले सारे इस्राएलियों ने जान लिया कि शमूएल यहोवा का नबी होने के लिये नियुक्त किया गया है।

**1 Samuel 3:21**

<sup>21</sup> और यहोवा ने शीलो में फिर दर्शन दिया, क्योंकि यहोवा ने अपने आपको शीलो में शमूएल पर अपने वचन के द्वारा प्रगट किया।

**1 Samuel 4:1**

<sup>1</sup> और शमूएल का वचन सारे इस्राएल के पास पहुँचा। और इस्राएली पलिश्तियों से युद्ध करने को निकले; और उन्होंने तो एबेनेजेर के आस-पास छावनी डाली, और पलिश्तियों ने अपेक्ष में छावनी डाली।

**1 Samuel 4:2**

<sup>2</sup> तब पलिश्तियों ने इस्राएल के विरुद्ध पाँति बाँधी, और जब घमासान युद्ध होने लगा तब इस्राएली पलिश्तियों से हार गए, और उन्होंने कोई चार हजार इस्राएली सेना के पुरुषों को मैदान में ही मार डाला।

**1 Samuel 4:3**

<sup>3</sup> जब वे लोग छावनी में लौट आए, तब इस्राएल के वृद्ध लोग कहने लगे, “यहोवा ने आज हमें पलिश्तियों से क्यों हरवा दिया है? आओ, हम यहोवा की वाचा का सन्दूक शीलो से माँग ले

आएँ, कि वह हमारे बीच में आकर हमें शत्रुओं के हाथ से बचाए।”

**1 Samuel 4:4**

<sup>4</sup> तब उन लोगों ने शीलो में भेजकर वहाँ से करूबों के ऊपर विराजनेवाले सेनाओं के यहोवा की वाचा का सन्दूक मँगवा लिया; और परमेश्वर की वाचा के सन्दूक के साथ ऐली के दोनों पुत्र, होम्पी और पीनहास भी वहाँ थे।

**1 Samuel 4:5**

<sup>5</sup> जब यहोवा की वाचा का सन्दूक छावनी में पहुँचा, तब सारे इस्राएली इतने बल से ललकार उठे, कि भूमि गूँज उठी।

**1 Samuel 4:6**

<sup>6</sup> इस ललकार का शब्द सुनकर पलिश्तियों ने पूछा, “इब्रियों की छावनी में ऐसी बड़ी ललकार का क्या कारण है?” तब उन्होंने जान लिया, कि यहोवा का सन्दूक छावनी में आया है।

**1 Samuel 4:7**

<sup>7</sup> तब पलिश्ती डरकर कहने लगे, “उस छावनी में परमेश्वर आ गया है।” फिर उन्होंने कहा, “हाय! हम पर ऐसी बात पहले नहीं हुई थी।

**1 Samuel 4:8**

<sup>8</sup> हाय! ऐसे महाप्रतापी देवताओं के हाथ से हमको कौन बचाएगा? ये तो वे ही देवता हैं जिन्होंने मिस्रियों पर जंगल में सब प्रकार की विपत्तियाँ डाली थीं।

**1 Samuel 4:9**

<sup>9</sup> हे पलिश्तियों, तुम हियाव बाँधो, और पुरुषार्थ जगाओ, कहीं ऐसा न हो कि जैसे इब्री तुम्हारे अधीन हो गए वैसे तुम भी उनके अधीन हो जाओ; पुरुषार्थ करके संग्राम करो।”

**1 Samuel 4:10**

<sup>10</sup> तब पलिश्ती लड़ाई के मैदान में टूट पड़े, और इस्माएली हारकर अपने-अपने डेरे को भागने लगे; और ऐसा अत्यन्त संहार हुआ, कि तीस हजार इस्माएली पैदल खेत आए।

**1 Samuel 4:11**

<sup>11</sup> और परमेश्वर का सन्दूक छीन लिया गया; और एली के दोनों पुत्र, होम्पी और पीनहास, भी मारे गए।

**1 Samuel 4:12**

<sup>12</sup> तब उसी दिन एक बिन्यामीनी मनुष्य सेना में से दौड़कर अपने वस्त्र फाड़े और सिर पर मिट्टी डाले हुए शीलो पहुँचा।

**1 Samuel 4:13**

<sup>13</sup> वह जब पहुँचा उस समय एली, जिसका मन परमेश्वर के सन्दूक की चिन्ता से थरथरा रहा था, वह मार्ग के किनारे कुर्सी पर बैठा बाट जोह रहा था। और जैसे ही उस मनुष्य ने नगर में पहुँचकर वह समाचार दिया वैसे ही सारा नगर चिल्ला उठा।

**1 Samuel 4:14**

<sup>14</sup> चिल्लाने का शब्द सुनकर एली ने पूछा, “ऐसे हुल्लड़ और हाहाकार मचने का क्या कारण है?” और उस मनुष्य ने झट जाकर एली को पूरा हाल सुनाया।

**1 Samuel 4:15**

<sup>15</sup> एली तो अठानवे वर्ष का था, और उसकी आँखें धुंधली पड़ गई थीं, और उसे कुछ सूझता न था।

**1 Samuel 4:16**

<sup>16</sup> उस मनुष्य ने एली से कहा, “मैं वही हूँ जो सेना में से आया हूँ; और मैं सेना से आज ही भागकर आया हूँ।” वह बोला, “हे मेरे बेटे, क्या समाचार है?”

**1 Samuel 4:17**

<sup>17</sup> उस समाचार देनेवाले ने उत्तर दिया, “इस्माएली पलिश्तियों के सामने से भाग गए हैं, और लोगों का बड़ा भयानक संहार

भी हुआ है, और तेरे दोनों पुत्र होम्पी और पीनहास भी मारे गए, और परमेश्वर का सन्दूक भी छीन लिया गया है।”

**1 Samuel 4:18**

<sup>18</sup> जैसे ही उसने परमेश्वर के सन्दूक का नाम लिया वैसे ही एली फाटक के पास कुर्सी पर से पछाड़ खाकर गिर पड़ा; और बूढ़ा और भारी होने के कारण उसकी गर्दन टूट गई, और वह मर गया। उसने तो इस्माएलियों का न्याय चालीस वर्ष तक किया था।

**1 Samuel 4:19**

<sup>19</sup> उसकी बहू पीनहास की स्त्री गर्भवती थी, और उसका समय समीप था। और जब उसने परमेश्वर के सन्दूक के छीन लिए जाने, और अपने ससुर और पति के मरने का समाचार सुना, तब उसको जच्चा का दर्द उठा, और वह दुहर गई, और उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ।

**1 Samuel 4:20**

<sup>20</sup> उसके मरते-मरते उन स्त्रियों ने जो उसके आस-पास खड़ी थीं उससे कहा, “मत डर, क्योंकि तेरे पुत्र उत्पन्न हुआ है।” परन्तु उसने कुछ उत्तर न दिया, और न कुछ ध्यान दिया।

**1 Samuel 4:21**

<sup>21</sup> और परमेश्वर के सन्दूक के छीन लिए जाने और अपने ससुर और पति के कारण उसने यह कहकर उस बालक का नाम इकाबोद रखा, “इस्माएल में से महिमा उठ गई!”

**1 Samuel 4:22**

<sup>22</sup> फिर उसने कहा, “इस्माएल में से महिमा उठ गई है, क्योंकि परमेश्वर का सन्दूक छीन लिया गया है।”

**1 Samuel 5:1**

<sup>1</sup> पलिश्तियों ने परमेश्वर का सन्दूक एबेनेजेर से उठाकर अशदोद में पहुँचा दिया;

**1 Samuel 5:2**

<sup>2</sup> फिर पलिश्तियों ने परमेश्वर के सन्दूक को उठाकर दागोन के मन्दिर में पहुँचाकर दागोन के पास रख दिया।

**1 Samuel 5:3**

<sup>3</sup> दूसरे दिन अशदोदियों ने तड़के उठकर क्या देखा, कि दागोन यहोवा के सन्दूक के सामने औंधे मुँह भूमि पर गिरा पड़ा है। तब उन्होंने दागोन को उठाकर उसी के स्थान पर फिर खड़ा किया।

**1 Samuel 5:4**

<sup>4</sup> फिर अगले दिन जब वे तड़के उठे, तब क्या देखा, कि दागोन यहोवा के सन्दूक के सामने औंधे मुँह भूमि पर गिरा पड़ा है; और दागोन का सिर और दोनों हथेलियां डेवढ़ी पर कटी हुई पड़ी हैं; इस प्रकार दागोन का केवल धड़ समूचा रह गया।

**1 Samuel 5:5**

<sup>5</sup> इस कारण आज के दिन तक भी दागोन के पुजारी और जितने दागोन के मन्दिर में जाते हैं, वे अशदोद में दागोन की डेवढ़ी पर पाँव नहीं रखते।

**1 Samuel 5:6**

<sup>6</sup> तब यहोवा का हाथ अशदोदियों के ऊपर भारी पड़ा, और वह उन्हें नाश करने लगा; और उसने अशदोद और उसके आस-पास के लोगों के गिलटियाँ निकालीं।

**1 Samuel 5:7**

<sup>7</sup> यह हाल देखकर अशदोद के लोगों ने कहा, “इस्राएल के देवता का सन्दूक हमारे मध्य रहने नहीं पाएगा; क्योंकि उसका हाथ हम पर और हमारे देवता दागोन पर कठोरता के साथ पड़ा है।”

**1 Samuel 5:8**

<sup>8</sup> तब उन्होंने पलिश्तियों के सब सरदारों को बुलवा भेजा, और उनसे पूछा, “हम इस्राएल के देवता के सन्दूक से क्या करें?” वे बोले, “इस्राएल के देवता का सन्दूक घुमाकर गत नगर में

पहुँचाया जाए।” अतः उन्होंने इस्राएल के परमेश्वर के सन्दूक को घुमाकर गत में पहुँचा दिया।

**1 Samuel 5:9**

<sup>9</sup> जब वे उसको घुमाकर वहाँ पहुँचे, तो यूँहुआ कि यहोवा का हाथ उस नगर के विरुद्ध ऐसा उठा कि उसमें अत्यन्त बड़ी हलचल मच गई; और उसने छोटे से बड़े तक उस नगर के सब लोगों को मारा, और उनके गिलटियाँ निकलने लगीं।

**1 Samuel 5:10**

<sup>10</sup> तब उन्होंने परमेश्वर का सन्दूक एक्रोन को भेजा और जैसे ही परमेश्वर का सन्दूक एक्रोन में पहुँचा वैसे ही एक्रोनी यह कहकर चिल्लाने लगे, “इस्राएल के देवता का सन्दूक घुमाकर हमारे पास इसलिए पहुँचाया गया है, कि हम और हमारे लोगों को मरवा डालें।”

**1 Samuel 5:11**

<sup>11</sup> तब उन्होंने पलिश्तियों के सब सरदारों को इकट्ठा किया, और उनसे कहा, “इस्राएल के देवता के सन्दूक को निकाल दो, कि वह अपने स्थान पर लौट जाए, और हमको और हमारे लोगों को मार डालने न पाए।” उस समस्त नगर में तो मस्तुके भय की हलचल मच रही थी, और परमेश्वर का हाथ वहाँ बहुत भारी पड़ा था।

**1 Samuel 5:12**

<sup>12</sup> और जो मनुष्य न मरे वे भी गिलटियों के मारे पड़े रहे; और नगर की चिल्लाहट आकाश तक पहुँची।

**1 Samuel 6:1**

<sup>1</sup> यहोवा का सन्दूक पलिश्तियों के देश में सात महीने तक रहा।

**1 Samuel 6:2**

<sup>2</sup> तब पलिश्तियों ने याजकों और भावी कहनेवालों को बुलाकर पूछा, “यहोवा के सन्दूक से हम क्या करें? हमें बताओ कि क्या प्रायश्चित देकर हम उसे उसके स्थान पर भेजें?”

**1 Samuel 6:3**

<sup>3</sup> वे बोले, “यदि तुम इस्राएल के देवता का सन्दूक वहाँ भेजो, तो उसे वैसे ही न भेजना; उसकी हानि भरने के लिये अवश्य ही दोषबलि देना। तब तुम चंगे हो जाओगे, और तुम जान लोगे कि उसका हाथ तुम पर से क्यों नहीं उठाया गया।”

**1 Samuel 6:4**

<sup>4</sup> उन्होंने पूछा, “हम उसकी हानि भरने के लिये कौन सा दोषबलि दें?” वे बोले, “पलिश्ती सरदारों की गिनती के अनुसार सोने की पाँच गिलटियाँ, और सोने के पाँच चूहे; क्योंकि तुम सब और तुम्हारे सरदार दोनों एक ही रोग से ग्रसित हो।

**1 Samuel 6:5**

<sup>5</sup> तो तुम अपनी गिलटियों और अपने देश के नष्ट करनेवाले चूहों की भी मूरतें बनाकर इस्राएल के देवता की महिमा मानो; सम्भव है वह अपना हाथ तुम पर से और तुम्हारे देवताओं और देश पर से उठा ले।

**1 Samuel 6:6**

<sup>6</sup> तुम अपने मन क्यों ऐसे हठीले करते हो जैसे मिसियों और फ़िरैन ने अपने मन हठीले कर दिए थे? जब उसने उनके मध्य में अचम्पित काम किए, तब क्या उन्होंने उन लोगों को जाने न दिया, और क्या वे चले न गए?

**1 Samuel 6:7**

<sup>7</sup> इसलिए अब तुम एक नई गाड़ी बनाओ, और ऐसी दो दुधार गायें लो जो ज्यूए तले न आई हों, और उन गायों को उस गाड़ी में जोतकर उनके बच्चों को उनके पास से लेकर घर को लौटा दो।

**1 Samuel 6:8**

<sup>8</sup> तब यहोवा का सन्दूक लेकर उस गाड़ी पर रख दो, और सोने की जो वस्तुएँ तुम उसकी हानि भरने के लिये दोषबलि की रीति से दोगे उन्हें दूसरे सन्दूक में रख के उसके पास रख दो। फिर उसे रवाना कर दो कि चली जाए।

**1 Samuel 6:9**

<sup>9</sup> और देखते रहना; यदि वह अपने देश के मार्ग से होकर बेतशेमेश को चले, तो जानो कि हमारी यह बड़ी हानि उसी की ओर से हुई और यदि नहीं, तो हमको निश्चय होगा कि यह मार हम पर उसकी ओर से नहीं, परन्तु संयोग ही से हुई।”

**1 Samuel 6:10**

<sup>10</sup> उन मनुष्यों ने वैसा ही किया; अर्थात् दो दुधार गायें लेकर उस गाड़ी में जोतीं, और उनके बच्चों को घर में बन्द कर दिया।

**1 Samuel 6:11**

<sup>11</sup> और यहोवा का सन्दूक, और दूसरा सन्दूक, और सोने के चूहों और अपनी गिलटियों की मूरतों को गाड़ी पर रख दिया।

**1 Samuel 6:12**

<sup>12</sup> तब गायों ने बेतशेमेश का सीधा मार्ग लिया; वे सङ्क ही सङ्क रम्भाती हुई चली गई, और न दाहिने मुँहीं और न बायें; और पलिश्तियों के सरदार उनके पीछे-पीछे बेतशेमेश की सीमा तक गए।

**1 Samuel 6:13**

<sup>13</sup> और बेतशेमेश के लोग तराई में गेहूँ काट रहे थे; और जब उन्होंने आँखें उठाकर सन्दूक को देखा, तब उसके देखने से आनन्दित हुए।

**1 Samuel 6:14**

<sup>14</sup> गाड़ी यहोश नामक एक बेतशेमेशी के खेत में जाकर वहाँ ठहर गई, जहाँ एक बड़ा पत्थर था। तब उन्होंने गाड़ी की लकड़ी को चीरा और गायों को होमबलि करके यहोवा के लिये चढ़ाया।

**1 Samuel 6:15**

<sup>15</sup> और लेवियों ने यहोवा के सन्दूक को उस सन्दूक के समेत जो साथ था, जिसमें सोने की वस्तुएँ थीं, उतार के उस बड़े पत्थर पर रख दिया; और बेतशेमेश के लोगों ने उसी दिन यहोवा के लिये होमबलि और मेलबलि चढ़ाए।

**1 Samuel 6:16**

<sup>16</sup> यह देखकर पलिश्तियों के पाँचों सरदार उसी दिन एक्रोन को लौट गए।

**1 Samuel 6:17**

<sup>17</sup> सोने की गिलटियाँ जो पलिश्तियों ने यहोवा की हानि भरने के लिये दोषबलि करके दे दी थीं उनमें से एक तो अश्दोद की ओर से, एक गाज़ा, एक अश्कलोन, एक गत, और एक एक्रोन की ओर से दी गई थी।

**1 Samuel 6:18**

<sup>18</sup> और वह सोने के चूहे, क्या शहरपनाह वाले नगर, क्या बिना शहरपनाह के गाँव, वरन् जिस बड़े पथर पर यहोवा का सन्दूक रखा गया था वहाँ पलिश्तियों के पाँचों सरदारों के अधिकार तक की सब बस्तियों की गिनती के अनुसार दिए गए। वह पथर आज तक बेतशेमेशी यहोशू के खेत में है।

**1 Samuel 6:19**

<sup>19</sup> फिर इस कारण से कि बेतशेमेश के लोगों ने यहोवा के सन्दूक के भीतर झाँका था उसने उनमें से सत्तर मनुष्य, और फिर पचास हजार मनुष्य मार डाले; और वहाँ के लोगों ने इसलिए विलाप किया कि यहोवा ने लोगों का बड़ा ही संहार किया था।

**1 Samuel 6:20**

<sup>20</sup> तब बेतशेमेश के लोग कहने लगे, “इस पवित्र परमेश्वर यहोवा के सामने कौन खड़ा रह सकता है? और वह हमारे पास से किसके पास चला जाए?”

**1 Samuel 6:21**

<sup>21</sup> तब उन्होंने किर्यत्यारीम के निवासियों के पास यह कहने को दूत भेजे, “पलिश्तियों ने यहोवा का सन्दूक लौटा दिया है; इसलिए तुम आकर उसे अपने यहाँ ले जाओ।”

**1 Samuel 7:1**

<sup>1</sup> तब किर्यत्यारीम के लोगों ने जाकर यहोवा के सन्दूक को उठाया, और अबीनादाब के घर में जो टीले पर बना था रखा, और यहोवा के सन्दूक की रक्षा करने के लिये अबीनादाब के पुत्र एलीआजर को पवित्र किया।

**1 Samuel 7:2**

<sup>2</sup> किर्यत्यारीम में सन्दूक को रखे हुए बहुत दिन हुए, अर्थात् बीस वर्ष बीत गए, और इसाएल का सारा घराना विलाप करता हुआ यहोवा के पीछे चलने लगा।

**1 Samuel 7:3**

<sup>3</sup> तब शमूएल ने इसाएल के सारे घराने से कहा, ‘‘यदि तुम अपने पूर्ण मन से यहोवा की ओर फिरे हो, तो पराए देवताओं और अश्तोरेत देवियों को अपने बीच में से दूर करो, और यहोवा की ओर अपना मन लगाकर केवल उसी की उपासना करो, तब वह तुम्हें पलिश्तियों के हाथ से छुड़ाएगा।’’

**1 Samuel 7:4**

<sup>4</sup> तब इसाएलियों ने बाल देवताओं और अश्तोरेत देवियों को दूर किया, और केवल यहोवा ही की उपासना करने लगे।

**1 Samuel 7:5**

<sup>5</sup> फिर शमूएल ने कहा, “सब इसाएलियों को मिस्पा में इकट्ठा करो, और मैं तुम्हारे लिये यहोवा से प्रार्थना करूँगा।”

**1 Samuel 7:6**

<sup>6</sup> तब वे मिस्पा में इकट्ठे हुए, और जल भर के यहोवा के सामने उण्डेल दिया, और उस दिन उपवास किया, और वहाँ कहने लगे, “हमने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है।” और शमूएल ने मिस्पा में इसाएलियों का न्याय किया।

**1 Samuel 7:7**

<sup>7</sup> जब पलिश्तियों ने सुना कि इसाएली मिस्पा में इकट्ठे हुए हैं, तब उनके सरदारों ने इसाएलियों पर चढ़ाई की। यह सुनकर इसाएली पलिश्तियों से भयभीत हुए।

**1 Samuel 7:8**

<sup>8</sup> और इस्साएलियों ने शमूएल से कहा, “हमारे लिये हमारे परमेश्वर यहोवा की दुहाई देना न छोड़, जिससे वह हमको पलिशितयों के हाथ से बचाए।”

**1 Samuel 7:9**

<sup>9</sup> तब शमूएल ने एक दूध पीता मेस्त्रा ले सर्वांग होमबलि करके यहोवा को चढ़ाया; और शमूएल ने इस्साएलियों के लिये यहोवा की दुहाई दी, और यहोवा ने उसकी सुन ली।

**1 Samuel 7:10**

<sup>10</sup> और जिस समय शमूएल होमबलि को चढ़ा रहा था उस समय पलिश्ती इस्साएलियों के संग युद्ध करने के लिये निकट आ गए, तब उसी दिन यहोवा ने पलिशितयों के ऊपर बादल को बड़े कड़क के साथ गरजाकर उन्हें घबरा दिया; और वे इस्साएलियों से हार गए।

**1 Samuel 7:11**

<sup>11</sup> तब इस्साएली पुरुषों ने मिस्पा से निकलकर पलिशितयों को खदेड़ा, और उन्हें बेतकर के नीचे तक मारते चले गए।

**1 Samuel 7:12**

<sup>12</sup> तब शमूएल ने एक पथर लेकर मिस्पा और शेन के बीच में खड़ा किया, और यह कहकर उसका नाम एबेनेजेर रखा, “यहाँ तक यहोवा ने हमारी सहायता की है।”

**1 Samuel 7:13**

<sup>13</sup> तब पलिश्ती दब गए, और इस्साएलियों के देश में फिर न आए, और शमूएल के जीवन भर यहोवा का हाथ पलिशितयों के विरुद्ध बना रहा।

**1 Samuel 7:14**

<sup>14</sup> और एक्रोन और गत तक जितने नगर पलिशितयों ने इस्साएलियों के हाथ से छीन लिए थे, वे फिर इस्साएलियों के वश में आ गए; और उनका देश भी इस्साएलियों ने पलिशितयों के हाथ से छुड़ाया। और इस्साएलियों और एमोरियों के बीच भी संधि हो गई।

**1 Samuel 7:15**

<sup>15</sup> और शमूएल जीवन भर इस्साएलियों का न्याय करता रहा।

**1 Samuel 7:16**

<sup>16</sup> वह प्रतिवर्ष बेतेल और गिलगाल और मिस्पा में घूम-घूमकर उन सब स्थानों में इस्साएलियों का न्याय करता था।

**1 Samuel 7:17**

<sup>17</sup> तब वह रामाह में जहाँ उसका घर था लौट आया, और वहाँ भी इस्साएलियों का न्याय करता था, और वहाँ उसने यहोवा के लिये एक वेदी बनाई।

**1 Samuel 8:1**

<sup>1</sup> जब शमूएल बूढ़ा हुआ, तब उसने अपने पुत्रों को इस्साएलियों पर न्यायी ठहराया।

**1 Samuel 8:2**

<sup>2</sup> उसके जेठे पुत्र का नाम योएल, और दूसरे का नाम अबिय्याह था; ये बेर्शबा में न्याय करते थे।

**1 Samuel 8:3**

<sup>3</sup> परन्तु उसके पुत्र उसकी राह पर न चले, अर्थात् लालच में आकर घूस लेते और न्याय बिगाड़ते थे।

**1 Samuel 8:4**

<sup>4</sup> तब सब इस्साएली वृद्ध लोग इकट्ठे होकर रामाह में शमूएल के पास जाकर

**1 Samuel 8:5**

<sup>5</sup> उससे कहने लगे, “सुन, तू तो अब बूढ़ा हो गया, और तेरे पुत्र तेरी राह पर नहीं चलते; अब हम पर न्याय करने के लिये सब जातियों की रीति के अनुसार हमारे लिये एक राजा नियुक्त कर दे।” (प्रेरि. 13:21)

**1 Samuel 8:6**

<sup>6</sup> परन्तु जो बात उन्होंने कही, ‘हम पर न्याय करने के लिये हमारे ऊपर राजा नियुक्त कर दे,’ यह बात शमूएल को बुरी लगी। और शमूएल ने यहोवा से प्रार्थना की।

**1 Samuel 8:7**

<sup>7</sup> और यहोवा ने शमूएल से कहा, “वे लोग जो कुछ तुझ से कहें उसे मान ले; क्योंकि उन्होंने तुझको नहीं परन्तु मुझी को निकम्मा जाना है, कि मैं उनका राजा न रहूँ।

**1 Samuel 8:8**

<sup>8</sup> जैसे-जैसे काम वे उस दिन से, जब से मैं उन्हें मिस्स से निकाल लाया, आज के दिन तक करते आए हैं, कि मुझ को त्याग कर पराए, देवताओं की उपासना करते आए हैं, वैसे ही वे तुझ से भी करते हैं।

**1 Samuel 8:9**

<sup>9</sup> इसलिए अब तू उनकी बात मान; तो भी तू गम्भीरता से उनको भली भाँति समझा दे, और उनको बता भी दे कि जो राजा उन पर राज्य करेगा उसका व्यवहार किस प्रकार होगा।”

**1 Samuel 8:10**

<sup>10</sup> शमूएल ने उन लोगों को जो उससे राजा चाहते थे यहोवा की सब बातें कह सुनाई।

**1 Samuel 8:11**

<sup>11</sup> उसने कहा, “जो राजा तुम पर राज्य करेगा उसकी यह चाल होगी, अर्थात् वह तुम्हारे पुत्रों को लेकर अपने रथों और घोड़ों के काम पर नौकर रखेगा, और वे उसके रथों के आगे-आगे दौड़ा करेंगे;

**1 Samuel 8:12**

<sup>12</sup> फिर वह उनको हजार-हजार और पचास-पचास के ऊपर प्रधान बनाएगा, और कितनों से वह अपने हल जुतवाएगा,

और अपने खेत कटवाएगा, और अपने लिये युद्ध के हथियार और रथों के साज बनवाएगा।

**1 Samuel 8:13**

<sup>13</sup> फिर वह तुम्हारी बेटियों को लेकर उनसे सुगन्ध-द्रव्य और रसोई और रौटियाँ बनवाएगा।

**1 Samuel 8:14**

<sup>14</sup> फिर वह तुम्हारे खेतों और दाख और जैतून की बारियों में से जो अच्छी से अच्छी होंगी उन्हें ले लेकर अपने कर्मचारियों को देगा।

**1 Samuel 8:15**

<sup>15</sup> फिर वह तुम्हारे बीज और दाख की बारियों का दसवाँ अंश ले लेकर अपने हाकिमों और कर्मचारियों को देगा।

**1 Samuel 8:16**

<sup>16</sup> फिर वह तुम्हारे दास दासियों को, और तुम्हारे अच्छे से अच्छे जवानों को, और तुम्हारे गदहों को भी लेकर अपने काम में लगाएगा।

**1 Samuel 8:17**

<sup>17</sup> वह तुम्हारी भेड़-बकरियों का भी दसवाँ अंश लेगा; इस प्रकार तुम लोग उसके दास बन जाओगे।

**1 Samuel 8:18**

<sup>18</sup> और उस दिन तुम अपने उस चुने हुए राजा के कारण दुहाई दोगे, परन्तु यहोवा उस समय तुम्हारी न सुनेगा।”

**1 Samuel 8:19**

<sup>19</sup> तो भी उन लोगों ने शमूएल की बात न सुनी; और कहने लगे, “नहीं! हम निश्चय अपने लिये राजा चाहते हैं,

**1 Samuel 8:20**

<sup>20</sup> जिससे हम भी और सब जातियों के समान हो जाएँ, और हमारा राजा हमारा न्याय करें, और हमारे आगे-आगे चलकर हमारी ओर से युद्ध किया करें।”

**1 Samuel 8:21**

<sup>21</sup> लोगों की ये सब बातें सुनकर शमूएल ने यहोवा के कानों तक पहुँचाया।

**1 Samuel 8:22**

<sup>22</sup> यहोवा ने शमूएल से कहा, “उनकी बात मानकर उनके लिये राजा ठहरा दै।” तब शमूएल ने इस्माएली मनुष्यों से कहा, “तुम अब अपने-अपने नगर को चले जाओ।”

**1 Samuel 9:1**

<sup>1</sup> बिन्यामीन के गोत्र में कीश नाम का एक पुरुष था, जो अपीह के पुत्र बकोरत का परपोता, और सरोर का पोता, और अबीएल का पुत्र था; वह एक बिन्यामीनी पुरुष का पुत्र और बड़ा शक्तिशाली सूरमा था।

**1 Samuel 9:2**

<sup>2</sup> उसके शाऊल नामक एक जवान पुत्र था, जो सुन्दर था, और इस्माएलियों में कोई उससे बढ़कर सुन्दर न था; वह इतना लम्बा था कि दूसरे लोग उसके कंधे ही तक आते थे।

**1 Samuel 9:3**

<sup>3</sup> जब शाऊल के पिता कीश की गदहियाँ खो गईं, तब कीश ने अपने पुत्र शाऊल से कहा, “एक सेवक को अपने साथ ले जा और गदहियों को ढूँढ़ ला।”

**1 Samuel 9:4**

<sup>4</sup> तब वह एप्रैम के पहाड़ी देश और शलीशा देश होते हुए गया, परन्तु उन्हें न पाया। तब वे शालीम नामक देश भी होकर गए, और वहाँ भी न पाया। फिर बिन्यामीन के देश में गए, परन्तु गदहियाँ न मिलीं।

**1 Samuel 9:5**

<sup>5</sup> जब वे सूफ नामक देश में आए, तब शाऊल ने अपने साथ के सेवक से कहा, “आ, हम लौट चलें, ऐसा न हो कि मेरा पिता गदहियों की चिन्ता छोड़कर हमारी चिन्ता करने लगे।”

**1 Samuel 9:6**

<sup>6</sup> उसने उससे कहा, “सुन, इस नगर में परमेश्वर का एक जन है जिसका बड़ा आदरमान होता है; और जो कुछ वह कहता है वह बिना पूरा हुए नहीं रहता। अब हम उधर चलें, सम्भव है वह हमको हमारा मार्ग बताए कि किधर जाएँ।”

**1 Samuel 9:7**

<sup>7</sup> शाऊल ने अपने सेवक से कहा, “सुन, यदि हम उस पुरुष के पास चलें तो उसके लिये क्या ले चलें? देख, हमारी थैलियों में की रोटी चुक गई है और भेंट के योग्य कोई वस्तु है ही नहीं, जो हम परमेश्वर के उस जन को दें। हमारे पास क्या है?”

**1 Samuel 9:8**

<sup>8</sup> सेवक ने फिर शाऊल से कहा, “मेरे पास तो एक शेकेल चाँदी की चौथाई है, वही मैं परमेश्वर के जन को ढूँगा, कि वह हमको बताए कि किधर जाएँ।”

**1 Samuel 9:9**

<sup>9</sup> (पूर्वकाल में तो इस्माएल में जब कोई परमेश्वर से प्रश्न करने जाता तब ऐसा कहता था, “चलो, हम दर्शी के पास चलें;” क्योंकि जो आजकल नबी कहलाता है वह पूर्वकाल में दर्शी कहलाता था।)

**1 Samuel 9:10**

<sup>10</sup> तब शाऊल ने अपने सेवक से कहा, “तूने भला कहा है; हम चलें।” अतः वे उस नगर को चले जहाँ परमेश्वर का जन था।

**1 Samuel 9:11**

<sup>11</sup> उस नगर की चढ़ाई पर चढ़ते समय उन्हें कई एक लड़कियाँ मिलीं जो पानी भरने को निकली थीं; उन्होंने उनसे पूछा, “क्या दर्शी यहाँ है?”

**1 Samuel 9:12**

<sup>12</sup> उन्होंने उत्तर दिया, “है; देखो, वह तुम्हारे आगे है। अब फुर्ती करो; आज ऊँचे स्थान पर लोगों का यज्ञ है, इसलिए वह आज नगर में आया हुआ है।

**1 Samuel 9:13**

<sup>13</sup> जैसे ही तुम नगर में पहुँचो वैसे ही वह तुम को ऊँचे स्थान पर खाना खाने को जाने से पहले मिलेगा; क्योंकि जब तक वह न पहुँचे तब तक लोग भोजन न करेंगे, इसलिए कि यज्ञ के विषय में वही धन्यवाद करता; तब उसके बाद ही आमन्त्रित लोग भोजन करते हैं। इसलिए तुम अभी चढ़ जाओ, इसी समय वह तुम्हें मिलेगा।”

**1 Samuel 9:14**

<sup>14</sup> ते नगर में चढ़ गए और जैसे ही नगर के भीतर पहुँचे वैसे ही शमूएल ऊँचे स्थान पर चढ़ने के विचार से उनके सामने आ रहा था।

**1 Samuel 9:15**

<sup>15</sup> शाऊल के आने से एक दिन पहले यहोवा ने शमूएल को यह चिता रखा था,

**1 Samuel 9:16**

<sup>16</sup> “कल इसी समय मैं तेरे पास बिन्यामीन के क्षेत्र से एक पुरुष को भेजूँगा, उसी को तू मेरी इसाएली प्रजा के ऊपर प्रधान होने के लिये अभिषेक करना। और वह मेरी प्रजा को पालिशियों के हाथ से छुड़ाएगा; क्योंकि मैंने अपनी प्रजा पर कृपावृष्टि की है, इसलिए कि उनकी चिल्लाहट मेरे पास पहुँची है।”

**1 Samuel 9:17**

<sup>17</sup> फिर जब शमूएल को शाऊल दिखाई पड़ा, तब यहोवा ने उससे कहा, “जिस पुरुष की चर्चा मैंने तुझ से की थी वह यही है; मेरी प्रजा पर यही अधिकार करेगा।”

**1 Samuel 9:18**

<sup>18</sup> तब शाऊल फाटक में शमूएल के निकट जाकर कहने लगा, “मुझे बता कि दर्शी का घर कहाँ है?”

**1 Samuel 9:19**

<sup>19</sup> उसने कहा, “दर्शी तो मैं हूँ; मेरे आगे-आगे ऊँचे स्थान पर चढ़ जा, क्योंकि आज के दिन तुम मेरे साथ भोजन खाओगे, और सवेरे को जो कुछ तेरे मन में हो सब कुछ मैं तुझे बताकर विदा करूँगा।

**1 Samuel 9:20**

<sup>20</sup> और तेरी गदहियाँ जो तीन दिन हुए खो गई थीं उनकी कुछ भी चिन्ता न कर, क्योंकि वे मिल गई हैं। और इसाएल में जो कुछ मनभाऊ है वह किसका है? क्या वह तेरा और तेरे पिता के सारे घराने का नहीं है?”

**1 Samuel 9:21**

<sup>21</sup> शाऊल ने उत्तर देकर कहा, “क्या मैं बिन्यामीनी, अर्थात् सब इसाएली गोत्रों में से छोटे गोत्र का नहीं हूँ? और क्या मेरा कुल बिन्यामीन के गोत्र के सारे कुलों में से छोटा नहीं है? इसलिए तू मुझसे ऐसी बातें क्यों कहता है?”

**1 Samuel 9:22**

<sup>22</sup> तब शमूएल ने शाऊल और उसके सेवक को कोठरी में पहुँचाकर आमन्त्रित लोग, जो लगभग तीस जन थे, उनके साथ मुख्य स्थान पर बैठा दिया।

**1 Samuel 9:23**

<sup>23</sup> फिर शमूएल ने रसोइये से कहा, “जो टुकड़ा मैंने तुझे देकर, अपने पास रख छोड़ने को कहा था, उसे ले आ।”

**1 Samuel 9:24**

<sup>24</sup> तो रसोइये ने जाँघ को माँस समेत उठाकर शाऊल के आगे धर दिया; तब शमूएल ने कहा, “जो रखा गया था उसे देख, और अपने सामने रख के खा; क्योंकि वह तेरे लिये इसी नियत समय तक, जिसकी चर्चा करके मैंने लोगों को न्योता दिया, रखा हुआ है।” शाऊल ने उस दिन शमूएल के साथ भोजन किया।

**1 Samuel 9:25**

<sup>25</sup> तब वे ऊँचे स्थान से उतरकर नगर में आए, और उसने घर की छत पर शाऊल से बातें की।

**1 Samuel 9:26**

<sup>26</sup> सवेरे वे तड़के उठे, और पौ फटते शमूएल ने शाऊल को छत पर बुलाकर कहा, “उठ, मैं तुझको विदा करूँगा।” तब शाऊल उठा, और वह और शमूएल दोनों बाहर निकल गए।

**1 Samuel 9:27**

<sup>27</sup> और नगर के सिरे की उत्तराई पर चलते-चलते शमूएल ने शाऊल से कहा, “अपने सेवक को हम से आगे बढ़ने की आज्ञा दे, (वह आगे बढ़ गया,) परन्तु तू अभी खड़ा रह कि मैं तुझे परमेश्वर का वचन सुनाऊँ।”

**1 Samuel 10:1**

<sup>1</sup> तब शमूएल ने एक कुप्पी तेल लेकर उसके सिर पर उण्डेला, और उसे चूमकर कहा, “क्या इसका कारण यह नहीं कि यहोवा ने अपने निज भाग के ऊपर प्रधान होने को तेरा अभिषेक किया है?

**1 Samuel 10:2**

<sup>2</sup> आज जब तू मेरे पास से चला जाएगा, तब राहेल की कब्र के पास जो बिन्यामीन के देश की सीमा पर सेलसह में है, दो जन तुझे मिलेंगे, और कहेंगे, जिन गदहियों को तू छूँदने गया था वे मिली हैं; और सुन, तेरा पिता गदहियों की चिन्ता छोड़कर तुम्हारे कारण कुछता हुआ कहता है, कि मैं अपने पुत्र के लिये क्या करूँ?”

**1 Samuel 10:3**

<sup>3</sup> फिर वहाँ से आगे बढ़कर जब तू ताबोर के बांज वृक्ष के पास पहुँचेगा, तब वहाँ तीन जन परमेश्वर के पास बेतेल को जाते हुए तुझे मिलेंगे, जिनमें से एक तो बकरी के तीन बच्चे, और दूसरा तीन रोटी, और तीसरा एक कुप्पी दाखमधु लिए हुए होंगा।

**1 Samuel 10:4**

<sup>4</sup> वे तेरा कुशल पूछेंगे, और तुझे दो रोटी देंगे, और तू उन्हें उनके हाथ से ले लेना।

**1 Samuel 10:5**

<sup>5</sup> तब तू परमेश्वर के पहाड़ पर पहुँचेगा जहाँ पलिश्टियों की चौकी है; और जब तू वहाँ नगर में प्रवेश करे, तब नबियों का एक दल ऊँचे स्थान से उतरता हुआ तुझे मिलेगा; और उनके आगे सितार, डफ, बाँसुरी, और वीणा होंगे; और वे नबूवत करते होंगे।

**1 Samuel 10:6**

<sup>6</sup> तब यहोवा का आत्मा तुझ पर बल से उतरेगा, और तू उनके साथ होकर नबूवत करने लगेगा, और तू परिवर्तित होकर और ही मनुष्य हो जाएगा।

**1 Samuel 10:7**

<sup>7</sup> और जब ये चिन्ह तुझे दिखाई पड़ेंगे, तब जो काम करने का अवसर तुझे मिले उसमें लग जाना; क्योंकि परमेश्वर तेरे संग रहेगा।

**1 Samuel 10:8**

<sup>8</sup> और तू मुझसे पहले गिलगाल को जाना; और मैं होमबलि और मेलबलि चढ़ाने के लिये तेरे पास आऊँगा। तू सात दिन तक मेरी बाट जोहते रहना, तब मैं तेरे पास पहुँचकर तुझे बताऊँगा कि तुझको क्या-क्या करना है।”

**1 Samuel 10:9**

<sup>9</sup> जैसे ही उसने शमूएल के पास से जाने को पीठ फेरी वैसे ही परमेश्वर ने उसके मन को परिवर्तित किया; और वे सब चिन्ह उसी दिन प्रगट हुए।

**1 Samuel 10:10**

<sup>10</sup> जब वे उधर उस पहाड़ के पास आए, तब नबियों का एक दल उसको मिला; और परमेश्वर का आत्मा उस पर बल से उतरा, और वह उनके बीच में नबूवत करने लगा।

**1 Samuel 10:11**

<sup>11</sup> जब उन सभी ने जो उसे पहले से जानते थे यह देखा कि वह नबियों के बीच में नबूवत कर रहा है, तब आपस में कहने लगे, “कीश के पुत्र को यह क्या हुआ? क्या शाऊल भी नबियों में का है?”

**1 Samuel 10:12**

<sup>12</sup> तब वहाँ के एक मनुष्य ने उत्तर दिया, “भला, उनका बाप कौन है?” इस पर यह कहावत चलने लगी, “क्या शाऊल भी नबियों में का है?”

**1 Samuel 10:13**

<sup>13</sup> जब वह नबूवत कर चुका, तब ऊँचे स्थान पर चढ़ गया।

**1 Samuel 10:14**

<sup>14</sup> तब शाऊल के चाचा ने उससे और उसके सेवक से पूछा, “तुम कहाँ गए थे?” उसने कहा, “हम तो गदहियों को ढूँढ़ने गए थे; और जब हमने देखा कि वे कहीं नहीं मिलतीं, तब शमूएल के पास गए।”

**1 Samuel 10:15**

<sup>15</sup> शाऊल के चाचा ने कहा, “मुझे बता कि शमूएल ने तुम से क्या कहा।”

**1 Samuel 10:16**

<sup>16</sup> शाऊल ने अपने चाचा से कहा, “उसने हमें निश्चय करके बताया कि गदहियाँ मिल गईं।” परन्तु जो बात शमूएल ने राज्य के विषय में कही थी वह उसने उसको न बताई।

**1 Samuel 10:17**

<sup>17</sup> तब शमूएल ने प्रजा के लोगों को मिस्पा में यहोवा के पास बुलाया;

**1 Samuel 10:18**

<sup>18</sup> तब उसने इस्साएलियों से कहा, “इस्साएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, ‘मैं तो इस्साएल को मिस्र देश से निकाल

लाया, और तुम को मिसियों के हाथ से, और उन सब राज्यों के हाथ से जो तुम पर अंधेर करते थे छुड़ाया है।’

**1 Samuel 10:19**

<sup>19</sup> परन्तु तुमने आज अपने परमेश्वर को जो सब विपत्तियों और कष्टों से तुम्हारा छुड़ानेवाला है तुच्छ जाना; और उससे कहा है, ‘हम पर राजा नियुक्त कर दे।’ इसलिए अब तुम गोत्र-गोत्र और हजार-हजार करके यहोवा के सामने खड़े हो जाओ।”

**1 Samuel 10:20**

<sup>20</sup> तब शमूएल सारे इस्साएली गोत्रों को समीप लाया, और चिट्ठी बिन्यामीन के नाम पर निकली।

**1 Samuel 10:21**

<sup>21</sup> तब वह बिन्यामीन के गोत्र को कुल-कुल करके समीप लाया, और चिट्ठी मत्री के कुल के नाम पर निकली; फिर चिट्ठी कीश के पुत्र शाऊल के नाम पर निकली। और जब वह ढूँढ़ा गया, तब न मिला।

**1 Samuel 10:22**

<sup>22</sup> तब उन्होंने फिर यहोवा से पूछा, “क्या यहाँ कोई और आनेवाला है?” यहोवा ने कहा, “सुनो, वह सामान के बीच में छिपा हुआ है।”

**1 Samuel 10:23**

<sup>23</sup> तब वे दौड़कर उसे वहाँ से लाए; और वह लोगों के बीच में खड़ा हुआ, और वह कंधे से सिर तक सब लोगों से लम्बा था।

**1 Samuel 10:24**

<sup>24</sup> शमूएल ने सब लोगों से कहा, “क्या तुम ने यहोवा के चुने हुए को देखा है कि सारे लोगों में कोई उसके बराबर नहीं?” तब सब लोग ललकार के बोल उठे, “राजा चिरंजीव रहे।” (प्रेरि. 13:21)

**1 Samuel 10:25**

<sup>25</sup> तब शमूएल ने लोगों से राजनीति का वर्णन किया, और उसे पुस्तक में लिखकर यहोवा के आगे रख दिया। और शमूएल ने सब लोगों को अपने-अपने घर जाने को विदा किया।

**1 Samuel 10:26**

<sup>26</sup> और शाऊल गिबा को अपने घर चला गया, और उसके साथ एक दल भी गया जिनके मन को परमेश्वर ने उभारा था।

**1 Samuel 10:27**

<sup>27</sup> परन्तु कई लुच्चे लोगों ने कहा, “यह जन हमारा क्या उद्धार करेगा?” और उन्होंने उसको तुच्छ जाना, और उसके पास भेट न लाए। तो भी वह सुनी अनसुनी करके चुप रहा।

**1 Samuel 11:1**

<sup>1</sup> तब अम्मोनी नाहाश ने चढ़ाई करके गिलाद के याबेश के विरुद्ध छावनी डाली; और याबेश के सब पुरुषों ने नाहाश से कहा, ‘‘हम से वाचा बाँध, और हम तेरी अधीनता मान लेंगे।’’

**1 Samuel 11:2**

<sup>2</sup> अम्मोनी नाहाश ने उनसे कहा, “मैं तुम से वाचा इस शर्त पर बाँधूँगा, कि मैं तुम सभी की दाहिनी आँखें फोड़कर इसे सारे इस्राएल की नामधारी का कारण कर दूँ।”

**1 Samuel 11:3**

<sup>3</sup> याबेश के वृद्ध लोगों ने उससे कहा, “हमें सात दिन का अवसर दे तब तक हम इस्राएल के सारे देश में दूत भेजेंगे। और यदि हमको कोई बचानेवाला न मिलेगा, तो हम तेरे ही पास निकल आएँगे।”

**1 Samuel 11:4**

<sup>4</sup> दूतों ने शाऊलवाले गिबा में आकर लोगों को यह सन्देश सुनाया, और सब लोग चिल्ला चिल्लाकर रोने लगे।

**1 Samuel 11:5**

<sup>5</sup> शाऊल बैलों के पीछे-पीछे मैदान से चला आता था; और शाऊल ने पूछा, “लोगों को क्या हुआ कि वे रोते हैं?” उन्होंने याबेश के लोगों का सन्देश उसे सुनाया।

**1 Samuel 11:6**

<sup>6</sup> यह सन्देश सुनते ही शाऊल पर परमेश्वर का आत्मा बल से उतरा, और उसका कोप बहुत भड़क उठा।

**1 Samuel 11:7**

<sup>7</sup> और उसने एक जोड़ी बैल लेकर उसके टुकड़े-टुकड़े काटे, और यह कहकर दूतों के हाथ से इस्राएल के सारे देश में कहला भेजा, “जो कोई आकर शाऊल और शमूएल के पीछे न हो लेगा उसके बैलों से ऐसा ही किया जाएगा।” तब यहोवा का भय लोगों में ऐसा समाया कि वे एक मन होकर निकल आए।

**1 Samuel 11:8**

<sup>8</sup> तब उसने उन्हें बेजेक में गिन लिया, और इस्राएलियों के तीन लाख, और यहूदियों के तीस हजार ठहरे।

**1 Samuel 11:9**

<sup>9</sup> और उन्होंने उन दूतों से जो आए थे कहा, “तुम गिलाद में के याबेश के लोगों से यह कहो, कल धूप तेज होने की घड़ी तक तुम छुटकारा पाओगे।” तब दूतों ने जाकर याबेश के लोगों को सन्देश दिया, और वे आनन्दित हुए।

**1 Samuel 11:10**

<sup>10</sup> तब याबेश के लोगों ने नाहाश से कहा, “कल हम तुम्हारे पास निकल आएँगे, और जो कुछ तुम को अच्छा लगे वही हम से करना।”

**1 Samuel 11:11**

<sup>11</sup> दूसरे दिन शाऊल ने लोगों के तीन दल किए; और उन्होंने रात के अन्तिम पहर में छावनी के बीच में आकर अम्मोनियों को मारा; और धूप के कड़े होने के समय तक ऐसे मारते रहे

कि जो बच निकले वे यहाँ तक तितर-बितर हुए कि दो जन भी एक संग कहीं न रहे।

### 1 Samuel 11:12

<sup>12</sup> तब लोग शमूएल से कहने लगे, “जिन मनुष्यों ने कहा था, ‘क्या शाऊल हम पर राज्य करेगा?’ उनको लाओ कि हम उन्हें मार डालें।”

### 1 Samuel 11:13

<sup>13</sup> शाऊल ने कहा, “आज के दिन कोई मार डाला न जाएगा; क्योंकि आज यहोवा ने इसाएलियों को छुटकारा दिया है।”

### 1 Samuel 11:14

<sup>14</sup> तब शमूएल ने इसाएलियों से कहा, “आओ, हम गिलगाल को चलें, और वहाँ राज्य को नये सिरे से स्थापित करें।”

### 1 Samuel 11:15

<sup>15</sup> तब सब लोग गिलगाल को चले, और वहाँ उन्होंने गिलगाल में यहोवा के सामने शाऊल को राजा बनाया; और वहीं उन्होंने यहोवा को मेलबलि चढ़ाए; और वहीं शाऊल और सब इसाएली लोगों ने अत्यन्त आनन्द मनाया।

### 1 Samuel 12:1

<sup>1</sup> तब शमूएल ने सारे इसाएलियों से कहा, “सुनो, जो कुछ तुम ने मुझसे कहा था उसे मानकर मैंने एक राजा तुम्हारे ऊपर ठहराया है।

### 1 Samuel 12:2

<sup>2</sup> और अब देखो, वह राजा तुम्हारे आगे-आगे चलता है; और अब मैं बूढ़ा हूँ, और मेरे बाल सफेद हो गए हैं, और मेरे पुत्र तुम्हारे पास हैं; और मैं लड़कपन से लेकर आज तक तुम्हारे सामने काम करता रहा हूँ।

### 1 Samuel 12:3

<sup>3</sup> मैं उपस्थित हूँ; इसलिए तुम यहोवा के सामने, और उसके अभिषिक्त के सामने मुझ पर साक्षी दो, कि मैंने किसका बैल

ले लिया? या किसका गदहा ले लिया? या किस पर अंधेर किया? या किसको पीसा? या किसके हाथ से अपनी आँखें बन्द करने के लिये घूस लिया? बताओ, और मैं वह तुम को फेर टूँगा?”

### 1 Samuel 12:4

<sup>4</sup> वे बोले, “तूने न तो हम पर अंधेर किया, न हमें पीसा, और न किसी के हाथ से कुछ लिया है।”

### 1 Samuel 12:5

<sup>5</sup> उसने उनसे कहा, “आज के दिन यहोवा तुम्हारा साक्षी, और उसका अभिषिक्त इस बात का साक्षी है, कि मेरे यहाँ कुछ नहीं निकला।” वे बोले, “हाँ, वह साक्षी है।”

### 1 Samuel 12:6

<sup>6</sup> फिर शमूएल लोगों से कहने लगा, “जो मूसा और हारून को ठहराकर तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र देश से निकाल लाया वह यहोवा ही है।

### 1 Samuel 12:7

<sup>7</sup> इसलिए अब तुम खड़े रहो, और मैं यहोवा के सामने उसके सब धार्मिकता के कामों के विषय में, जिन्हें उसने तुम्हारे साथ और तुम्हारे पूर्वजों के साथ किया है, तुम्हारे साथ विचार करूँगा।

### 1 Samuel 12:8

<sup>8</sup> याकूब मिस्र में गया, और तुम्हारे पूर्वजों ने यहोवा की दुहाई दी; तब यहोवा ने मूसा और हारून को भेजा, और उन्होंने तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र से निकाला, और इस स्थान में बसाया।

### 1 Samuel 12:9

<sup>9</sup> फिर जब वे अपने परमेश्वर यहोवा को भल गए, तब उसने उन्हें हासोर के सेनापति सीसरा, और पलिश्तियों और मोआब के राजा के अधीन कर दिया; और वे उनसे लड़े।

**1 Samuel 12:10**

<sup>10</sup> तब उन्होंने यहोवा की दुहाई देकर कहा, ‘हमने यहोवा को त्याग कर और बाल देवताओं और अश्तोरेत देवियों की उपासना करके महापाप किया है; परन्तु अब तू हमको हमारे शत्रुओं के हाथ से छुड़ा तो हम तेरी उपासना करेंगे।’

**1 Samuel 12:11**

<sup>11</sup> इसलिए यहोवा ने यस्त्वाल, बदान, यिप्तह, और शमूएल को भेजकर तुम को तुम्हारे चारों ओर के शत्रुओं के हाथ से छुड़ाया; और तुम निर्दर रहने लगे।

**1 Samuel 12:12**

<sup>12</sup> और जब तुम ने देखा कि अम्मोनियों का राजा नाहाश हम पर चढ़ाई करता है, तब यद्यपि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारा राजा था तो भी तुम ने मुझसे कहा, ‘नहीं, हम पर एक राजा राज्य करेगा।’

**1 Samuel 12:13**

<sup>13</sup> अब उस राजा को देखो जिसे तुम ने चुन लिया, और जिसके लिये तुम ने प्रार्थना की थी; देखो, यहोवा ने एक राजा तुम्हारे ऊपर नियुक्त कर दिया है।

**1 Samuel 12:14**

<sup>14</sup> यदि तुम यहोवा का भय मानते, उसकी उपासना करते, और उसकी बात सुनते रहो, और यहोवा की आज्ञा को टालकर उससे बलवा न करो, और तुम और वह जो तुम पर राजा हुआ हैं दोनों अपने परमेश्वर यहोवा के पीछे-पीछे चलनेवाले बने रहो, तब तो भला होगा;

**1 Samuel 12:15**

<sup>15</sup> परन्तु यदि तुम यहोवा की बात न मानो, और यहोवा की आज्ञा को टालकर उससे बलवा करो, तो यहोवा का हाथ जैसे तुम्हारे पुरखाओं के विरुद्ध हुआ वैसे ही तुम्हारे भी विरुद्ध उठेगा।

**1 Samuel 12:16**

<sup>16</sup> इसलिए अब तुम खड़े रहो, और इस बड़े काम को देखो जिसे यहोवा तुम्हारी आँखों के सामने करने पर है।

**1 Samuel 12:17**

<sup>17</sup> आज क्या गेहूँ की कटनी नहीं हो रही? मैं यहोवा को पुकारूँगा, और वह मेघ गरजाएगा और मेंह बरसाएगा; तब तुम जान लोगे, और देख भी लोगे, कि तुम ने राजा माँगकर यहोवा की वाणि में बहुत बड़ी बुराई की है।”

**1 Samuel 12:18**

<sup>18</sup> तब शमूएल ने यहोवा को पुकारा, और यहोवा ने उसी दिन मेघ गरजाया और मेंह बरसाया; और सब लोग यहोवा से और शमूएल से अत्यन्त डर गए।

**1 Samuel 12:19**

<sup>19</sup> और सब लोगों ने शमूएल से कहा, “अपने दासों के निमित्त अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना कर, कि हम मर न जाएँ; क्योंकि हमने अपने सारे पापों से बढ़कर यह बुराई की है कि राजा माँगा है।”

**1 Samuel 12:20**

<sup>20</sup> शमूएल ने लोगों से कहा, “डरो मत; तुम ने यह सब बुराई तो की है, परन्तु अब यहोवा के पीछे चलने से फिर मत मुड़ना; परन्तु अपने सम्पूर्ण मन से उसकी उपासना करना;

**1 Samuel 12:21**

<sup>21</sup> और मत मुड़ना; नहीं तो ऐसी व्यर्थ वस्तुओं के पीछे चलने लगोगे जिनसे न कुछ लाभ पहुँचेगा, और न कुछ छुटकारा हो सकता है, क्योंकि वे सब व्यर्थ ही हैं।

**1 Samuel 12:22**

<sup>22</sup> यहोवा तो अपने बड़े नाम के कारण अपनी प्रजा को न तजेगा, क्योंकि यहोवा ने तुम्हें अपनी ही इच्छा से अपनी प्रजा बनाया है।

**1 Samuel 12:23**

<sup>23</sup> फिर यह मुझसे दूर हो कि मैं तुम्हारे लिये प्रार्थना करना छोड़कर यहोवा के विरुद्ध पापी ठहरू; मैं तो तुम्हें अच्छा और सीधा मार्ग दिखाता रहूँगा।

**1 Samuel 12:24**

<sup>24</sup> केवल इतना हो कि तुम लोग यहोवा का भय मानो, और सच्चाई से अपने सम्पूर्ण मन के साथ उसकी उपासना करो; क्योंकि यह तो सोचो कि उसने तुम्हारे लिये कैसे बढ़े-बढ़े काम किए हैं।

**1 Samuel 12:25**

<sup>25</sup> परन्तु यदि तुम बुराई करते ही रहोगे, तो तुम और तुम्हारा राजा दोनों के दोनों मिट जाओगे।”

**1 Samuel 13:1**

<sup>1</sup> शाऊल तीस वर्ष का होकर राज्य करने लगा, और उसने इसाएलियों पर दो वर्ष तक राज्य किया।

**1 Samuel 13:2**

<sup>2</sup> फिर शाऊल ने इसाएलियों में से तीन हजार पुरुषों को अपने लिये चुन लिया; और उनमें से दो हजार शाऊल के साथ मिकमाश में और बेतेल के पहाड़ पर रहे, और एक हजार योनातान के साथ बिन्यामीन के गिबा में रहे; और दूसरे सब लोगों को उसने अपने-अपने डेरे में जाने को विदा किया।

**1 Samuel 13:3**

<sup>3</sup> तब योनातान ने पलिश्तियों की उस चौकी को जो गेबा में थी मार लिया; और इसका समाचार पलिश्तियों के कानों में पड़ा। तब शाऊल ने सारे देश में नरसिंगा फँकवाकर यह कहला भेजा, “इब्री लोग सुनें।”

**1 Samuel 13:4**

<sup>4</sup> और सब इसाएलियों ने यह समाचार सुना कि शाऊल ने पलिश्तियों की चौकी को मारा है, और यह भी कि पलिश्ती इसाएल से घृणा करने लगे हैं। तब लोग शाऊल के पीछे चलकर गिलगाल में इकट्ठे हो गए।

**1 Samuel 13:5**

<sup>5</sup> पलिश्ती इसाएल से युद्ध करने के लिये इकट्ठे हो गए, अर्थात् तीस हजार रथ, और छः हजार सवार, और समुद्र तट के रेतकणों के समान बहुत से लोग इकट्ठे हुए; और बेतावेन के पूर्व की ओर जाकर मिकमाश में छावनी डाली।

**1 Samuel 13:6**

<sup>6</sup> जब इसाएली पुरुषों ने देखा कि हम सकेती में पड़े हैं (और सचमुच लोग संकट में पड़े थे), तब वे लोग गुफाओं, झाड़ियों, चट्टानों, गढ़ियों, और गङ्गों में जा छिपे।

**1 Samuel 13:7**

<sup>7</sup> और कितने इब्री यरदन पार होकर गाद और गिलाद के देशों में चले गए; परन्तु शाऊल गिलगाल में रहा, और सब लोग धरथराते हुए उसके पीछे हो लिए।

**1 Samuel 13:8**

<sup>8</sup> वह शमूएल के ठहराए हुए समय, अर्थात् सात दिन तक बाट जोहता रहा; परन्तु शमूएल गिलगाल में न आया, और लोग उसके पास से इधर-उधर होने लगे।

**1 Samuel 13:9**

<sup>9</sup> तब शाऊल ने कहा, “होमबलि और मेलबलि मेरे पास लाओ।” तब उसने होमबलि को चढ़ाया।

**1 Samuel 13:10**

<sup>10</sup> जैसे ही वह होमबलि को चढ़ा चुका, तो क्या देखता है कि शमूएल आ पहुँचा; और शाऊल उससे मिलने और नमस्कार करने को निकला।

**1 Samuel 13:11**

<sup>11</sup> शमूएल ने पूछा, “तूने क्या किया?” शाऊल ने कहा, “जब मैंने देखा कि लोग मेरे पास से इधर-उधर हो चले हैं, और तू ठहराए हुए दिनों के भीतर नहीं आया, और पलिश्ती मिकमाश में इकट्ठे हुए हैं,

**1 Samuel 13:12**

<sup>12</sup> तब मैंने सोचा कि पलिश्ती गिलगाल में मुझ पर अभी आ पड़ेंगे, और मैंने यहोवा से विनती भी नहीं की है; अतः मैंने अपनी इच्छा न रहते भी होमबलि चढ़ाया।”

**1 Samuel 13:13**

<sup>13</sup> शमूएल ने शाऊल से कहा, “तूने मूर्खता का काम किया है; तूने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा को नहीं माना; नहीं तो यहोवा तेरा राज्य इस्राएलियों के ऊपर सदा स्थिर रखता।

**1 Samuel 13:14**

<sup>14</sup> परन्तु अब तेरा राज्य बना न रहेगा; यहोवा ने अपने लिये एक ऐसे पुरुष को ढूँढ़ लिया है जो उसके मन के अनुसार है; और यहोवा ने उसी को अपनी प्रजा पर प्रधान होने को ठहराया है, क्योंकि तूने यहोवा की आज्ञा को नहीं माना।”

**1 Samuel 13:15**

<sup>15</sup> तब शमूएल चल निकला, और गिलगाल से बिन्यामीन के गिबा को गया। और शाऊल ने अपने साथ के लोगों को गिनकर कोई छः सौ पाए।

**1 Samuel 13:16**

<sup>16</sup> और शाऊल और उसका पुत्र योनातान और जो लोग उनके साथ थे वे बिन्यामीन के गेबा में रहे; और पलिश्ती मिकमाश में डेरे डाले पड़े रहे।

**1 Samuel 13:17**

<sup>17</sup> और पलिश्तीयों की छावनी से आक्रमण करनेवाले तीन दल बाँधकर निकले; एक दल ने शूआल नामक देश की ओर फिरके ओप्रा का मार्ग लिया,

**1 Samuel 13:18**

<sup>18</sup> एक और दल ने मुङ्कर बेथोरोन का मार्ग लिया, और एक और दल ने मुङ्कर उस देश का मार्ग लिया जो सबोईम नामक तराई की ओर जंगल की तरफ है।

**1 Samuel 13:19**

<sup>19</sup> इसाएल के पूरे देश में लोहार कहीं नहीं मिलता था, क्योंकि पलिश्तीयों ने कहा था, “इब्री तलवार या भाला बनाने न पाएँ;”

**1 Samuel 13:20**

<sup>20</sup> इसलिए सब इसाएली अपने-अपने हल की फाल, और भाले, और कुल्हाड़ी, और हँसुआ तेज करने के लिये पलिश्तीयों के पास जाते थे;

**1 Samuel 13:21**

<sup>21</sup> परन्तु उनके हँसुओं, फालों, खेती के त्रिशूलों, और कुल्हाड़ियों की धारें, और पैनों की नोकें ठीक करने के लिये वे रेती रखते थे।

**1 Samuel 13:22**

<sup>22</sup> इसलिए युद्ध के दिन शाऊल और योनातान के साथियों में से किसी के पास न तो तलवार थी और न भाला, वे केवल शाऊल और उसके पुत्र योनातान के पास थे।

**1 Samuel 13:23**

<sup>23</sup> और पलिश्तीयों की चौकी के सिपाही निकलकर मिकमाश की घाटी को गए।

**1 Samuel 14:1**

<sup>1</sup> एक दिन शाऊल के पुत्र योनातान ने अपने पिता से बिना कुछ कहे अपने हथियार ढोनेवाले जवान से कहा, “आ, हम उधर पलिश्तीयों की चौकी के पास चलें।”

**1 Samuel 14:2**

<sup>2</sup> शाऊल तो गिबा की सीमा पर मिश्रोन में अनार के पेड़ के तले टिका हुआ था, और उसके संग के लोग कोई छः सौ थे;

**1 Samuel 14:3**

<sup>3</sup> और एली जो शीलो में यहोवा का याजक था, उसके पुत्र पीनहास का पोता, और ईकाबोद के भाई, अहीतूब का पुत्र अहिय्याह भी एपोद पहने हुए संग था। परन्तु उन लोगों को मालूम न था कि योनातान चला गया है।

**1 Samuel 14:4**

<sup>4</sup> उन धाटियों के बीच में, जिनसे होकर योनातान पलिश्तियों की चौकी को जाना चाहता था, दोनों ओर एक-एक नोकीली चट्टान थी; एक चट्टान का नाम बोसेस, और दूसरी का नाम सेन था।

**1 Samuel 14:5**

<sup>5</sup> एक चट्टान तो उत्तर की ओर मिकमाश के सामने, और दूसरी दक्षिण की ओर गेबा के सामने खड़ी थी।

**1 Samuel 14:6**

<sup>6</sup> तब योनातान ने अपने हथियार ढोनेवाले जवान से कहा, “आ, हम उन खतनारहित लोगों की चौकी के पास जाएँ; क्या जाने यहोवा हमारी सहायता करे; क्योंकि यहोवा को कोई रुकावट नहीं, कि चाहे तो बहुत लोगों के द्वारा, चाहे थोड़े लोगों के द्वारा छुटकारा दे।”

**1 Samuel 14:7**

<sup>7</sup> उसके हथियार ढोनेवाले ने उससे कहा, “जो कुछ तेरे मन में हो वही कर; उधर चल, मैं तेरी इच्छा के अनुसार तेरे संग रहूँगा।”

**1 Samuel 14:8**

<sup>8</sup> योनातान ने कहा, “सुन, हम उन मनुष्यों के पास जाकर अपने को उन्हें दिखाएँ।

**1 Samuel 14:9**

<sup>9</sup> यदि वे हम से यह कहें, ‘हमारे आने तक ठहरे रहो,’ तब तो हम उसी स्थान पर खड़े रहें, और उनके पास न चढ़ें।

**1 Samuel 14:10**

<sup>10</sup> परन्तु यदि वे यह कहें, ‘हमारे पास चढ़ आओ,’ तो हम यह जानकर चढ़ें, कि यहोवा उन्हें हमारे हाथ में कर देगा। हमारे लिये यही चिन्ह हो।”

**1 Samuel 14:11**

<sup>11</sup> तब उन दोनों ने अपने को पलिश्तियों की चौकी पर प्रगट किया, तब पलिश्ती कहने लगे, “देखो, इब्री लोग उन बिलों में से जहाँ वे छिपे थे निकले आते हैं।”

**1 Samuel 14:12**

<sup>12</sup> फिर चौकी के लोगों ने योनातान और उसके हथियार ढोनेवाले से पुकारके कहा, “हमारे पास चढ़ आओ, तब हम तुम को कुछ सिखाएँगे।” तब योनातान ने अपने हथियार ढोनेवाले से कहा, “मेरे पीछे-पीछे चढ़ आ; क्योंकि यहोवा उन्हें इस्साएलियों के हाथ में कर देगा।”

**1 Samuel 14:13**

<sup>13</sup> और योनातान अपने हाथों और पाँवों के बल चढ़ गया, और उसका हथियार ढोनेवाला भी उसके पीछे-पीछे चढ़ गया। पलिश्ती योनातान के सामने गिरते गए, और उसका हथियार ढोनेवाला उसके पीछे-पीछे उन्हें मारता गया।

**1 Samuel 14:14**

<sup>14</sup> यह पहला संहार जो योनातान और उसके हथियार ढोनेवाले से हुआ, उसमें आधे बीघे भूमि में बीस एक पुरुष मारे गए।

**1 Samuel 14:15**

<sup>15</sup> और छावनी में, और मैदान पर, और उन सब लोगों में थरथराहट हुई; और चौकीवाले और आक्रमण करनेवाले भी थरथराने लगे; और भूकम्प भी हुआ; और अत्यन्त बड़ी थरथराहट हुई।

**1 Samuel 14:16**

<sup>16</sup> बिन्यामीन के गिबा में शाऊल के पहरुओं ने दृष्टि करके देखा कि वह भीड़ घटती जा रही है, और वे लोग इधर-उधर चले जा रहे हैं।

**1 Samuel 14:17**

<sup>17</sup> तब शाऊल ने अपने साथ के लोगों से कहा, “अपनी गिनती करके देखो कि हमारे पास से कौन चला गया है।” उन्होंने गिनकर देखा, कि योनातान और उसका हथियार ढोनेवाला यहाँ नहीं हैं।

**1 Samuel 14:18**

<sup>18</sup> तब शाऊल ने अहिय्याह से कहा, “परमेश्वर का सन्दूक इधर ला।” उस समय तो परमेश्वर का सन्दूक इस्त्राएलियों के साथ था।

**1 Samuel 14:19**

<sup>19</sup> शाऊल याजक से बातें कर रहा था, कि पलिश्तियों की छावनी में हुल्लाड़ अधिक बढ़ गया; तब शाऊल ने याजक से कहा, “अपना हाथ खींच ले।”

**1 Samuel 14:20**

<sup>20</sup> तब शाऊल और उसके संग के सब लोग इकट्ठे होकर लड़ाई में गए; वहाँ उन्होंने क्या देखा, कि एक-एक पुरुष की तलवार अपने-अपने साथी पर चल रही है, और बहुत बड़ा कोलाहल मच रहा है।

**1 Samuel 14:21**

<sup>21</sup> जो इब्री पहले पलिश्तियों की ओर थे, और उनके साथ चारों ओर से छावनी में गए थे, वे भी शाऊल और योनातान के संग के इस्त्राएलियों में मिल गए।

**1 Samuel 14:22**

<sup>22</sup> इसी प्रकार जितने इस्त्राएली पुरुष एप्रैम के पहाड़ी देश में छिप गए थे, वे भी यह सुनकर कि पलिश्ती भागे जाते हैं, लड़ाई में आकर उनका पीछा करने में लग गए।

**1 Samuel 14:23**

<sup>23</sup> तब यहोवा ने उस दिन इस्त्राएलियों को छुटकारा दिया; और लड़नेवाले बेतावेन की परली ओर तक चले गए।

**1 Samuel 14:24**

<sup>24</sup> परन्तु इस्त्राएली पुरुष उस दिन तंग हुए, क्योंकि शाऊल ने उन लोगों को शपथ धराकर कहा, “श्रापित हो वह, जो साँझ से पहले कुछ खाए; इसी रीति मैं अपने शत्रुओं से बदला ले सकूँगा।” अतः उन लोगों में से किसी ने कुछ भी भोजन न किया।

**1 Samuel 14:25**

<sup>25</sup> और सब लोग किसी वन में पहुँचे, जहाँ भूमि पर मधु पड़ा हुआ था।

**1 Samuel 14:26**

<sup>26</sup> जब लोग वन में आए तब क्या देखा, कि मधु टपक रहा है, तो भी शपथ के डर के मारे कोई अपना हाथ अपने मुँह तक न ले गया।

**1 Samuel 14:27**

<sup>27</sup> परन्तु योनातान ने अपने पिता को लोगों को शपथ धराते न सुना था, इसलिए उसने अपने हाथ की छड़ी की नोक बढ़ाकर मधु के छत्ते में डुबाया, और अपना हाथ अपने मुँह तक ले गया; तब उसकी आँखों में ज्योति आई।

**1 Samuel 14:28**

<sup>28</sup> तब लोगों में से एक मनुष्य ने कहा, “तेरे पिता ने लोगों को कड़ी शपथ धरा के कहा है, ‘श्रापित हो वह, जो आज कुछ खाए।’” और लोग थके-माँदे थे।

**1 Samuel 14:29**

<sup>29</sup> योनातान ने कहा, “मेरे पिता ने लोगों को कष्ट दिया है; देखो, मैंने इस मधु को थोड़ा सा चखा, और मेरी आँखें कैसी चमक उठी हैं।

**1 Samuel 14:30**

<sup>30</sup> यदि आज लोग अपने शत्रुओं की लूट से जिसे उन्होंने पाया मनमाना खाते, तो कितना अच्छा होता; अभी तो बहुत अधिक पलिश्ती मारे नहीं गए।”

**1 Samuel 14:31**

<sup>31</sup> उस दिन वे मिकमाश से लेकर अय्यालोन तक पलिश्तियों को मारते गए; और लोग बहुत ही थक गए।

**1 Samuel 14:32**

<sup>32</sup> इसलिए वे लूट पर टूटे, और भेड़-बकरी, और गाय-बैल, और बछड़े लेकर भूमि पर मारकर उनका माँस लहू समेत खाने लगे।

**1 Samuel 14:33**

<sup>33</sup> जब इसका समाचार शाऊल को मिला, कि लोग लहू समेत माँस खाकर यहोवा के विरुद्ध पाप करते हैं। तब उसने उनसे कहा, “तुम ने तो विश्वासघात किया है; अभी एक बड़ा पत्थर मेरे पास लुढ़का दो।”

**1 Samuel 14:34**

<sup>34</sup> फिर शाऊल ने कहा, “लोगों के बीच में इधर-उधर फिरके उनसे कहो, ‘अपना-अपना बैल और भेड़ शाऊल के पास ले जाओ, और वहीं बलि करके खाओ; और लहू समेत खाकर यहोवा के विरुद्ध पाप न करो।’” तब सब लोगों ने उसी रात अपना-अपना बैल ले जाकर वहीं बलि किया।

**1 Samuel 14:35**

<sup>35</sup> तब शाऊल ने यहोवा के लिये एक वेदी बनवाई; वह तो पहली वेदी है जो उसने यहोवा के लिये बनवाई।

**1 Samuel 14:36**

<sup>36</sup> फिर शाऊल ने कहा, “हम इसी रात को ही पलिश्तियों का पीछा करके उन्हें भोर तक लूटते रहें; और उनमें से एक मनुष्य को भी जीवित न छोड़ें।” उन्होंने कहा, “जो कुछ तुझे अच्छा लगे वही कर।” परन्तु याजक ने कहा, “हम यहीं परमेश्वर के समीप आएँ।”

**1 Samuel 14:37**

<sup>37</sup> तब शाऊल ने परमेश्वर से पूछा, “क्या मैं पलिश्तियों का पीछा करूँ? क्या तू उन्हें इसाएल के हाथ में कर देगा?” परन्तु उसे उस दिन कुछ उत्तर न मिला।

**1 Samuel 14:38**

<sup>38</sup> तब शाऊल ने कहा, “हे प्रजा के मुख्य लोगों, इधर आकर जानो; और देखो कि आज पाप किस प्रकार से हुआ है।

**1 Samuel 14:39**

<sup>39</sup> क्योंकि इसाएल के छुड़ानेवाले यहोवा के जीवन की शपथ, यदि वह पाप मेरे पुत्र योनातान से हुआ हो, तो भी निश्चय वह मार डाला जाएगा।” परन्तु लोगों में से किसी ने उसे उत्तर न दिया।

**1 Samuel 14:40**

<sup>40</sup> तब उसने सारे इसाएलियों से कहा, “तुम एक ओर रहो, और मैं और मेरा पुत्र योनातान दूसरी ओर रहेंगे।” लोगों ने शाऊल से कहा, “जो कुछ तुझे अच्छा लगे वही कर।”

**1 Samuel 14:41**

<sup>41</sup> तब शाऊल ने यहोवा से कहा, “हे इसाएल के परमेश्वर, सत्य बात बता।” तब चिट्ठी योनातान और शाऊल के नाम पर निकली, और प्रजा बच गई।

**1 Samuel 14:42**

<sup>42</sup> फिर शाऊल ने कहा, “मेरे और मेरे पुत्र योनातान के नाम पर चिट्ठी डालो।” तब चिट्ठी योनातान के नाम पर निकली।

**1 Samuel 14:43**

<sup>43</sup> तब शाऊल ने योनातान से कहा, “मुझे बता, कि तूने क्या किया है।” योनातान ने बताया, और उससे कहा, “मैंने अपने हाथ की छड़ी की नोक से थोड़ा सा मधु चख तो लिया था; और देख, मुझे मरना है।”

**1 Samuel 14:44**

<sup>44</sup> शाऊल ने कहा, “परमेश्वर ऐसा ही करे, वरन् इससे भी अधिक करे; हे योनातान, तू निश्चय मारा जाएगा।”

**1 Samuel 14:45**

<sup>45</sup> परन्तु लोगों ने शाऊल से कहा, “क्या योनातान मारा जाए, जिसने इसाएलियों का ऐसा बड़ा छुटकारा किया है? ऐसा न होगा! यहोवा के जीवन की शपथ, उसके सिर का एक बाल भी भूमि पर गिरने न पाएगा; क्योंकि आज के दिन उसने परमेश्वर के साथ होकर काम किया है।” तब प्रजा के लोगों ने योनातान को बचा लिया, और वह मारा न गया।

**1 Samuel 14:46**

<sup>46</sup> तब शाऊल पलिश्तियों का पीछा छोड़कर लौट गया; और पलिश्ती भी अपने स्थान को छले गए।

**1 Samuel 14:47**

<sup>47</sup> जब शाऊल इसाएलियों के राज्य में स्थिर हो गया, तब वह मोआबी, अम्मोनी, एदोमी, और पलिश्ती, अपने चारों ओर के सब शत्रुओं से, और सोबा के राजाओं से लड़ा; और जहाँ-जहाँ वह जाता वहाँ जय पाता था।

**1 Samuel 14:48**

<sup>48</sup> फिर उसने वीरता करके अमालेकियों को जीता, और इसाएलियों को लूटनेवालों के हाथ से छुड़ाया।

**1 Samuel 14:49**

<sup>49</sup> शाऊल के पुत्र योनातान, यिश्वी, और मल्कीशूअ थे; और उसकी दो बेटियों के नाम ये थे, बड़ी का नाम तौ मेरब और छोटी का नाम मीकल था।

**1 Samuel 14:50**

<sup>50</sup> और शाऊल की स्त्री का नाम अहीनोअम था जो अहीमास की बेटी थी। उसके प्रधान सेनापति का नाम अब्बेर था जो शाऊल के चाचा नेर का पुत्र था।

**1 Samuel 14:51**

<sup>51</sup> शाऊल का पिता कीश था, और अब्बेर का पिता नेर अबीएल का पुत्र था।

**1 Samuel 14:52**

<sup>52</sup> शाऊल जीवन भर पलिश्तियों से संग्राम करता रहा; जब जब शाऊल को कोई वीर या अच्छा योद्धा दिखाई पड़ा तब-तब उसने उसे अपने पास रख लिया।

**1 Samuel 15:1**

<sup>1</sup> शमूएल ने शाऊल से कहा, “यहोवा ने अपनी प्रजा इसाएल पर राज्य करने के लिये तेरा अभिषेक करने को मुझे भेजा था; इसलिए अब यहोवा की बातें सुन ले।

**1 Samuel 15:2**

<sup>2</sup> सेनाओं का यहोवा यह कहता है, ‘मुझे स्मरण आता है कि अमालेकियों ने इसाएलियों से क्या किया; जब इसाएली मिस्र से आ रहे थे, तब उन्होंने मार्ग में उनका सामना किया।

**1 Samuel 15:3**

<sup>3</sup> इसलिए अब तू जाकर अमालेकियों को मार, और जो कुछ उनका है उसे बिना कोमलता किए सत्यानाश कर; क्या पुरुष, क्या स्त्री, क्या बच्चा, क्या दूध पीता, क्या गाय-बैल, क्या भेड़-बकरी, क्या ऊँट, क्या गदहा, सब को मार डाल।”

**1 Samuel 15:4**

<sup>4</sup> तब शाऊल ने लोगों को बुलाकर इकट्ठा किया, और उन्हें तलाईम में गिना, और वे दो लाख प्यादे, और दस हजार यहूदी पुरुष थे।

**1 Samuel 15:5**

<sup>5</sup> तब शाऊल ने अमालेक नगर के पास जाकर एक घाटी में घातकों को बैठाया।

**1 Samuel 15:6**

<sup>6</sup> और शाऊल ने केनियों से कहा, “वहाँ से हटो, अमालेकियों के मध्य में से निकल जाओ कहीं ऐसा न हो कि मैं उनके साथ तुम्हारा भी अन्त कर डालूँ; क्योंकि तुम ने सब इस्राएलियों पर उनके मिस्र से आते समय प्रीति दिखाई थी।” और केनी अमालेकियों के मध्य में से निकल गए।

**1 Samuel 15:7**

<sup>7</sup> तब शाऊल ने हवीला से लेकर शूर तक जो मिस्र के पूर्व में है अमालेकियों को मारा।

**1 Samuel 15:8**

<sup>8</sup> और उनके राजा अगाग को जीवित पकड़ा, और उसकी सब प्रजा को तलवार से नष्ट कर डाला।

**1 Samuel 15:9**

<sup>9</sup> परन्तु अगाग पर, और अच्छी से अच्छी भेड़-बकरियों, गाय-बैलों, मोटे पशुओं, और मेंगों, और जो कुछ अच्छा था, उन पर शाऊल और उसकी प्रजा ने कोमलता की, और उन्हें नष्ट करना न चाहा; परन्तु जो कुछ तुच्छ और निकम्मा था उसका उन्होंने सत्यानाश किया।

**1 Samuel 15:10**

<sup>10</sup> तब यहोवा का यह वचन शमूएल के पास पहुँचा,

**1 Samuel 15:11**

<sup>11</sup> “मैं शाऊल को राजा बना के पछताता हूँ; क्योंकि उसने मेरे पीछे चलना छोड़ दिया, और मेरी आज्ञाओं का पालन नहीं किया।” तब शमूएल का क्रोध भड़का; और वह रात भर यहोवा की दुहाई देता रहा।

**1 Samuel 15:12**

<sup>12</sup> जब शमूएल शाऊल से भेट करने के लिये सवेरे उठा; तब शमूएल को यह बताया गया, “शाऊल कर्मेल को आया था, और अपने लिये एक स्मारक खड़ा किया, और घूमकर गिलगाल को चला गया है।”

**1 Samuel 15:13**

<sup>13</sup> तब शमूएल शाऊल के पास गया, और शाऊल ने उससे कहा, “तुझे यहोवा की ओर से आशीष मिले; मैंने यहोवा की आज्ञा पूरी की है।”

**1 Samuel 15:14**

<sup>14</sup> शमूएल ने कहा, “फिर भेड़-बकरियों का यह मिमियाना, और गाय-बैलों का यह रम्भाना जो मुझे सुनाई देता है, यह क्यों हो रहा है?”

**1 Samuel 15:15**

<sup>15</sup> शाऊल ने कहा, “वे तो अमालेकियों के यहाँ से आए हैं; अर्थात् प्रजा के लोगों ने अच्छी से अच्छी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये बलिं करने को छोड़ दिया है; और बाकी सब का तो हमने सत्यानाश कर दिया है।”

**1 Samuel 15:16**

<sup>16</sup> तब शमूएल ने शाऊल से कहा, “ठहर जा! और जो बात यहोवा ने आज रात को मुझसे कही है वह मैं तुझको बताता हूँ।” उसने कहा, “कह दे।”

**1 Samuel 15:17**

<sup>17</sup> शमूएल ने कहा, “जब तू अपनी दृष्टि में छोटा था, तब क्या तू इस्राएली गोत्रों का प्रधान न हो गया?, और क्या यहोवा ने इस्राएल पर राज्य करने को तेरा अभिषेक नहीं किया?

**1 Samuel 15:18**

<sup>18</sup> और यहोवा ने तुझे एक विशेष कार्य करने को भेजा, और कहा, जाकर उन पापी अमालेकियों का सत्यानाश कर, और जब तक वे मिट न जाएँ, तब तक उनसे लड़ता रह।”

**1 Samuel 15:19**

<sup>19</sup> फिर तूने किस लिये यहोवा की यह बात टालकर लूट पर टूट के वह काम किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है?”

**1 Samuel 15:20**

<sup>20</sup> शाऊल ने शमूएल से कहा, “निःसन्देह मैंने यहोवा की बात मानकर जिधर यहोवा ने मुझे भेजा उधर चला, और अमालेकियों के राजा को ले आया हूँ, और अमालेकियों का सत्यानाश किया है।

**1 Samuel 15:21**

<sup>21</sup> परन्तु प्रजा के लोग लूट में से भेड़-बकरियों, और गाय-बैलों अर्थात् नष्ट होने की उत्तम-उत्तम वस्तुओं को गिलगाल में तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये बलि चढ़ाने को ले आए हैं।”

**1 Samuel 15:22**

<sup>22</sup> शमूएल ने कहा, “क्या यहोवा होमबलियों, और मेलबलियों से उतना प्रसन्न होता है, जितना कि अपनी बात के माने जाने से प्रसन्न होता है? सुन, मानना तो बलि चढ़ाने से और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है।

**1 Samuel 15:23**

<sup>23</sup> देख, बलवा करना और भावी कहनेवालों से पूछना एक ही समान पाप है, और हठ करना मूरतों और गृहदेवताओं की पूजा के तुल्य है। तूने जो यहोवा की बात को तुच्छ जाना, इसलिए उसने तुझे राजा होने के लिये तुच्छ जाना है।”

**1 Samuel 15:24**

<sup>24</sup> शाऊल ने शमूएल से कहा, “मैंने पाप किया है; मैंने तो अपनी प्रजा के लोगों का भय मानकर और उनकी बात सुनकर यहोवा की आज्ञा और तेरी बातों का उल्लंघन किया है।

**1 Samuel 15:25**

<sup>25</sup> परन्तु अब मेरे पाप को क्षमा कर, और मेरे साथ लौट आ, कि मैं यहोवा को दण्डवत् करूँ।”

**1 Samuel 15:26**

<sup>26</sup> शमूएल ने शाऊल से कहा, “मैं तेरे साथ न लौटूँगा; क्योंकि तूने यहोवा की बात को तुच्छ जाना है, और यहोवा ने तुझे इस्साएल का राजा होने के लिये तुच्छ जाना है।”

**1 Samuel 15:27**

<sup>27</sup> तब शमूएल जाने के लिये घूमा, और शाऊल ने उसके बागे की छोर को पकड़ा, और वह फट गया।

**1 Samuel 15:28**

<sup>28</sup> तब शमूएल ने उससे कहा, “आज यहोवा ने इस्साएल के राज्य को फाड़कर तुझ से छीन लिया, और तेरे एक पड़ोसी को जो तुझ से अच्छा है दे दिया है।

**1 Samuel 15:29**

<sup>29</sup> और जो इस्साएल का बलमूल है वह न तो झूठ बोलता और न पछताता है; क्योंकि वह मनुष्य नहीं है, कि पछताए।”

**1 Samuel 15:30**

<sup>30</sup> उसने कहा, “मैंने पाप तो किया है; तो भी मेरी प्रजा के पुरनियों और इस्साएल के सामने मेरा आदर कर, और मेरे साथ लौट, कि मैं तेरे परमेश्वर यहोवा को दण्डवत् करूँ।”

**1 Samuel 15:31**

<sup>31</sup> तब शमूएल लौटकर शाऊल के पीछे गया; और शाऊल ने यहोवा को दण्डवत् की।

**1 Samuel 15:32**

<sup>32</sup> तब शमूएल ने कहा, “अमालेकियों के राजा अगाग को मेरे पास ले आओ।” तब अगाग आनन्द के साथ यह कहता हुआ उसके पास गया, “निश्चय मृत्यु का दुःख जाता रहा।”

**1 Samuel 15:33**

<sup>33</sup> शमूएल ने कहा, “जैसे स्त्रियाँ तेरी तलवार से निर्वश हुई हैं, वैसे ही तेरी माता स्त्रियों में निर्वश होगी।” तब शमूएल ने अगाग को गिलगाल में यहोवा के सामने टुकड़े-टुकड़े किया।

**1 Samuel 15:34**

<sup>34</sup> तब शमूएल रामाह को चला गया; और शाऊल अपने नगर गिबा को अपने घर गया।

**1 Samuel 15:35**

<sup>35</sup> और शमूएल ने अपने जीवन भर शाऊल से फिर भेट न की, क्योंकि शमूएल शाऊल के लिये विलाप करता रहा। और यहोवा शाऊल को इसाएल का राजा बनाकर पछताता था।

**1 Samuel 16:1**

<sup>1</sup> यहोवा ने शमूएल से कहा, “मैंने शाऊल को इसाएल पर राज्य करने के लिये तुच्छ जाना है, तू कब तक उसके विषय विलाप करता रहेगा? अपने सींग में तेल भरकर चल; मैं तुझको बैतलहमवासी यिशै के पास भेजता हूँ, क्योंकि मैंने उसके पुत्रों में से एक को राजा होने के लिये चुना है।”

**1 Samuel 16:2**

<sup>2</sup> शमूएल बोला, “मैं कैसे जा सकता हूँ? यदि शाऊल सुन लेगा, तो मुझे घात करेगा।” यहोवा ने कहा, “एक बछिया साथ ले जाकर कहना, ‘मैं यहोवा के लिये यज्ञ करने को आया हूँ।’

**1 Samuel 16:3**

<sup>3</sup> और यज्ञ पर यिशै को न्योता देना, तब मैं तुझे बता दूँगा कि तुझको क्या करना है; और जिसको मैं तुझे बताऊँ उसी का मेरी ओर से अभिषेक करना।”

**1 Samuel 16:4**

<sup>4</sup> तब शमूएल ने यहोवा के कहने के अनुसार किया, और बैतलहम को गया। उस नगर के पुरानिये धरथराते हुए उससे मिलने को गए, और कहने लगे, “क्या तू मित्रभाव से आया है कि नहीं?”

**1 Samuel 16:5**

<sup>5</sup> उसने कहा, “हाँ, मित्रभाव से आया हूँ; मैं यहोवा के लिये यज्ञ करने को आया हूँ; तुम अपने-अपने को पवित्र करके मेरे साथ यज्ञ में आओ।” तब उसने यिशै और उसके पुत्रों को पवित्र करके यज्ञ में आने का न्योता दिया।

**1 Samuel 16:6**

<sup>6</sup> जब वे आए, तब उसने एलीआब पर दृष्टि करके सोचा, “निश्चय यह जो यहोवा के सामने है वही उसका अभिषिक्त होगा।”

**1 Samuel 16:7**

<sup>7</sup> परन्तु यहोवा ने शमूएल से कहा, “न तो उसके रूप पर दृष्टि कर, और न उसके कद की ऊँचाई पर, क्योंकि मैंने उसे अयोग्य जाना है; क्योंकि यहोवा का देखना मनुष्य का सा नहीं है; मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है।”

**1 Samuel 16:8**

<sup>8</sup> तब यिशै ने अबीनादाब को बुलाकर शमूएल के सामने भेजा। और उससे कहा, “यहोवा ने इसको भी नहीं चुना।”

**1 Samuel 16:9**

<sup>9</sup> फिर यिशै ने शम्मा को सामने भेजा। और उसने कहा, “यहोवा ने इसको भी नहीं चुना।”

**1 Samuel 16:10**

<sup>10</sup> इस प्रकार यिशै ने अपने सात पुत्रों को शमूएल के सामने भेजा। और शमूएल यिशै से कहता गया, “यहोवा ने इन्हें नहीं चुना।”

**1 Samuel 16:11**

<sup>11</sup> तब शमूएल ने यिशै से कहा, “क्या सब लड़के आ गए?” वह बोला, “नहीं, छोटा तो रह गया, और वह भेड़-बकरियों को चरा रहा है।” शमूएल ने यिशै से कहा, “उसे बुलवा भेज; क्योंकि जब तक वह यहाँ न आए तब तक हम खाने को न बैठेंगे।”

**1 Samuel 16:12**

<sup>12</sup> तब वह उसे बुलाकर भीतर ले आया। उसके तो लाली झलकती थी, और उसकी आँखें सुन्दर, और उसका रूप सुडौल था। तब यहोवा ने कहा, “उठकर इसका अभिषेक कर: यही है।”

**1 Samuel 16:13**

<sup>13</sup> तब शमूएल ने अपना तेल का सींग लेकर उसके भाइयों के मध्य में उसका अभिषेक किया; और उस दिन से लेकर भविष्य को यहोवा का आत्मा दाऊद पर बल से उतरता रहा। तब शमूएल उठकर रामाह को चला गया।

**1 Samuel 16:14**

<sup>14</sup> यहोवा का आत्मा शाऊल पर से उठ गया, और यहोवा की ओर से एक दुष्ट आत्मा उसे घबराने लगा।

**1 Samuel 16:15**

<sup>15</sup> और शाऊल के कर्मचारियों ने उससे कहा, “सुन, परमेश्वर की ओर से एक दुष्ट आत्मा तुझे घबराता है।

**1 Samuel 16:16**

<sup>16</sup> हमारा प्रभु अपने कर्मचारियों को जो उपस्थित हैं आज्ञा दे, कि वे किसी अच्छे वीणा बजानेवाले को ढूँढ़ ले आँँ; और जब जब परमेश्वर की ओर से दुष्ट आत्मा तुझ पर चढ़े, तब-तब वह अपने हाथ से बजाए, और तू अच्छा हो जाए।”

**1 Samuel 16:17**

<sup>17</sup> शाऊल ने अपने कर्मचारियों से कहा, “अच्छा, एक उत्तम वीणा-वादक देखो, और उसे मेरे पास लाओ।”

**1 Samuel 16:18**

<sup>18</sup> तब एक जवान ने उत्तर देके कहा, “सुन, मैंने बैतलहमवासी यिशै के एक पुत्र को देखा जो वीणा बजाना जानता है, और वह वीर योद्धा भी है, और बात करने में बुद्धिमान और रूपवान भी है; और यहोवा उसके साथ रहता है।”

**1 Samuel 16:19**

<sup>19</sup> तब शाऊल ने दूतों के हाथ यिशै के पास कहला भेजा, “अपने पुत्र दाऊद को जो भेड़-बकरियों के साथ रहता है मेरे पास भेज दे।”

**1 Samuel 16:20**

<sup>20</sup> तब यिशै ने रोटी से लदा हुआ एक गदहा, और कुप्पा भर दाखमधु, और बकरी का एक बच्चा लेकर अपने पुत्र दाऊद के हाथ से शाऊल के पास भेज दिया।

**1 Samuel 16:21**

<sup>21</sup> और दाऊद शाऊल के पास जाकर उसके सामने उपस्थित रहने लगा। और शाऊल उससे बहुत प्रीति करने लगा, और वह उसका हथियार ढोनेवाला हो गया।

**1 Samuel 16:22**

<sup>22</sup> तब शाऊल ने यिशै के पास कहला भेजा, “दाऊद को मेरे सामने उपस्थित रहने दे, क्योंकि मैं उससे बहुत प्रसन्न हूँ।”

**1 Samuel 16:23**

<sup>23</sup> और जब जब परमेश्वर की ओर से वह आत्मा शाऊल पर चढ़ता था, तब-तब दाऊद वीणा लेकर बजाता; और शाऊल चैन पाकर अच्छा हो जाता था, और वह दुष्ट आत्मा उसमें से हट जाता था।

**1 Samuel 17:1**

<sup>1</sup> अब पलिश्तियों ने युद्ध के लिये अपनी सेनाओं को इकट्ठा किया; और यहूदा देश के सोको में एक साथ होकर सोको और अजेका के बीच एपेसदमीम में डेरे डाले।

**1 Samuel 17:2**

<sup>2</sup> शाऊल और इस्माएली पुरुषों ने भी इकट्ठे होकर एला नामक तराई में डेरे डाले, और युद्ध के लिये पलिश्तियों के विरुद्ध पाँति बाँधी।

**1 Samuel 17:3**

<sup>3</sup> पलिश्ती तो एक ओर के पहाड़ पर और इस्माएली दूसरी ओर के पहाड़ पर खड़े रहे; और दोनों के बीच तराई थी।

**1 Samuel 17:4**

<sup>4</sup> तब पलिश्तीयों की छावनी में से गोलियत नामक एक वीर निकला, जो गत नगर का था, और उसकी लम्बाई छः हाथ एक बित्ता थी।

**1 Samuel 17:5**

<sup>5</sup> उसके सिर पर पीतल का टोप था; और वह एक पत्तर का झिलम पहने हुए था, जिसका तौल पाँच हजार शेकेल पीतल का था।

**1 Samuel 17:6**

<sup>6</sup> उसकी टाँगों पर पीतल के कवच थे, और उसके कंधों के बीच बरछी बंधी थी।

**1 Samuel 17:7**

<sup>7</sup> उसके भाले की छड़ जुलाहे के डोंगी के समान थी, और उस भाले का फल छः सौ शेकेल लोहे का था, और बड़ी ढाल लिए हुए एक जन उसके आगे-आगे चलता था।

**1 Samuel 17:8**

<sup>8</sup> वह खड़ा होकर इसाएली पाँतियों को ललकार के बोला, “तुम ने यहाँ आकर लड़ाई के लिये क्यों पाँति बाँधी है? क्या मैं पलिश्ती नहीं हूँ, और तुम शाऊल के अधीन नहीं हो? अपने में से एक पुरुष चुनो, कि वह मेरे पास उतर आए।

**1 Samuel 17:9**

<sup>9</sup> यदि वह मुझसे लड़कर मुझे मार सके, तब तो हम तुम्हारे अधीन हो जाएँगे; परन्तु यदि मैं उस पर प्रबल होकर मारूँ, तो तुम को हमारे अधीन होकर हमारी सेवा करनी पड़ेगी।”

**1 Samuel 17:10**

<sup>10</sup> फिर वह पलिश्ती बोला, “मैं आज के दिन इसाएली पाँतियों को ललकारता हूँ, किसी पुरुष को मेरे पास भेजो, कि हम एक दूसरे से लड़ें।”

**1 Samuel 17:11**

<sup>11</sup> उस पलिश्ती की इन बातों को सुनकर शाऊल और समस्त इस्राएलियों का मन कच्चा हो गया, और वे अत्यन्त डर गए।

**1 Samuel 17:12**

<sup>12</sup> दाऊद यहूदा के बैतलहम के उस एप्राती पुरुष का पुत्र था, जिसका नाम यिशै था, और उसके आठ पुत्र थे और वह पुरुष शाऊल के दिनों में बूढ़ा और निर्बल हो गया था।

**1 Samuel 17:13**

<sup>13</sup> यिशै के तीन बड़े पुत्र शाऊल के पीछे होकर लड़ने को गए थे; और उसके तीन पुत्रों के नाम जो लड़ने को गए थे, ये थे, अर्थात् ज्येष्ठ का नाम एलीआब, दूसरे का अबीनादाब, और तीसरे का शम्मा था।

**1 Samuel 17:14**

<sup>14</sup> सबसे छोटा दाऊद था; और तीनों बड़े पुत्र शाऊल के पीछे होकर गए थे,

**1 Samuel 17:15**

<sup>15</sup> और दाऊद बैतलहम में अपने पिता की भेड़ बकरियाँ चराने को शाऊल के पास से आया-जाया करता था।

**1 Samuel 17:16**

<sup>16</sup> वह पलिश्ती तो चालीस दिन तक सवेरे और साँझ को निकट जाकर खड़ा हुआ करता था।

**1 Samuel 17:17**

<sup>17</sup> यिशै ने अपने पुत्र दाऊद से कहा, “यह एपा भर भुना हुआ अनाज, और ये दस रोटियाँ लेकर छावनी में अपने भाइयों के पास दौड़ जा;

**1 Samuel 17:18**

<sup>18</sup> और पनीर की ये दस टिकियाँ उनके सहस्रपति के लिये ले जा। और अपने भाइयों का कुशल देखकर उनकी कोई निशानी ले आना।

**1 Samuel 17:19**

<sup>19</sup> शाऊल, और तेरे भाई, और समस्त इस्साएली पुरुष एला नामक तराई में पलिश्तियों से लड़ रहे हैं।"

**1 Samuel 17:20**

<sup>20</sup> अतः दाऊद सवेरे उठ, भेड़ बकरियों को किसी रखवाले के हाथ में छोड़कर, यिशै की आज्ञा के अनुसार उन वस्तुओं को लेकर चला; और जब सेना रणभूमि को जा रही, और संग्राम के लिये ललकार रही थी, उसी समय वह गाड़ियों के पड़ाव पर पहुँचा।

**1 Samuel 17:21**

<sup>21</sup> तब इस्साएलियों और पलिश्तियों ने अपनी-अपनी सेना आमने-सामने करके पाँति बाँधी।

**1 Samuel 17:22**

<sup>22</sup> दाऊद अपनी सामग्री सामान के रखवाले के हाथ में छोड़कर रणभूमि को दौड़ा, और अपने भाइयों के पास जाकर उनका कुशल क्षेत्र पूछा।

**1 Samuel 17:23**

<sup>23</sup> वह उनके साथ बातें कर ही रहा था, कि पलिश्तियों की पाँतियों में से वह वीर, अर्थात् गतवासी गोलियत नामक वह पलिश्ती पोद्धा चढ़ आया, और पहले की सी बातें कहने लगा। और दाऊद ने उन्हें सुना।

**1 Samuel 17:24**

<sup>24</sup> उस पुरुष को देखकर सब इस्साएली अत्यन्त भय खाकर उसके सामने से भागे।

**1 Samuel 17:25**

<sup>25</sup> फिर इस्साएली पुरुष कहने लगे, "क्या तुम ने उस पुरुष को देखा है जो चढ़ा आ रहा है? निश्चय वह इस्साएलियों को ललकारने को चढ़ा आता है; और जो कोई उसे मार डालेगा उसको राजा बहुत धन देगा, और अपनी बेटी का विवाह

उससे कर देगा, और उसके पिता के घराने को इस्साएल में स्वतंत्र कर देगा।"

**1 Samuel 17:26**

<sup>26</sup> तब दाऊद ने उन पुरुषों से जो उसके आस-पास खड़े थे पूछा, "जो उस पलिश्ती को मारकर इस्साएलियों की नामधराई दूर करेगा उसके लिये क्या किया जाएगा? वह खतनारहित पलिश्ती क्या है कि जीवित परमेश्वर की सेना को ललकारे?"

**1 Samuel 17:27**

<sup>27</sup> तब लोगों ने उससे वही बातें कहीं, अर्थात् यह, कि जो कोई उसे मारेगा उससे ऐसा-ऐसा किया जाएगा।

**1 Samuel 17:28**

<sup>28</sup> जब दाऊद उन मनुष्यों से बातें कर रहा था, तब उसका बड़ा भाई एलीआब सुन रहा था; और एलीआब दाऊद से बहुत क्रोधित होकर कहने लगा, "तू यहाँ क्यों आया है? और जंगल में उन थोड़ी सी भेड़ बकरियों को तू किसके पास छोड़ आया है? तेरा अभिमान और तेरे मन की बुराई मुझे मालूम है; तू तो लड़ाई देखने के लिये यहाँ आया है।"

**1 Samuel 17:29**

<sup>29</sup> दाऊद ने कहा, "अब मैंने क्या किया है? वह तो निरी बात थी।"

**1 Samuel 17:30**

<sup>30</sup> तब उसने उसके पास से मुँह फेर के दूसरे के समुख होकर वैसी ही बात कही; और लोगों ने उसे पहले के समान उत्तर दिया।

**1 Samuel 17:31**

<sup>31</sup> जब दाऊद की बातों की चर्चा हुई, तब शाऊल को भी सुनाई गई; और उसने उसे बुलवा भेजा।

**1 Samuel 17:32**

<sup>32</sup> तब दाऊद ने शाऊल से कहा, “किसी मनुष्य का मन उसके कारण कच्चा न हो; तेरा दास जाकर उस पलिश्ती से लड़ेगा।”

**1 Samuel 17:33**

<sup>33</sup> शाऊल ने दाऊद से कहा, “तू जाकर उस पलिश्ती के विरुद्ध युद्ध नहीं कर सकता; क्योंकि तू तो लड़का ही है, और वह लड़कपन ही से योद्धा है।”

**1 Samuel 17:34**

<sup>34</sup> दाऊद ने शाऊल से कहा, “तेरा दास अपने पिता की भेड़-बकरियाँ चराता था; और जब कोई सिंह या भालू झुण्ड में से मेघा उठा ले जाता,

**1 Samuel 17:35**

<sup>35</sup> तब मैं उसका पीछा करके उसे मारता, और मेघों को उसके मुँह से छुड़ा लेता; और जब वह मुझ पर हमला करता, तब मैं उसके केश को पकड़कर उसे मार डालता।

**1 Samuel 17:36**

<sup>36</sup> तेरे दास ने सिंह और भालू दोनों को मारा है। और वह खतनारहित पलिश्ती उनके समान हो जाएगा, क्योंकि उसने जीवित परमेश्वर की सेना को ललकारा है।”

**1 Samuel 17:37**

<sup>37</sup> फिर दाऊद ने कहा, “यहोवा जिसने मुझे सिंह और भालू दोनों के पंजे से बचाया है, वह मुझे उस पलिश्ती के हाथ से भी बचाएगा।” शाऊल ने दाऊद से कहा, “जा, यहोवा तेरे साथ रहे।”

**1 Samuel 17:38**

<sup>38</sup> तब शाऊल ने अपने वस्त्र दाऊद को पहनाए, और पीतल का टोप उसके सिर पर रख दिया, और झिलम उसको पहनाया।

**1 Samuel 17:39**

<sup>39</sup> तब दाऊद ने उसकी तलवार वस्त्र के ऊपर कसी, और चलने का यत्न किया; उसने तो उनको न परखा था। इसलिए दाऊद ने शाऊल से कहा, “इन्हें पहने हुए मुझसे चला नहीं जाता, क्योंकि मैंने इन्हें नहीं परखा है।” और दाऊद ने उन्हें उतार दिया।

**1 Samuel 17:40**

<sup>40</sup> तब उसने अपनी लाठी हाथ में ली और नदी में से पाँच चिकने पथर छाँटकर अपनी चरवाही की थैली, अर्थात् अपने झोले में रखे; और अपना गोफन हाथ में लेकर पलिश्ती के निकट गया।

**1 Samuel 17:41**

<sup>41</sup> और पलिश्ती चलते-चलते दाऊद के निकट पहुँचने लगा, और जो जन उसकी बड़ी ढाल लिए था वह उसके आगे-आगे चला।

**1 Samuel 17:42**

<sup>42</sup> जब पलिश्ती ने दृष्टि करके दाऊद को देखा, तब उसे तुच्छ जाना; क्योंकि वह लड़का ही था, और उसके मुख पर लाली झलकती थी, और वह सुन्दर था।

**1 Samuel 17:43**

<sup>43</sup> तब पलिश्ती ने दाऊद से कहा, “क्या मैं कुत्ता हूँ, कि तू लाठी लेकर मेरे पास आता है?” तब पलिश्ती अपने देवताओं के नाम लेकर दाऊद को कोसने लगा।

**1 Samuel 17:44**

<sup>44</sup> फिर पलिश्ती ने दाऊद से कहा, “मेरे पास आ, मैं तेरा माँस आकाश के पक्षियों और वन-पशुओं को दे दूँगा।”

**1 Samuel 17:45**

<sup>45</sup> दाऊद ने पलिश्ती से कहा, “तू तो तलवार और भाला और सांग लिए हुए मेरे पास आता है, परन्तु मैं सेनाओं के यहोवा के नाम से तेरे पास आता हूँ, जो इसाएली सेना का परमेश्वर है, और उसी को तूने ललकारा है।

**1 Samuel 17:46**

<sup>46</sup> आज के दिन यहोवा तुझको मेरे हाथ में कर देगा, और मैं तुझको मारूँगा, और तेरा सिर तेरे धड़ से अलग करूँगा; और मैं आज के दिन पलिश्ती सेना के शब आकाश के पक्षियों को देटूँगा; तब समस्त पृथ्वी के लोग जान लेंगे कि इस्राएल में एक परमेश्वर है।

**1 Samuel 17:47**

<sup>47</sup> और यह समस्त मण्डली जान लेगी कि यहोवा तलवार या भाले के द्वारा जयवत्त नहीं करता, इसलिए कि संग्राम तो यहोवा का है, और वही तुम्हें हमारे हाथ में कर देगा।”

**1 Samuel 17:48**

<sup>48</sup> जब पलिश्ती उठकर दाऊद का सामना करने के लिये निकट आया, तब दाऊद सेना की ओर पलिश्ती का सामना करने के लिये फुर्ती से दौड़ा।

**1 Samuel 17:49**

<sup>49</sup> फिर दाऊद ने अपनी थैली में हाथ डालकर उसमें से एक पत्थर निकाला, और उसे गोफन में रखकर पलिश्ती के माथे पर ऐसा मारा कि पत्थर उसके माथे के भीतर घुस गया, और वह भूमि पर मुँह के बल गिर पड़ा।

**1 Samuel 17:50**

<sup>50</sup> अतः दाऊद ने पलिश्ती पर गोफन और एक ही पत्थर के द्वारा प्रबल होकर उसे मार डाला; परन्तु दाऊद के हाथ में तलवार न थी।

**1 Samuel 17:51**

<sup>51</sup> तब दाऊद दौड़कर पलिश्ती के ऊपर खड़ा हो गया, और उसकी तलवार पकड़कर म्यान से खींची, और उसको धात किया, और उसका सिर उसी तलवार से काट डाला। यह देखकर कि हमारा वीर मर गया पलिश्ती भाग गए।

**1 Samuel 17:52**

<sup>52</sup> इस पर इस्राएली और यहूदी पुरुष ललकार उठे, और गत और एक्रोन से फाटकों तक पलिश्तियों का पीछा करते गए, और घायल पलिश्ती शारैम के मार्ग में और गत और एक्रोन तक गिरते गए।

**1 Samuel 17:53**

<sup>53</sup> तब इस्राएली पलिश्तियों का पीछा छोड़कर लौट आए, और उनके डेरों को लूट लिया।

**1 Samuel 17:54**

<sup>54</sup> और दाऊद पलिश्ती का सिर यरूशलेम में ले गया; और उसके हथियार अपने डेरे में रख लिए।

**1 Samuel 17:55**

<sup>55</sup> जब शाऊल ने दाऊद को उस पलिश्ती का सामना करने के लिये जाते देखा, तब उसने अपने सेनापति अब्बेर से पूछा, “हे अब्बेर, वह जवान किसका पुत्र है?” अब्बेर ने कहा, “हे राजा, तेरे जीवन की शपथ, मैं नहीं जानता।”

**1 Samuel 17:56**

<sup>56</sup> राजा ने कहा, “तू पूछ ले कि वह जवान किसका पुत्र है।”

**1 Samuel 17:57**

<sup>57</sup> जब दाऊद पलिश्ती को मारकर लौटा, तब अब्बेर ने उसे पलिश्ती का सिर हाथ में लिए हुए शाऊल के सामने पहुँचाया।

**1 Samuel 17:58**

<sup>58</sup> शाऊल ने उससे पूछा, “हे जवान, तू किसका पुत्र है?” दाऊद ने कहा, “मैं तो तेरे दास बैतलहमवासी यिशै का पुत्र हूँ।”

**1 Samuel 18:1**

<sup>1</sup> जब वह शाऊल से बातें कर चुका, तब योनातान का मन दाऊद पर ऐसा लग गया, कि योनातान उसे अपने प्राण के समान प्यार करने लगा।

**1 Samuel 18:2**

<sup>2</sup> और उस दिन शाऊल ने उसे अपने पास रखा, और पिता के घर लौटने न दिया।

**1 Samuel 18:3**

<sup>3</sup> तब योनातान ने दाऊद से वाचा बाँधी, क्योंकि वह उसको अपने प्राण के समान प्यार करता था।

**1 Samuel 18:4**

<sup>4</sup> योनातान ने अपना बागा जो वह स्वयं पहने था उतारकर अपने वस्त्र समेत दाऊद को दे दिया, वरन् अपनी तलवार और धनुष और कमरबन्ध भी उसको दे दिए।

**1 Samuel 18:5**

<sup>5</sup> और जहाँ कहीं शाऊल दाऊद को भेजता था वहाँ वह जाकर बुद्धिमानी के साथ काम करता था; अतः शाऊल ने उसे योद्धाओं का प्रधान नियुक्त किया। और समस्त प्रजा के लोग और शाऊल के कर्मचारी उससे प्रसन्न थे।

**1 Samuel 18:6**

<sup>6</sup> जब दाऊद उस पलिश्ती को मारकर लौट रहा था, और वे सब लोग भी आ रहे थे, तब सब इस्माएली नगरों से स्त्रियों ने निकलकर डफ और तिकोने बाजे लिए हुए, आनन्द के साथ गाती और नाचती हुई, शाऊल राजा के स्वागत में निकलीं।

**1 Samuel 18:7**

<sup>7</sup> और वे स्त्रियाँ नाचती हुई एक दूसरे के साथ यह गाती गईं “शाऊल ने तो हजारों को, परन्तु दाऊद ने लाखों को मारा है।”

**1 Samuel 18:8**

<sup>8</sup> तब शाऊल अति क्रोधित हुआ, और यह बात उसको बुरी लगी; और वह कहने लगा, “उन्होंने दाऊद के लिये तो लाखों और मेरे लिये हजारों ही ठहराया; इसलिए अब राज्य को छोड़ उसको अब क्या मिलना बाकी है?”

**1 Samuel 18:9**

<sup>9</sup> उस दिन से शाऊल दाऊद की ताक में लगा रहा।

**1 Samuel 18:10**

<sup>10</sup> दूसरे दिन परमेश्वर की ओर से एक दुष्ट आत्मा शाऊल पर बल से उतरा, और वह अपने घर के भीतर नबूवत करने लगा; दाऊद प्रतिदिन के समान अपने हाथ से बजा रहा था और शाऊल अपने हाथ में अपना भाला लिए हुए था;

**1 Samuel 18:11**

<sup>11</sup> तब शाऊल ने यह सोचकर कि “मैं ऐसा मारूँगा कि भाला दाऊद को बेधकर दीवार में धँस जाए,” भाले को चलाया, परन्तु दाऊद उसके सामने से दोनों बार हट गया।

**1 Samuel 18:12**

<sup>12</sup> शाऊल दाऊद से डरा करता था, क्योंकि यहोवा दाऊद के साथ था और शाऊल के पास से अलग हो गया था।

**1 Samuel 18:13**

<sup>13</sup> शाऊल ने उसको अपने पास से अलग करके सहस्रपति किया, और वह प्रजा के सामने आया-जाया करता था।

**1 Samuel 18:14**

<sup>14</sup> और दाऊद अपनी समस्त चाल में बुद्धिमानी दिखाता था; और यहोवा उसके साथ-साथ था।

**1 Samuel 18:15**

<sup>15</sup> जब शाऊल ने देखा कि वह बहुत बुद्धिमान है, तब वह उससे डर गया।

**1 Samuel 18:16**

<sup>16</sup> परन्तु इस्माएल और यहूदा के समस्त लोग दाऊद से प्रेम रखते थे; क्योंकि वह उनके आगे-आगे आया-जाया करता था।

**1 Samuel 18:17**

<sup>17</sup> शाऊल ने यह सोचकर कि “मेरा हाथ नहीं, वरन् पलिश्तियों ही का हाथ दाऊद पर पड़े,” उससे कहा, “सुन, मैं अपनी बड़ी बेटी मेरब से तेरा विवाह कर दूँगा; इतना कर, कि तू मेरे लिये वीरता के साथ यहोवा की ओर से युद्ध कर।”

**1 Samuel 18:18**

<sup>18</sup> दाऊद ने शाऊल से कहा, “मैं क्या हूँ, और मेरा जीवन क्या है, और इसाएल में मेरे पिता का कुल क्या है, कि मैं राजा का दामाद हो जाऊँ?”

**1 Samuel 18:19**

<sup>19</sup> जब समय आ गया कि शाऊल की बेटी मेरब का दाऊद से विवाह किया जाए, तब वह महोलाई अद्रीएल से व्याह दी गई।

**1 Samuel 18:20**

<sup>20</sup> और शाऊल की बेटी मीकल दाऊद से प्रीति रखने लगी; और जब इस बात का समाचार शाऊल को मिला, तब वह प्रसन्न हुआ।

**1 Samuel 18:21**

<sup>21</sup> शाऊल तो सोचता था, कि वह उसके लिये फंदा हो, और पलिश्तियों का हाथ उस पर पड़े। और शाऊल ने दाऊद से कहा, “अब की बार तो तू अवश्य ही मेरा दामाद हो जाएगा।”

**1 Samuel 18:22**

<sup>22</sup> फिर शाऊल ने अपने कर्मचारियों को आज्ञा दी, “दाऊद से छिपकर ऐसी बातें करो, ‘सुन, राजा तुझ से प्रसन्न है, और उसके सब कर्मचारी भी तुझ से प्रेम रखते हैं; इसलिए अब तू राजा का दामाद हो जा।’”

**1 Samuel 18:23**

<sup>23</sup> तब शाऊल के कर्मचारियों ने दाऊद से ऐसी ही बातें कहीं। परन्तु दाऊद ने कहा, “मैं तो निर्धन और तुच्छ मनुष्य हूँ, फिर क्या तुम्हारी दृष्टि में राजा का दामाद होना छोटी बात है?”

**1 Samuel 18:24**

<sup>24</sup> जब शाऊल के कर्मचारियों ने उसे बताया, कि दाऊद ने ऐसी-ऐसी बातें कहीं।

**1 Samuel 18:25**

<sup>25</sup> तब शाऊल ने कहा, “तुम दाऊद से यह कहो, ‘राजा कन्या का मोल तो कुछ नहीं चाहता, केवल पलिश्तियों की एक सौ खलड़ियाँ चाहता है, कि वह अपने शत्रुओं से बदला ले।’” शाऊल की योजना यह थी, कि पलिश्तियों से दाऊद को मरवा डाले।

**1 Samuel 18:26**

<sup>26</sup> जब उसके कर्मचारियों ने दाऊद को ये बातें बताई, तब वह राजा का दामाद होने को प्रसन्न हुआ। जब विवाह के कुछ दिन रह गए,

**1 Samuel 18:27**

<sup>27</sup> तब दाऊद अपने जनों को संग लेकर चला, और पलिश्तियों के दो सौ पुरुषों को मारा; तब दाऊद उनकी खलड़ियों को ले आया, और वे राजा को गिन-गिनकर दी गई, इसलिए कि वह राजा का दामाद हो जाए। अतः शाऊल ने अपनी बेटी मीकल का उससे विवाह कर दिया।

**1 Samuel 18:28**

<sup>28</sup> जब शाऊल ने देखा, और निश्चय किया कि यहोवा दाऊद के साथ है, और मेरी बेटी मीकल उससे प्रेम रखती है,

**1 Samuel 18:29**

<sup>29</sup> तब शाऊल दाऊद से और भी डर गया। इसलिए शाऊल सदा के लिये दाऊद का बैरी बन गया।

**1 Samuel 18:30**

<sup>30</sup> फिर पलिश्तियों के प्रधान निकल आए, और जब जब वे निकल आए तब-तब दाऊद ने शाऊल के सब कर्मचारियों से अधिक बुद्धिमानी दिखाई; इससे उसका नाम बहुत बड़ा हो गया।

**1 Samuel 19:1**

<sup>1</sup> शाऊल ने अपने पुत्र योनातान और अपने सब कर्मचारियों से दाऊद को मार डालने की चर्चा की। परन्तु शाऊल का पुत्र योनातान दाऊद से बहुत प्रसन्न था।

**1 Samuel 19:2**

<sup>2</sup> योनातान ने दाऊद को बताया, “मेरा पिता तुझे मरवा डालना चाहता है; इसलिए तू सवेरे सावधान रहना, और किसी गुप्त स्थान में बैठा हुआ छिपा रहना;

**1 Samuel 19:3**

<sup>3</sup> और मैं मैदान में जहाँ तू होगा वहाँ जाकर अपने पिता के पास खड़ा होकर उससे तेरी चर्चा करूँगा; और यदि मुझे कुछ मालूम हो तो तुझे बताऊँगा।”

**1 Samuel 19:4**

<sup>4</sup> योनातान ने अपने पिता शाऊल से दाऊद की प्रशंसा करके उससे कहा, “हे राजा, अपने दास दाऊद का अपराधी न हो; क्योंकि उसने तेरे विरुद्ध कोई अपराध नहीं किया, वरन् उसके सब काम तेरे बहुत हित के हैं;

**1 Samuel 19:5**

<sup>5</sup> उसने अपने प्राण पर खेलकर उस पलिश्ती को मार डाला, और यहोवा ने समस्त इसाएलियों की बड़ी जय कराई। इसे देखकर तू आनन्दित हुआ था; और तू दाऊद को अकारण मारकर निर्दोष के खून का पापी क्यों बने?”

**1 Samuel 19:6**

<sup>6</sup> तब शाऊल ने योनातान की बात मानकर यह शपथ खाई, “यहोवा के जीवन की शपथ, दाऊद मार डाला न जाएगा।”

**1 Samuel 19:7**

<sup>7</sup> तब योनातान ने दाऊद को बुलाकर ये समस्त बातें उसको बताई। फिर योनातान दाऊद को शाऊल के पास ले गया, और वह पहले की समान उसके सामने रहने लगा।

**1 Samuel 19:8**

<sup>8</sup> तब लड़ाई फिर होने लगी; और दाऊद जाकर पलिश्तियों से लड़ा, और उन्हें बड़ी मार से मारा, और वे उसके सामने से भाग गए।

**1 Samuel 19:9**

<sup>9</sup> जब शाऊल हाथ में भाला लिए हुए घर में बैठा था; और दाऊद हाथ से वीणा बजा रहा था, तब यहोवा की ओर से एक दुष्ट आत्मा शाऊल पर चढ़ा।

**1 Samuel 19:10**

<sup>10</sup> शाऊल ने चाहा, कि दाऊद को ऐसा मारे कि भाला उसे बेधते हुए दीवार में धँस जाए; परन्तु दाऊद शाऊल के सामने से ऐसा हट गया कि भाला जाकर दीवार ही में धँस गया। और दाऊद भागा, और उस रात को बच गया।

**1 Samuel 19:11**

<sup>11</sup> तब शाऊल ने दाऊद के घर पर दूत इसलिए भेजे कि वे उसकी घात में रहें, और सवेरे उसे मार डालें, तब दाऊद की स्त्री मीकल ने उसे यह कहकर जताया, “यदि तू इस रात को अपना प्राण न बचाए, तो सवेरे मारा जाएगा।”

**1 Samuel 19:12**

<sup>12</sup> तब मीकल ने दाऊद को खिड़की से उतार दिया; और वह भागकर बच निकला।

**1 Samuel 19:13**

<sup>13</sup> तब मीकल ने गृहदेवताओं को ले चारपाई पर लिटाया, और बकरियों के रोए की तकिया उसके सिरहाने पर रखकर उनको वस्त्र ओढ़ा दिए।

**1 Samuel 19:14**

<sup>14</sup> जब शाऊल ने दाऊद को पकड़ लाने के लिये दूत भेजे, तब वह बोली, “वह तो बीमार है।”

**1 Samuel 19:15**

<sup>15</sup> तब शाऊल ने दूतों को दाऊद के देखने के लिये भेजा, और कहा, “उसे चारपाई समेत मेरे पास लाओ कि मैं उसे मार डालूँ।”

**1 Samuel 19:16**

<sup>16</sup> जब दूत भीतर गए, तब क्या देखते हैं कि चारपाई पर गृहदेवता पड़े हैं, और सिरहाने पर बकरियों के रोए की तकिया है।

**1 Samuel 19:17**

<sup>17</sup> अतः शाऊल ने मीकल से कहा, “तूने मुझे ऐसा धोखा क्यों दिया? तूने मेरे शत्रु को ऐसे क्यों जाने दिया कि वह बच निकला है?” मीकल ने शाऊल से कहा, “उसने मुझसे कहा, ‘मुझे जाने दे; मैं तुझे क्यों मार डालूँ।’”

**1 Samuel 19:18**

<sup>18</sup> दाऊद भागकर बच निकला, और रामाह में शमूएल के पास पहुँचकर जो कुछ शाऊल ने उससे किया था सब उसे कह सुनाया। तब वह और शमूएल जाकर नबायोत में रहने लगे।

**1 Samuel 19:19**

<sup>19</sup> जब शाऊल को इसका समाचार मिला कि दाऊद रामाह में के नबायोत में है,

**1 Samuel 19:20**

<sup>20</sup> तब शाऊल ने दाऊद को पकड़ लाने के लिये दूत भेजे; और जब शाऊल के दूतों ने नबियों के दल को नबूवत करते हुए, और शमूएल को उनकी प्रधानता करते हुए देखा, तब परमेश्वर का आत्मा उन पर चढ़ा, और वे भी नबूवत करने लगे।

**1 Samuel 19:21**

<sup>21</sup> इसका समाचार पाकर शाऊल ने और दूत भेजे, और वे भी नबूवत करने लगे। फिर शाऊल ने तीसरी बार दूत भेजे, और वे भी नबूवत करने लगे।

**1 Samuel 19:22**

<sup>22</sup> तब वह आप ही रामाह को चला, और उस बड़े गड्ढे पर जो सेकू में है पहुँचकर पूछने लगा, “शमूएल और दाऊद कहाँ हैं?” किसी ने कहा, “वे तो रामाह के नबायोत में हैं।”

**1 Samuel 19:23**

<sup>23</sup> तब वह उधर, अर्थात् रामाह के नबायोत को चला; और परमेश्वर का आत्मा उस पर भी चढ़ा, और वह रामाह के नबायोत को पहुँचने तक नबूवत करता हुआ चला गया।

**1 Samuel 19:24**

<sup>24</sup> और उसने भी अपने वस्त्र उतारे, और शमूएल के सामने नबूवत करने लगा, और भूमि पर गिरकर दिन और रात नंगा पड़ा रहा। इस कारण से यह कहावत चली, “क्या शाऊल भी नबियों में से है?”

**1 Samuel 20:1**

<sup>1</sup> फिर दाऊद रामाह के नबायोत से भागा, और योनातान के पास जाकर कहने लगा, “मैंने क्या किया है? मुझसे क्या पाप हुआ? मैंने तेरे पिता की दृष्टि में ऐसा कौन सा अपराध किया है, कि वह मेरे प्राण की खोज में रहता है?”

**1 Samuel 20:2**

<sup>2</sup> उसने उससे कहा, “ऐसी बात नहीं है; तू मारा न जाएगा। सुन, मेरा पिता मुझ को बिना बताए न तो कोई बड़ा काम करता है और न कोई छोटा; फिर वह ऐसी बात को मुझसे क्यों छिपाएगा? ऐसी कोई बात नहीं है।”

**1 Samuel 20:3**

<sup>3</sup> फिर दाऊद ने शपथ खाकर कहा, “तेरा पिता निश्चय जानता है कि तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर है; और वह सोचता होगा, कि योनातान इस बात को न जानने पाए, ऐसा न हो कि वह खेदित हो जाए। परन्तु यहोवा के जीवन की शपथ और तेरे जीवन की शपथ, निःसन्देह, मेरे और मृत्यु के बीच डग ही भर का अन्तर है।”

**1 Samuel 20:4**

<sup>4</sup> योनातान ने दाऊद से कहा, “जो कुछ तेरा जी चाहे वही मैं तेरे लिये करूँगा।”

**1 Samuel 20:5**

<sup>5</sup> दाऊद ने योनातान से कहा, “सुन कल नया चाँद होगा, और मुझे उचित है कि राजा के साथ बैठकर भोजन करूँ; परन्तु तू मुझे विदा कर, और मैं परसों साँझ तक मैदान में छिपा रहूँगा।

**1 Samuel 20:6**

<sup>6</sup> यदि तेरा पिता मेरी कुछ चिन्ता करे, तो कहना, ‘दाऊद ने अपने नगर बैतलहम को शीघ्र जाने के लिये मुझसे विनती करके छुट्टी माँगी है; क्योंकि वहाँ उसके समस्त कुल के लिये वार्षिक यज्ञ है।’

**1 Samuel 20:7**

<sup>7</sup> यदि वह यह कहे, ‘अच्छा!’ तब तो तेरे दास के लिये कुशल होगा; परन्तु यदि उसका क्रोध बहुत भड़क उठे, तो जान लेना कि उसने बुराई ठानी है।

**1 Samuel 20:8**

<sup>8</sup> और तू अपने दास से कृपा का व्यवहार करना, क्योंकि तूने यहोवा की शपथ खिलाकर अपने दास को अपने साथ वाचा बँधाई है। परन्तु यदि मुझसे कुछ अपराध हुआ हो, तो तू आप मुझे मार डाल; तू मुझे अपने पिता के पास क्यों पहुँचाए?”

**1 Samuel 20:9**

<sup>9</sup> योनातान ने कहा, “ऐसी बात कभी न होगी! यदि मैं निश्चय जानता कि मेरे पिता ने तुझ से बुराई करनी ठानी है, तो क्या मैं तुझको न बताता?”

**1 Samuel 20:10**

<sup>10</sup> दाऊद ने योनातान से कहा, “यदि तेरा पिता तुझको कठोर उत्तर दे, तो कौन मुझे बताएगा?”

**1 Samuel 20:11**

<sup>11</sup> योनातान ने दाऊद से कहा, “चल हम मैदान को निकल जाएँ!” और वे दोनों मैदान की ओर चले गए।

**1 Samuel 20:12**

<sup>12</sup> तब योनातान दाऊद से कहने लगा, “इसाएल के परमेश्वर यहोवा की शपथ, जब मैं कल या परसों इसी समय अपने पिता का भेद पाऊँ, तब यदि दाऊद की भलाई देखूँ तो क्या मैं उसी समय तेरे पास दूत भेजकर तुझे न बताऊँगा?

**1 Samuel 20:13**

<sup>13</sup> यदि मेरे पिता का मन तेरी बुराई करने का हो, और मैं तुझ पर यह प्रगट करके तुझे विदा न करूँ कि तू कुशल के साथ चला जाए, तो यहोवा योनातान से ऐसा ही वरन् इससे भी अधिक करे। यहोवा तेरे साथ वैसा ही रहे जैसा वह मेरे पिता के साथ रहा।

**1 Samuel 20:14**

<sup>14</sup> और न केवल जब तक मैं जीवित रहूँ, तब तक मुझ पर यहोवा की सी कृपा ऐसे करना, कि मैं न मरूँ;

**1 Samuel 20:15**

<sup>15</sup> परन्तु मेरे घराने पर से भी अपनी कृपादृष्टि कभी न हटाना! वरन् जब यहोवा दाऊद के हर एक शत्रु को पृथ्वी पर से नष्ट कर चुकेगा, तब भी ऐसा न करना।”

**1 Samuel 20:16**

<sup>16</sup> इस प्रकार योनातान ने दाऊद के घराने से यह कहकर वाचा बँधाई, “यहोवा दाऊद के शत्रुओं से बदला ले।”

**1 Samuel 20:17**

<sup>17</sup> और योनातान दाऊद से प्रेम रखता था, और उसने उसको फिर शपथ खिलाई; क्योंकि वह उससे अपने प्राण के बराबर प्रेम रखता था।

**1 Samuel 20:18**

<sup>18</sup> तब योनातान ने उससे कहा, “कल नया चाँद होगा; और तेरी चिन्ता की जाएगी, क्योंकि तेरी कुर्सी खाली रहेगी।

**1 Samuel 20:19**

<sup>19</sup> और तू तीन दिन के बीतने पर तुरन्त आना, और उस स्थान पर जाकर जहाँ तू उस काम के दिन छिपा था, अर्थात् एजेल नामक पथर के पास रहना।

**1 Samuel 20:20**

<sup>20</sup> तब मैं उसकी ओर, मानो अपने किसी ठहराए हुए चिन्ह पर तीन तीर चलाऊँगा।

**1 Samuel 20:21**

<sup>21</sup> फिर मैं अपने टहलुए लड़के को यह कहकर भेजूँगा, कि जाकर तीरों को ढूँढ़ ले आ। यदि मैं उस लड़के से साफ-साफ कहूँ, ‘देख, तीर इधर तेरे इस ओर हैं;’ तू उसे ले आ, तो तू आ जाना क्योंकि यहोवा के जीवन की शापथ, तेरे लिये कुशल को छोड़ और कुछ न होगा।

**1 Samuel 20:22**

<sup>22</sup> परन्तु यदि मैं लड़के से यह कहूँ, ‘सुन, तीर उधर तेरे उस ओर हैं,’ तो तू चले जाना, क्योंकि यहोवा ने तुझे विदा किया है।

**1 Samuel 20:23**

<sup>23</sup> और उस बात के विषय जिसकी चर्चा मैंने और तूने आपस में की है, यहोवा मेरे और तेरे मध्य में सदा रहे।”

**1 Samuel 20:24**

<sup>24</sup> इसलिए दाऊद मैदान में जा छिपा; और जब नया चाँद हुआ, तब राजा भोजन करने को बैठा।

**1 Samuel 20:25**

<sup>25</sup> राजा तो पहले के समान अपने उस आसन पर बैठा जो दीवार के पास था; और योनातान खड़ा हुआ, और अब्रेर शाऊल के निकट बैठा, परन्तु दाऊद का स्थान खाली रहा।

**1 Samuel 20:26**

<sup>26</sup> उस दिन तो शाऊल यह सोचकर चूप रहा, कि इसका कोई न कोई कारण होगा; वह अशुद्ध होगा, निःसन्देह शुद्ध न होगा।

**1 Samuel 20:27**

<sup>27</sup> फिर नये चाँद के दूसरे दिन को दाऊद का स्थान खाली रहा। अतः शाऊल ने अपने पुत्र योनातान से पूछा, “क्या कारण है कि पिशै का पुत्र न तो कल भोजन पर आया था, और न आज ही आया है?”

**1 Samuel 20:28**

<sup>28</sup> योनातान ने शाऊल से कहा, “दाऊद ने बैतलहम जाने के लिये मुझसे विनती करके छुट्टी माँगी;

**1 Samuel 20:29**

<sup>29</sup> और कहा, ‘मुझे जाने दे; क्योंकि उस नगर में हमारे कुल का यज्ञ है, और मेरे भाई ने मुझ को वहाँ उपस्थित होने की आज्ञा दी है। और अब यदि मुझ पर तेरे अनुग्रह की वृष्टि हो, तो मुझे जाने दे कि मैं अपने भाइयों से भेंट कर आऊँ।’ इसी कारण वह राजा की मेज पर नहीं आया।”

**1 Samuel 20:30**

<sup>30</sup> तब शाऊल का कोप योनातान पर भड़क उठा, और उसने उससे कहा, “हे कुटिला राजद्रोही के पुत्र, क्या मैं नहीं जानता कि तेरा मन तो पिशै के पुत्र पर लगा है? इसी से तेरी आशा का टूटना और तेरी माता का अनादर ही होगा।

**1 Samuel 20:31**

<sup>31</sup> क्योंकि जब तक पिशै का पुत्र भूमि पर जीवित रहेगा, तब तक न तो तू और न तेरा राज्य स्थिर रहेगा। इसलिए अभी भेजकर उसे मेरे पास ला, क्योंकि निश्चय वह मार डाला जाएगा।”

**1 Samuel 20:32**

<sup>32</sup> योनातान ने अपने पिता शाऊल को उत्तर देकर उससे कहा, “वह क्यों मारा जाए? उसने क्या किया है?”

**1 Samuel 20:33**

<sup>33</sup> तब शाऊल ने उसको मारने के लिये उस पर भाला चलाया; इससे योनातान ने जान लिया, कि मेरे पिता ने दाऊद को मार डालना ठान लिया है।

**1 Samuel 20:34**

<sup>34</sup> तब योनातान क्रोध से जलता हुआ मेज पर से उठ गया, और महीने के दूसरे दिन को भोजन न किया, क्योंकि वह बहुत खेदित था, इसलिए कि उसके पिता ने दाऊद का अनादर किया था।

**1 Samuel 20:35**

<sup>35</sup> सवेरे को योनातान एक छोटा लड़का संग लिए हुए मैदान में दाऊद के साथ ठहराए हुए स्थान को गया।

**1 Samuel 20:36**

<sup>36</sup> तब उसने अपने लड़के से कहा, “दौड़कर जो-जो तीर मैं चलाऊँ उन्हें ढूँढ़ ले आ।” लड़का दौड़ ही रहा था, कि उसने एक तीर उसके परे चलाया।

**1 Samuel 20:37**

<sup>37</sup> जब लड़का योनातान के चलाए तीर के स्थान पर पहुँचा, तब योनातान ने उसके पीछे से पुकारकर कहा, “तीर तो तेरी उस ओर है।”

**1 Samuel 20:38**

<sup>38</sup> फिर योनातान ने लड़के के पीछे से पुकारकर कहा, “फुर्ती कर, ठहर मत।” और योनातान का लड़का तीरों को बटोरके अपने स्वामी के पास ले आया।

**1 Samuel 20:39**

<sup>39</sup> इसका भेद लड़का तो कुछ न जानता था; केवल योनातान और दाऊद इस बात को जानते थे।

**1 Samuel 20:40**

<sup>40</sup> योनातान ने अपने हथियार उस लड़के को देकर कहा, “जा, इन्हें नगर को पहुँचा।”

**1 Samuel 20:41**

<sup>41</sup> जैसे ही लड़का गया, वैसे ही दाऊद दक्षिण दिशा की ओर से निकला, और भूमि पर औंधे मुँह गिरकर तीन बार दण्डवत् की; तब उन्होंने एक दूसरे को चूमा, और एक दूसरे के साथ रोए, परन्तु दाऊद का रोना अधिक था।

**1 Samuel 20:42**

<sup>42</sup> तब योनातान ने दाऊद से कहा, “कुशल से चला जा; क्योंकि हम दोनों ने एक दूसरे से यह कहकर यहोवा के नाम की शपथ खाई है, कि यहोवा मेरे और तेरे मध्य, और मेरे और तेरे वंश के मध्य में सदा रहे।” तब वह उठकर चला गया; और योनातान नगर में गया।

**1 Samuel 21:1**

<sup>1</sup> तब दाऊद नोब को गया और अहीमेलेक याजक के पास आया; और अहीमेलेक दाऊद से भेंट करने को धरथराता हुआ निकला, और उससे पूछा, “क्या कारण है कि तू अकेला हुआ, और तेरे साथ कोई नहीं?”

**1 Samuel 21:2**

<sup>2</sup> दाऊद ने अहीमेलेक याजक से कहा, “राजा ने मुझे एक काम करने की आज्ञा देकर मुझसे कहा, ‘जिस काम को मैं तुझे भेजता हूँ, और जो आज्ञा मैं तुझे देता हूँ, वह किसी पर प्रगट न होने पाए;’ और मैंने जवानों को फलाने स्थान पर जाने को समझाया है।

**1 Samuel 21:3**

<sup>3</sup> अब तेरे हाथ में क्या है? पाँच रोटी, या जो कुछ मिले उसे मेरे हाथ में दे।”

**1 Samuel 21:4**

<sup>4</sup> याजक ने दाऊद से कहा, “मेरे पास साधारण रोटी तो नहीं है, केवल पवित्र रोटी है; इतना हो कि वे जवान स्त्रियों से अलग रहे हों।”

**1 Samuel 21:5**

<sup>5</sup> दाऊद ने याजक को उत्तर देकर उससे कहा, “सच है कि हम तीन दिन से स्त्रियों से अलग हैं; फिर जब मैं निकल आता हूँ, तब जवानों के बर्तन पवित्र होते हैं; यद्यपि यात्रा साधारण होती है, तो आज उनके बर्तन अवश्य ही पवित्र होंगे।”

**1 Samuel 21:6**

<sup>6</sup> तब याजक ने उसको पवित्र रोटी दी; क्योंकि दूसरी रोटी वहाँ न थी, केवल भेंट की रोटी थी जो यहोवा के सम्मुख से उठाई गई थी, कि उसके उठा लेने के दिन गरम रोटी रखी जाए।

**1 Samuel 21:7**

<sup>7</sup> उसी दिन वहाँ दोएग नामक शाऊल का एक कर्मचारी यहोवा के आगे रुका हुआ था; वह एदोमी और शाऊल के चरवाहों का मुखिया था।

**1 Samuel 21:8**

<sup>8</sup> फिर दाऊद ने अहीमेलेक से पूछा, “क्या यहाँ तेरे पास कोई भाला या तलवार नहीं है? क्योंकि मुझे राजा के काम की ऐसी जलदी थी कि मैं न तो तलवार साथ लाया हूँ, और न अपना कोई हथियार ही लाया।”

**1 Samuel 21:9**

<sup>9</sup> याजक ने कहा, “हाँ, पलिश्ती गोलियत जिसे तूने एला तराई में घात किया, उसकी तलवार कपड़े में लपेटी हुई एपोद के पीछे रखी है; यदि तू उसे लेना चाहे, तो ले ले, उसे छोड़ और कोई यहाँ नहीं है।” दाऊद बोला, “उसके तुल्य कोई नहीं; वही मुझे दे।”

**1 Samuel 21:10**

<sup>10</sup> तब दाऊद चला, और उसी दिन शाऊल के डर के मारे भागकर गत के राजा आकीश के पास गया।

**1 Samuel 21:11**

<sup>11</sup> और आकीश के कर्मचारियों ने आकीश से कहा, “क्या वह उस देश का राजा दाऊद नहीं है? क्या लोगों ने उसी के विषय नाचते-नाचते एक दूसरे के साथ यह गाना न गया था, ‘शाऊल ने हजारों को, और दाऊद ने लाखों को मारा है?’”

**1 Samuel 21:12**

<sup>12</sup> दाऊद ने ये बातें अपने मन में रखीं, और गत के राजा आकीश से अत्यन्त डर गया।

**1 Samuel 21:13**

<sup>13</sup> तब उसने उनके सामने दूसरी चाल चली, और उनके हाथ में पड़कर पागल सा, बन गया; और फाटक के किवाड़ों पर लकीरें खींचने, और अपनी लार अपनी दाढ़ी पर बहाने लगा।

**1 Samuel 21:14**

<sup>14</sup> तब आकीश ने अपने कर्मचारियों से कहा, “देखो, वह जन तो बावला है, तुम उसे मेरे पास क्यों लाए हो?

**1 Samuel 21:15**

<sup>15</sup> क्या मेरे पास बावलों की कुछ घटी है, कि तुम उसको मेरे सामने बावलापन करने के लिये लाए हो? क्या ऐसा जन मेरे भवन में आने पाएगा?”

**1 Samuel 22:1**

<sup>1</sup> दाऊद वहाँ से चला, और बचकर अदुल्लाम की गुफा में पहुँच गया; यह सुनकर उसके भाई, वरन् उसके पिता का समस्त घराना वहाँ उसके पास गया।

**1 Samuel 22:2**

<sup>2</sup> और जितने संकट में पड़े थे, और जितने ऋणी थे, और जितने उदास थे, वे सब उसके पास इकट्ठे हुए; और वह उनका प्रधान हुआ। और कोई चार सौ पुरुष उसके साथ हो गए।

**1 Samuel 22:3**

<sup>3</sup> वहाँ से दाऊद ने मोआब के मिस्पे को जाकर मोआब के राजा से कहा, “मेरे पिता को अपने पास तब तक आकर रहने दो, जब तक कि मैं न जानूं कि परमेश्वर मेरे लिये क्या करेगा।”

**1 Samuel 22:4**

<sup>4</sup> और वह उनको मोआब के राजा के सम्मुख ले गया, और जब तक दाऊद उस गढ़ में रहा, तब तक वे उसके पास रहे।

**1 Samuel 22:5**

<sup>5</sup> फिर गाद नामक एक नबी ने दाऊद से कहा, “इस गढ़ में मत रह; चल, यहूदा के देश में जा।” और दाऊद चलकर हेरेत के जंगल में गया।

**1 Samuel 22:6**

<sup>6</sup> तब शाऊल ने सुना कि दाऊद और उसके संगियों का पता लग गया हैं उस समय शाऊल गिबा के ऊँचे स्थान पर, एक झाऊ के पेड़ के नीचे, हाथ में अपना भाला लिए हुए बैठा था, और उसके सब कर्मचारी उसके आस-पास खड़े थे।

**1 Samuel 22:7**

<sup>7</sup> तब शाऊल अपने कर्मचारियों से जो उसके आस-पास खड़े थे कहने लगा, ‘हे बिन्यामीनियों, सुनो; क्या यिशै का पुत्र तुम सभी को खेत और दाख की बारियाँ देगा? क्या वह तुम सभी को सहस्रपति और शतपति करेगा?’

**1 Samuel 22:8**

<sup>8</sup> तुम सभी ने मेरे विरुद्ध क्यों राजद्रोह की गोष्ठी की है? और जब मेरे पुत्र ने यिशै के पुत्र से वाचा बाँधी, तब किसी ने मुझ पर प्रगट नहीं किया; और तुम मैं से किसी ने मेरे लिये शोकित होकर मुझ पर प्रगट नहीं किया, कि मेरे पुत्र ने मेरे कर्मचारी

को मेरे विरुद्ध ऐसा घात लगाने को उभारा है, जैसा आज के दिन है।”

**1 Samuel 22:9**

<sup>9</sup> तब एदोमी दोएग ने, जो शाऊल के सेवकों के ऊपर ठहराया गया था, उत्तर देकर कहा, “मैंने तो यिशै के पुत्र को नोब में अहीतूब के पुत्र अहीमेलेक के पास आते देखा,

**1 Samuel 22:10**

<sup>10</sup> और उसने उसके लिये यहोवा से पूछा, और उसे भोजनवस्तु दी, और पलिश्ती गोलियत की तलवार भी दी।”

**1 Samuel 22:11**

<sup>11</sup> और राजा ने अहीतूब के पुत्र अहीमेलेक याजक को और उसके पिता के समस्त घराने को, अर्थात् नोब में रहनेवाले याजकों को बुलवा भेजा; और जब वे सब के सब शाऊल राजा के पास आए,

**1 Samuel 22:12**

<sup>12</sup> तब शाऊल ने कहा, “हे अहीतूब के पुत्र, सुन,” वह बोला, “हे प्रभु, क्या आज्ञा?”

**1 Samuel 22:13**

<sup>13</sup> शाऊल ने उससे पूछा, “क्या कारण है कि तू और यिशै के पुत्र दोनों ने मेरे विरुद्ध राजद्रोह की गोष्ठी की है? तूने उसे रोटी और तलवार दी, और उसके लिये परमेश्वर से पूछा भी, जिससे वह मेरे विरुद्ध उठे, और ऐसा घात लगाए जैसा आज के दिन है?”

**1 Samuel 22:14**

<sup>14</sup> अहीमेलेक ने राजा को उत्तर देकर कहा, तेरे समस्त कर्मचारियों में दाऊद के तुल्य विश्वासयोग्य कौन है? वह तो राजा का दामाद है, और तेरी राजसभा में उपस्थित हुआ करता, और तेरे परिवार में प्रतिष्ठित है।

**1 Samuel 22:15**

<sup>15</sup> क्या मैंने आज ही उसके लिये परमेश्वर से पूछना आरम्भ किया है? वह मुझसे दूर रहे! राजा न तो अपने दास पर ऐसा कोई दोष लगाए, न मेरे पिता के समस्त घराने पर, क्योंकि तेरा दास इन सब बातों के विषय कुछ भी नहीं जानता।"

**1 Samuel 22:16**

<sup>16</sup> राजा ने कहा, "हे अहीमेलेक, तू और तेरे पिता का समस्त घराना निश्चय मार डाला जाएगा।"

**1 Samuel 22:17**

<sup>17</sup> फिर राजा ने उन पहरुओं से जो उसके आस-पास खड़े थे आज्ञा दी, "मुझे और यहोवा के याजकों को मार डालो; क्योंकि उन्होंने भी दाऊद की सहायता की है, और उसका भागना जानने पर भी मुझ पर प्रगट नहीं किया।" परन्तु राजा के सेवक यहोवा के याजकों को मारने के लिये हाथ बढ़ाना न चाहते थे।

**1 Samuel 22:18**

<sup>18</sup> तब राजा ने दोएग से कहा, "तू मुड़कर याजकों को मार डाल।" तब एदोमी दोएग ने मुड़कर याजकों को मारा, और उस दिन सनीवाला एपोद पहने हुए पचासी पुरुषों को घात किया।

**1 Samuel 22:19**

<sup>19</sup> और याजकों के नगर नोब को उसने स्लियों-पुरुषों, और बाल-बच्चों, और दूधपीतों, और बैलों, गदहों, और भेड़-बकरियों समेत तलवार से मारा।

**1 Samuel 22:20**

<sup>20</sup> परन्तु अहीतूब के पुत्र अहीमेलेक का एव्यातार नामक एक पुत्र बच निकला, और दाऊद के पास भाग गया।

**1 Samuel 22:21**

<sup>21</sup> तब एव्यातार ने दाऊद को बताया, कि शाऊल ने यहोवा के याजकों का वध किया है।

**1 Samuel 22:22**

<sup>22</sup> और दाऊद ने एव्यातार से कहा, "जिस दिन एदोमी दोएग वहाँ था, उसी दिन मैंने जान लिया था, कि वह निश्चय शाऊल को बताएगा। तेरे पिता के समस्त घराने के मारे जाने का कारण मैं ही हुआ।

**1 Samuel 22:23**

<sup>23</sup> इसलिए तू मेरे साथ निडर रह; जो मेरे प्राण का ग्राहक है वहीं तेरे प्राण का भी ग्राहक है; परन्तु मेरे साथ रहने से तेरी रक्षा होगी।"

**1 Samuel 23:1**

<sup>1</sup> दाऊद को यह समाचार मिला कि पलिश्ती लोग कीला नगर से युद्ध कर रहे हैं, और खलिहानों को लूट रहे हैं।

**1 Samuel 23:2**

<sup>2</sup> तब दाऊद ने यहोवा से पूछा, "क्या मैं जाकर पलिश्तियों को मारूँ?" यहोवा ने दाऊद से कहा, "जा, और पलिश्तियों को मार के कीला को बचा।"

**1 Samuel 23:3**

<sup>3</sup> परन्तु दाऊद के जनों ने उससे कहा, "हम तो इस यहूदा देश में भी डरते रहते हैं, यदि हम कीला जाकर पलिश्तियों की सेना का सामना करें, तो क्या बहुत अधिक डर में न पड़ेंगे?"

**1 Samuel 23:4**

<sup>4</sup> तब दाऊद ने यहोवा से फिर पूछा, और यहोवा ने उसे उत्तर देकर कहा, "कमर बाँधकर कीला को जा; क्योंकि मैं पलिश्तियों को तेरे हाथ में कर दूँगा।"

**1 Samuel 23:5**

<sup>5</sup> इसलिए दाऊद अपने जनों को संग लेकर कीला को गया, और पलिश्तियों से लड़कर उनके पशुओं को हाँक लाया, और उन्हें बड़ी मार से मारा। अतः दाऊद ने कीला के निवासियों को बचाया।

**1 Samuel 23:6**

<sup>6</sup> जब अहीमेलेक का पुत्र एव्यातार दाऊद के पास कीला को भाग गया था, तब हाथ में एपोद लिए हुए गया था।

**1 Samuel 23:7**

<sup>7</sup> तब शाऊल को यह समाचार मिला कि दाऊद कीला को गया है। और शाऊल ने कहा, “परमेश्वर ने उसे मेरे हाथ में कर दिया है; वह तो फाटक और बेड़ेवाले नगर में घुसकर बन्द हो गया है।”

**1 Samuel 23:8**

<sup>8</sup> तब शाऊल ने अपनी सारी सेना को लड़ाई के लिये बुलाया, कि कीला को जाकर दाऊद और उसके जनों को धेर ले।

**1 Samuel 23:9**

<sup>9</sup> तब दाऊद ने जान लिया कि शाऊल मेरी हानि कि युक्ति कर रहा है; इसलिए उसने एव्यातार याजक से कहा, “एपोद को निकट ले आ।”

**1 Samuel 23:10**

<sup>10</sup> तब दाऊद ने कहा, “हे इसाएल के परमेश्वर यहोवा, तेरे दास ने निश्चय सुना है कि शाऊल मेरे कारण कीला नगर नष्ट करने को आना चाहता है।

**1 Samuel 23:11**

<sup>11</sup> क्या कीला के लोग मुझे उसके वश में कर देंगे? क्या जैसे तेरे दास ने सुना है, वैसे ही शाऊल आएगा? हे इसाएल के परमेश्वर यहोवा, अपने दास को यह बता।” यहोवा ने कहा, “हाँ, वह आएगा।”

**1 Samuel 23:12**

<sup>12</sup> फिर दाऊद ने पूछा, “क्या कीला के लोग मुझे और मेरे जनों को शाऊल के वश में कर देंगे?” यहोवा ने कहा, “हाँ, वे कर देंगे।”

**1 Samuel 23:13**

<sup>13</sup> तब दाऊद और उसके जन जो कोई छः सौ थे, कीला से निकल गए, और इधर-उधर जहाँ कहीं जा सके वहाँ गए। और जब शाऊल को यह बताया गया कि दाऊद कीला से निकल भागा है, तब उसने वहाँ जाने का विचार छोड़ दिया।

**1 Samuel 23:14**

<sup>14</sup> तब दाऊद जंगल के गढ़ों में रहने लगा, और पहाड़ी देश के जीप नामक जंगल में रहा। और शाऊल उसे प्रतिदिन ढूँढ़ता रहा, परन्तु परमेश्वर ने उसे उसके हाथ में न पड़ने दिया।

**1 Samuel 23:15**

<sup>15</sup> और दाऊद ने जान लिया कि शाऊल मेरे प्राण की खोज में निकला है। और दाऊद जीप नामक जंगल के होरेश नामक स्थान में था;

**1 Samuel 23:16**

<sup>16</sup> कि शाऊल का पुत्र योनातान उठकर उसके पास होरेश में गया, और परमेश्वर की चर्चा करके उसको ढाढ़स दिलाया।

**1 Samuel 23:17**

<sup>17</sup> उसने उससे कहा, “मत डर; क्योंकि तू मेरे पिता शाऊल के हाथ में न पड़ेगा; और तू ही इसाएल का राजा होगा, और मैं तेरे नीचे होऊँगा; और इस बात को मेरा पिता शाऊल भी जानता है।”

**1 Samuel 23:18**

<sup>18</sup> तब उन दोनों ने यहोवा की शपथ खाकर आपस में वाचा बाँधी; तब दाऊद होरेश में रह गया, और योनातान अपने घर चला गया।

**1 Samuel 23:19**

<sup>19</sup> तब जीपी लोग गिबा में शाऊल के पास जाकर कहने लगे, “दाऊद तो हमारे पास होरेश के गढ़ों में, अर्थात् उस हकीला नामक पहाड़ी पर छिपा रहता है, जो यशीमोन के दक्षिण की ओर है।”

**1 Samuel 23:20**

<sup>20</sup> इसलिए अब, हे राजा, तेरी जो इच्छा आने की है, तो आ; और उसको राजा के हाथ में पकड़वा देना हमारा काम होगा।"

**1 Samuel 23:21**

<sup>21</sup> शाऊल ने कहा, "यहोवा की आशीष तुम पर हो, क्योंकि तुम ने मुझ पर दया की है।

**1 Samuel 23:22**

<sup>22</sup> तुम चलकर और भी निश्चय कर लो; और देख-भाल कर जान लो, और उसके अड्डे का पता लगा लो, और पता लगाओ कि उसको वहाँ किसने देखा है; क्योंकि किसी ने मुझसे कहा है, कि वह बड़ी चतुराई से काम करता है।

**1 Samuel 23:23**

<sup>23</sup> इसलिए जहाँ कहीं वह छिपा करता है उन सब स्थानों को देख देखकर पहचानो, तब निश्चय करके मेरे पास लौट आना। और मैं तुम्हारे साथ चलूँगा, और यदि वह उस देश में कहीं भी हो, तो मैं उसे यहूदा के हजारों में से छूँढ़ निकालूँगा।"

**1 Samuel 23:24**

<sup>24</sup> तब वे चलकर शाऊल से पहले जीप को गए। परन्तु दाऊद अपने जनों समेत माओन नामक जंगल में चला गया था, जो अराबा में यशीमोन के दक्षिण की ओर है।

**1 Samuel 23:25**

<sup>25</sup> तब शाऊल अपने जनों को साथ लेकर उसकी खोज में गया। इसका समाचार पाकर दाऊद पर्वत पर से उतर के माओन जंगल में रहने लगा। यह सुन शाऊल ने माओन जंगल में दाऊद का पीछा किया।

**1 Samuel 23:26**

<sup>26</sup> शाऊल तो पहाड़ की एक ओर, और दाऊद अपने जनों समेत पहाड़ की दूसरी ओर जा रहा था; और दाऊद शाऊल के डर के मारे जल्दी जा रहा था, और शाऊल अपने जनों

समेत दाऊद और उसके जनों को पकड़ने के लिये घेरा बनाना चाहता था,

**1 Samuel 23:27**

<sup>27</sup> कि एक दूत ने शाऊल के पास आकर कहा, "फुर्ती से चला आ; क्योंकि पलिशियों ने देश पर चढ़ाई की है।"

**1 Samuel 23:28**

<sup>28</sup> यह सुन शाऊल दाऊद का पीछा छोड़कर पलिशियों का सामना करने को चला; इस कारण उस स्थान का नाम सेलाहम्म-हलकोत पड़ा।

**1 Samuel 23:29**

<sup>29</sup> वहाँ से दाऊद चढ़कर एनगदी के गढ़ों में रहने लगा।

**1 Samuel 24:1**

<sup>1</sup> जब शाऊल पलिशियों का पीछा करके लौटा, तब उसको यह समाचार मिला, कि दाऊद एनगदी के जंगल में है।

**1 Samuel 24:2**

<sup>2</sup> तब शाऊल समस्त इस्राएलियों में से तीन हजार को छाँटकर दाऊद और उसके जनों को 'जंगली बकरों की चट्टानों' पर खोजने गया।

**1 Samuel 24:3**

<sup>3</sup> जब वह मार्ग पर के भेड़शालाओं के पास पहुँचा जहाँ एक गुफा थी, तब शाऊल दिशा फिरने को उसके भीतर गया। और उसी गुफा के कोनों में दाऊद और उसके जन बैठे हुए थे।

**1 Samuel 24:4**

<sup>4</sup> तब दाऊद के जनों ने उससे कहा, "सुन, आज वही दिन है जिसके विषय यहोवा ने तुझ से कहा था, 'मैं तेरे शत्रु को तेरे हाथ में सौंप दूँगा, कि तू उससे मनमाना बर्ताव कर ले।'" तब दाऊद ने उठकर शाऊल के बागे की छोर को छिपकर काट लिया।

**1 Samuel 24:5**

<sup>5</sup> इसके बाद दाऊद शाऊल के बागे की छोर काटने से पछताया।

**1 Samuel 24:6**

<sup>6</sup> वह अपने जनों से कहने लगा, “यहोवा न करे कि मैं अपने प्रभु से जो यहोवा का अभिषिक्त है ऐसा काम करूँ, कि उस पर हाथ उठाऊँ, क्योंकि वह यहोवा का अभिषिक्त है।”

**1 Samuel 24:7**

<sup>7</sup> ऐसी बातें कहकर दाऊद ने अपने जनों को समझाया और उन्हें शाऊल पर आक्रमण करने को उठने न दिया। फिर शाऊल उठकर गुफा से निकला और अपना मार्ग लिया।

**1 Samuel 24:8**

<sup>8</sup> उसके बाद दाऊद भी उठकर गुफा से निकला और शाऊल को पीछे से पुकारके बोला, “हे मेरे प्रभु, हे राजा!” जब शाऊल ने पीछे मुड़कर देखा, तब दाऊद ने भूमि की ओर सिर झुकाकर दण्डवत् की।

**1 Samuel 24:9**

<sup>9</sup> और दाऊद ने शाऊल से कहा, “जो मनुष्य कहते हैं, कि दाऊद तेरी हानि चाहता है उनकी तूक्यों सुनता है?

**1 Samuel 24:10**

<sup>10</sup> देख, आज तूने अपनी आँखों से देखा है कि यहोवा ने आज गुफा में तुझे मेरे हाथ सौंप दिया था; और किसी किसी ने तो मुझसे तुझे मारने को कहा था, परन्तु मुझे तुझ पर तरस आया; और मैंने कहा, ‘मैं अपने प्रभु पर हाथ न उठाऊँगा; क्योंकि वह यहोवा का अभिषिक्त है।’

**1 Samuel 24:11**

<sup>11</sup> फिर, हे मेरे पिता, देख, अपने बागे की छोर मेरे हाथ में देख; मैंने तेरे बागे की छोर तो काट ली, परन्तु तुझे घात न किया; इससे निश्चय करके जान ले, कि मेरे मन में कोई बुराई या अपराध का सोच नहीं है। मैंने तेरे विरुद्ध कोई अपराध नहीं

किया, परन्तु तू मेरे प्राण लेने को मानो उसका अहेर करता रहता है।

**1 Samuel 24:12**

<sup>12</sup> यहोवा मेरा और तेरा न्याय करे, और यहोवा तुझ से मेरा बदला ले; परन्तु मेरा हाथ तुझ पर न उठेगा।

**1 Samuel 24:13**

<sup>13</sup> प्राचीनों के नीतिवचन के अनुसार ‘दुष्टा दुष्टों से होती है;’ परन्तु मेरा हाथ तुझ पर न उठेगा।

**1 Samuel 24:14**

<sup>14</sup> इसाएल का राजा किसका पीछा करने को निकला है? और किसके पीछे पड़ा है? एक मरे कुत्ते के पीछे! एक पिस्सू के पीछे!

**1 Samuel 24:15**

<sup>15</sup> इसलिए यहोवा न्यायी होकर मेरा तेरा विचार करे, और विचार करके मेरा मुकद्दमा लड़े, और न्याय करके मुझे तेरे हाथ से बचाए।”

**1 Samuel 24:16**

<sup>16</sup> जब दाऊद शाऊल से ये बातें कह चुका, तब शाऊल ने कहा, “हे मेरे बेटे दाऊद, क्या यह तेरा बौल है?” तब शाऊल चिल्लाकर रोने लगा।

**1 Samuel 24:17**

<sup>17</sup> फिर उसने दाऊद से कहा, “तू मुझसे अधिक धर्मी है; तूने तो मेरे साथ भलाई की है, परन्तु मैंने तेरे साथ बुराई की।

**1 Samuel 24:18**

<sup>18</sup> और तूने आज यह प्रगट किया है, कि तूने मेरे साथ भलाई की है, कि जब यहोवा ने मुझे तेरे हाथ में कर दिया, तब तूने मुझे घात न किया।

**1 Samuel 24:19**

<sup>19</sup> भला! क्या कोई मनुष्य अपने शत्रु को पाकर कुशल से जाने देता है? इसलिए जो तूने आज मेरे साथ किया है, इसका अच्छा बदला यहोवा तुझे दे।

**1 Samuel 24:20**

<sup>20</sup> और अब, मुझे मालूम हुआ है कि तू निश्चय राजा हो जाएगा, और इसाएल का राज्य तेरे हाथ में स्थिर होगा।

**1 Samuel 24:21**

<sup>21</sup> अब मुझसे यहोवा की शपथ खा, कि मैं तेरे वंश को तेरे बाद नष्ट न करूँगा, और तेरे पिता के घराने में से तेरा नाम मिटा न डालूँगा।<sup>11</sup>

**1 Samuel 24:22**

<sup>22</sup> तब दाऊद ने शाऊल से ऐसी ही शपथ खाई। तब शाऊल अपने घर चला गया; और दाऊद अपने जनों समेत गढ़ों में चला गया।

**1 Samuel 25:1**

<sup>1</sup> शमूएल की मृत्यु हो गई; और समस्त इसाएलियों ने इकट्ठे होकर उसके लिये छाती पीटी, और उसके घर ही में जो रामाह में था उसको मिट्टी दी। तब दाऊद उठकर पारान जंगल को चला गया।

**1 Samuel 25:2**

<sup>2</sup> माओन में एक पुरुष रहता था जिसका व्यापार कर्मेल में था। और वह पुरुष बहुत धनी था, और उसकी तीन हजार भेड़ें, और एक हजार बकरियाँ थीं; और वह अपनी भेड़ों का ऊन करतर रहा था।

**1 Samuel 25:3**

<sup>3</sup> उस पुरुष का नाम नाबाल, और उसकी पत्नी का नाम अबीगैल था। स्त्री तो बुद्धिमान और रूपवती थी, परन्तु पुरुष कठोर, और बुरे-बुरे काम करनेवाला था; वह कालेबवंशी था।

**1 Samuel 25:4**

<sup>4</sup> जब दाऊद ने जंगल में समाचार पाया, कि नाबाल अपनी भेड़ों का ऊन करतर रहा है;

**1 Samuel 25:5**

<sup>5</sup> तब दाऊद ने दस जवानों को वहाँ भेज दिया, और दाऊद ने उन जवानों से कहा, “कर्मेल में नाबाल के पास जाकर मेरी ओर से उसका कुशल क्षेम पूछो।

**1 Samuel 25:6**

<sup>6</sup> और उससे यह कहो, ‘तू चिरंजीव रहे, तेरा कल्याण हो, और तेरा घराना कल्याण से रहे, और जो कुछ तेरा है वह कल्याण से रहे।

**1 Samuel 25:7**

<sup>7</sup> मैंने सुना है, कि जो तू ऊन करतर रहा है; तेरे चरवाहे हम लोगों के पास रहे, और न तो हमने उनकी कुछ हानि की, और न उनका कुछ खोया गया।

**1 Samuel 25:8**

<sup>8</sup> अपने जवानों से यह बात पूछ ले, और वे तुझको बताएँगे। अतः इन जवानों पर तेरे अनुग्रह की वृष्टि हो; हम तो आनन्द के समय में आए हैं, इसलिए जो कुछ तेरे हाथ लगे वह अपने दासों और अपने बेटे दाऊद को दै।”<sup>12</sup>

**1 Samuel 25:9**

<sup>9</sup> दाऊद के जवान जाकर ऐसी बातें उसके नाम से नाबाल को सुनाकर चुप रहे।

**1 Samuel 25:10**

<sup>10</sup> नाबाल ने दाऊद के जनों को उत्तर देकर उनसे कहा, “दाऊद कौन है? यिशै का पुत्र कौन है? आजकल बहुत से दास अपने-अपने स्वामी के पास से भाग जाते हैं।

**1 Samuel 25:11**

<sup>11</sup> क्या मैं अपनी रोटी-पानी और जो पशु मैंने अपने कतरनेवालों के लिये मारे हैं लेकर ऐसे लोगों को दे द्यूँ जिनको मैं नहीं जानता कि कहाँ के हैं?”

**1 Samuel 25:12**

<sup>12</sup> तब दाऊद के जवानों ने लौटकर अपना मार्ग लिया, और लौटकर उसको ये सब बातें ज्यों की त्यों सुना दीं।

**1 Samuel 25:13**

<sup>13</sup> तब दाऊद ने अपने जनों से कहा, “अपनी-अपनी तलवार बाँध लो।” तब उन्होंने अपनी-अपनी तलवार बाँध ली; और दाऊद ने भी अपनी तलवार बाँध ली; और कोई चार सौ पुरुष दाऊद के पीछे-पीछे चले, और दो सौ सामान के पास रह गए।

**1 Samuel 25:14**

<sup>14</sup> परन्तु एक सेवक ने नाबाल की पत्नी अबीगैल को बताया, “दाऊद ने जंगल से हमारे स्वामी को आशीर्वाद देने के लिये दूत भेजे थे; और उसने उन्हें ललकार दिया।

**1 Samuel 25:15**

<sup>15</sup> परन्तु वे मनुष्य हम से बहुत अच्छा बताव रखते थे, और जब तक हम मैदान में रहते हुए उनके पास आया-जाया करते थे, तब तक न तो हमारी कुछ हानि हुई, और न हमारा कुछ खोया;

**1 Samuel 25:16**

<sup>16</sup> जब तक हम उनके साथ भेड़-बकरियाँ चराते रहे, तब तक वे रात दिन हमारी आड़ बने रहे।

**1 Samuel 25:17**

<sup>17</sup> इसलिए अब सोच विचार कर कि क्या करना चाहिए; क्योंकि उन्होंने हमारे स्वामी की और उसके समस्त घराने की हानि करना ठान लिया होगा, वह तो ऐसा दुष्ट है कि उससे कोई बोल भी नहीं सकता।”

**1 Samuel 25:18**

<sup>18</sup> तब अबीगैल ने फुर्ती से दो सौ रोटी, और दो कुप्पी दाखमधु, और पाँच भेड़ों का माँस, और पाँच सआ भूना हुआ अनाज, और एक सौ गुच्छे किशमिश, और अंजीरों की दो सौ टिकियाँ लेकर गदहों पर लदवाई।

**1 Samuel 25:19**

<sup>19</sup> और उसने अपने जवानों से कहा, “तुम मेरे आगे-आगे चलो, मैं तुम्हारे पीछे-पीछे आती हूँ;” परन्तु उसने अपने पति नाबाल से कुछ न कहा।

**1 Samuel 25:20**

<sup>20</sup> वह गदहे पर चढ़ी हुई पहाड़ की आड़ में उतरी जाती थी, और दाऊद अपने जनों समेत उसके सामने उतरा आता था; और वह उनको मिली।

**1 Samuel 25:21**

<sup>21</sup> दाऊद ने तो सोचा था, “मैंने जो जंगल में उसके सब माल की ऐसी रक्षा की कि उसका कुछ भी न खोया, यह निःसन्देह व्यर्थ हुआ; क्योंकि उसने भलाई के बदले मुझसे बुराई ही की है।

**1 Samuel 25:22**

<sup>22</sup> यदि सवेरे को उजियाला होने तक उस जन के समस्त लोगों में से एक लड़के को भी मैं जीवित छोड़ूँ, तो परमेश्वर मेरे सब शत्रुओं से ऐसा ही, वरन् इससे भी अधिक करे।”

**1 Samuel 25:23**

<sup>23</sup> दाऊद को देख अबीगैल फुर्ती करके गदहे पर से उतर पड़ी, और दाऊद के सम्मुख मुँह के बल भूमि पर गिरकर दण्डवत् की।

**1 Samuel 25:24**

<sup>24</sup> फिर वह उसके पाँव पर गिरकर कहने लगी, “हे मेरे प्रभु, यह अपराध मेरे ही सिर पर हो; तेरी दासी तुझ से कुछ कहना चाहती है, और तू अपनी दासी की बातों को सुन लै।

**1 Samuel 25:25**

<sup>25</sup> मेरा प्रभु उस दुष्ट नाबाल पर चित्त न लगाए; क्योंकि जैसा उसका नाम है वैसा ही वह आप है; उसका नाम तो नाबाल है, और सचमुच उसमें मूर्खता पाई जाती है; परन्तु मुझे तेरी दासी ने अपने प्रभु के जवानों को जिन्हें तूने भेजा था न देखा था।

**1 Samuel 25:26**

<sup>26</sup> और अब, हे मेरे प्रभु, यहोवा के जीवन की शपथ और तेरे जीवन की शपथ, कि यहोवा ने जो तुझे खून से और अपने हाथ के द्वारा अपना बदला लेने से रोक रखा है, इसलिए अब तेरे शत्रु और मेरे प्रभु की हानि के चाहनेवाले नाबाल ही के समान ठहरें।

**1 Samuel 25:27**

<sup>27</sup> और अब यह भेट जो तेरी दासी अपने प्रभु के पास लाई है, उन जवानों को दी जाए जो मेरे प्रभु के साथ चलते हैं।

**1 Samuel 25:28**

<sup>28</sup> अपनी दासी का अपराध क्षमा कर; क्योंकि यहोवा निश्चय मेरे प्रभु का घर बसाएगा और स्थिर करेगा, इसलिए कि मेरा प्रभु यहोवा की ओर से लड़ता है; और जन्म भर तुझ में कोई बुराई नहीं पाई जाएगी।

**1 Samuel 25:29**

<sup>29</sup> और यद्यपि एक मनुष्य तेरा पीछा करने और तेरे प्राण का ग्राहक होने को उठा है, तो भी मेरे प्रभु का प्राण तेरे परमेश्वर यहोवा की जीवनरूपी गठरी में बँधा रहेगा, और तेरे शत्रुओं के प्राणों को वह मानो गोफन में रखकर फेंक देगा।

**1 Samuel 25:30**

<sup>30</sup> इसलिए जब यहोवा मेरे प्रभु के लिये यह समस्त भलाई करेगा जो उसने तेरे विषय में कही है, और तुझे इसाएल पर प्रधान करके ठहराएगा,

**1 Samuel 25:31**

<sup>31</sup> तब तुझे इस कारण पछताना न होगा, या मेरे प्रभु का हृदय पीड़ित न होगा कि तूने अकारण खून किया, और मेरे प्रभु ने

अपना बदला आप लिया है। फिर जब यहोवा मेरे प्रभु से भलाई करे तब अपनी दासी को स्मरण करना।”

**1 Samuel 25:32**

<sup>32</sup> दाऊद ने अबीगैल से कहा, “इसाएल का परमेश्वर यहोवा धन्य है, जिसने आज के दिन मुझसे भेट करने के लिये तुझे भेजा है।

**1 Samuel 25:33**

<sup>33</sup> और तेरा विवेक धन्य है, और तू आप भी धन्य है, कि तूने मुझे आज के दिन खून करने और अपना बदला आप लैने से रोक लिया है।

**1 Samuel 25:34**

<sup>34</sup> क्योंकि सचमुच इसाएल का परमेश्वर यहोवा, जिसने मुझे तेरी हानि करने से रोका है, उसके जीवन की शपथ, यदि तू फुर्ती करके मुझसे भेट करने को न आती, तो निःसन्देह सवेरे को उजियाला होने तक नाबाल का कोई लड़का भी न बचता।”

**1 Samuel 25:35**

<sup>35</sup> तब दाऊद ने उसे ग्रहण किया जो वह उसके लिये लाई थी; फिर उससे उसने कहा, “अपने घर कुशल से जा; सुन, मैंने तेरी बात मानी है और तेरी विनती ग्रहण कर ली है।”

**1 Samuel 25:36**

<sup>36</sup> तब अबीगैल नाबाल के पास लौट गई; और क्या देखती है, कि वह घर में राजा का सा भोज कर रहा है। और नाबाल का मन मग्न है, और वह नशे में अति चूर हो गया है; इसलिए उसने भोर का उजियाला होने से पहले उससे कुछ भी न कहा।

**1 Samuel 25:37**

<sup>37</sup> सवेरे को जब नाबाल का नशा उतर गया, तब उसकी पत्नी ने उसे सारा हाल कह सुनाया, तब उसके मन का हियाव जाता रहा, और वह पत्थर सा सुन्न हो गया।

**1 Samuel 25:38**

<sup>38</sup> और दस दिन के पश्चात् यहोवा ने नाबाल को ऐसा मारा, कि वह मर गया।

**1 Samuel 25:39**

<sup>39</sup> नाबाल के मरने का हाल सुनकर दाऊद ने कहा, “धन्य है यहोवा जिसने नाबाल के साथ मेरी नामधाराई का मुकद्दमा लड़कर अपने दास को बुराई से रोक रखा; और यहोवा ने नाबाल की बुराई को उसी के सिर पर लाद दिया है।” तब दाऊद ने लोगों को अबीगैल के पास इसलिए भेजा कि वे उससे उसकी पत्नी होने की बातचीत करें।

**1 Samuel 25:40**

<sup>40</sup> तो जब दाऊद के सेवक कर्मल को अबीगैल के पास पहुँचे, तब उससे कहने लगे, “दाऊद ने हमें तेरे पास इसलिए भेजा है कि तू उसकी पत्नी बने।”

**1 Samuel 25:41**

<sup>41</sup> तब वह उठी, और मुँह के बल भूमि पर गिर दण्डवत् करके कहा, “तेरी दासी अपने प्रभु के सेवकों के चरण धोने के लिये दासी बने।”

**1 Samuel 25:42**

<sup>42</sup> तब अबीगैल फुर्ती से उठी, और गदहे पर चढ़ी, और उसकी पाँच सहेलियाँ उसके पीछे-पीछे हो लीं; और वह दाऊद के दूतों के पीछे-पीछे गई; और उसकी पत्नी हो गई।

**1 Samuel 25:43**

<sup>43</sup> और दाऊद ने यिज्रेल नगर की अहीनोअम से भी विवाह कर लिया, तो वे दोनों उसकी पत्नियाँ हुईं।

**1 Samuel 25:44**

<sup>44</sup> परन्तु शाऊल ने अपनी बेटी दाऊद की पत्नी मीकल को लैश के पुत्र गल्लीमवासी पलती को दे दिया था।

**1 Samuel 26:1**

<sup>1</sup> फिर जीपी लोग गिबा में शाऊल के पास जाकर कहने लगे, “क्या दाऊद उस हकीला नामक पहाड़ी पर जो यशीमोन के सामने है छिपा नहीं रहता?”

**1 Samuel 26:2**

<sup>2</sup> तब शाऊल उठकर इस्साएल के तीन हजार छाँटे हुए योद्धा संग लिए हुए गया कि दाऊद को जीप के जंगल में खोजे।

**1 Samuel 26:3**

<sup>3</sup> और शाऊल ने अपनी छावनी मार्ग के पास हकीला नामक पहाड़ी पर जो यशीमोन के सामने है डाली। परन्तु दाऊद जंगल में रहा; और उसने जान लिया, कि शाऊल मेरा पीछा करने को जंगल में आया है;

**1 Samuel 26:4**

<sup>4</sup> तब दाऊद ने भेदियों को भेजकर निश्चय कर लिया कि शाऊल सचमुच आ गया है।

**1 Samuel 26:5**

<sup>5</sup> तब दाऊद उठकर उस स्थान पर गया जहाँ शाऊल पड़ा था; और दाऊद ने उस स्थान को देखा जहाँ शाऊल अपने सेनापति नेर के पुत्र अब्ब्रेर समेत पड़ा था, शाऊल तो गाड़ियों की आड़ में पड़ा था और उसके लोग उसके चारों ओर डेरे डाले हुए थे।

**1 Samuel 26:6**

<sup>6</sup> तब दाऊद ने हित्ती अहीमेलेक और सरूयाह के पुत्र योआब के भाई अबीशै से कहा, “मेरे साथ उस छावनी में शाऊल के पास कौन चलेगा?” अबीशै ने कहा, “तेरे साथ मैं चलूँगा।”

**1 Samuel 26:7**

<sup>7</sup> अतः दाऊद और अबीशै रातों-रात उन लोगों के पास गए, और क्या देखते हैं, कि शाऊल गाड़ियों की आड़ में पड़ा सो रहा है, और उसका भाला उसके सिरहाने भूमि में गड़ा है; और अब्ब्रेर और योद्धा लोग उसके चारों ओर पड़े हुए हैं।

**1 Samuel 26:8**

<sup>8</sup> तब अबीशै ने दाऊद से कहा, “परमेश्वर ने आज तेरे शत्रु को तेरे हाथ में कर दिया है; इसलिए अब मैं उसको एक बार ऐसा माँड़ कि भाला उसे बेधता हुआ भूमि में धँस जाए, और मुझ को उसे दूसरी बार मारना न पड़ेगा।”

**1 Samuel 26:9**

<sup>9</sup> दाऊद ने अबीशै से कहा, “उसे नष्ट न कर; क्योंकि यहोवा के अभिषिक्त पर हाथ चलाकर कौन निर्दोष ठहर सकता है।”

**1 Samuel 26:10**

<sup>10</sup> फिर दाऊद ने कहा, “यहोवा के जीवन की शपथ यहोवा ही उसको मारेगा; या वह अपनी मृत्यु से मरेगा; या वह लड़ाई में जाकर मर जाएगा।

**1 Samuel 26:11**

<sup>11</sup> यहोवा न करे कि मैं अपना हाथ यहोवा के अभिषिक्त पर उठाऊँ; अब उसके सिरहाने से भाला और पानी की सुराही उठा ले, और हम यहाँ से चले जाएँ।”

**1 Samuel 26:12**

<sup>12</sup> तब दाऊद ने भाले और पानी की सुराही को शाऊल के सिरहाने से उठा लिया; और वे चले गए। और किसी ने इसे न देखा, और न जाना, और न कोई जागा; क्योंकि वे सब इस कारण सोए हुए थे, कि यहोवा की ओर से उनमें भारी नींद समा गई थी।

**1 Samuel 26:13**

<sup>13</sup> तब दाऊद दूसरी ओर जाकर दूर के पहाड़ की चोटी पर खड़ा हुआ, और दोनों के बीच बड़ा अन्तर था;

**1 Samuel 26:14**

<sup>14</sup> और दाऊद ने उन लोगों को, और नेर के पुत्र अब्बेर को पुकारके कहा, “हे अब्बेर क्या तू नहीं सुनता?” अब्बेर ने उत्तर देकर कहा, “तू कौन है जो राजा को पुकारता है?”

**1 Samuel 26:15**

<sup>15</sup> दाऊद ने अब्बेर से कहा, “क्या तू पुरुष नहीं है? इसाएल में तेरे तुल्य कौन है? तूने अपने स्वामी राजा की चौकसी क्यों नहीं की? एक जन तो तेरे स्वामी राजा को नष्ट करने घुसा था।

**1 Samuel 26:16**

<sup>16</sup> जो काम तूने किया है वह अच्छा नहीं। यहोवा के जीवन की शपथ तुम लोग मारे जाने के योग्य हो, क्योंकि तुम ने अपने स्वामी, यहोवा के अभिषिक्त की चौकसी नहीं की। और अब देख, राजा का भाला और पानी की सुराही जो उसके सिरहाने थी वे कहाँ हैं?”

**1 Samuel 26:17**

<sup>17</sup> तब शाऊल ने दाऊद का बोल पहचानकर कहा, “हे मेरे बेटे दाऊद, क्या यह तेरा बोल है?” दाऊद ने कहा, “हाँ, मेरे प्रभु राजा, मेरा ही बोल है।”

**1 Samuel 26:18**

<sup>18</sup> फिर उसने कहा, “मेरा प्रभु अपने दास का पीछा क्यों करता है? मैंने क्या किया है? और मुझसे कौन सी बुराई हुई है?

**1 Samuel 26:19**

<sup>19</sup> अब मेरा प्रभु राजा, अपने दास की बातें सुन ले। यदि यहोवा ने तुझे मेरे विरुद्ध उकसाया हो, तब तो वह भेट ग्रहण करे; परन्तु यदि आदमियों ने ऐसा किया हो, तो वे यहोवा की ओर से श्रापित हों, क्योंकि उन्होंने अब मुझे निकाल दिया कि मैं यहोवा के निज भाग में न रहूँ, और उन्होंने कहा है, ‘जा पराए देवताओं की उपासना कर।’

**1 Samuel 26:20**

<sup>20</sup> इसलिए अब मेरा लहू यहोवा की आँखों की ओट में भूमि पर न बहने पाए; इसाएल का राजा तो एक पिस्सू ढूँढ़ने आया है, जैसा कि कोई पहाड़ों पर तीतर का अहेर करे।”

**1 Samuel 26:21**

<sup>21</sup> शाऊल ने कहा, “मैंने पाप किया है, हे मेरे बेटे दाऊद लौट आ; मेरा प्राण आज के दिन तेरी दृष्टि में अनमोल ठहरा, इस

कारण मैं फिर तेरी कुछ हानि न करूँगा; सुन, मैंने मूर्खता की, और मुझसे बड़ी भूल हुई है।”

### 1 Samuel 26:22

<sup>22</sup> दाऊद ने उत्तर देकर कहा, “हे राजा, भाले को देख, कोई जवान इधर आकर इसे ले जाए।

### 1 Samuel 26:23

<sup>23</sup> यहोवा एक-एक को अपने-अपने धार्मिकता और सच्चाई का फल देगा; देख, आज यहोवा ने तुझको मेरे हाथ में कर दिया था, परन्तु मैंने यहोवा के अभिषेक्त पर अपना हाथ उठाना उचित न समझा।

### 1 Samuel 26:24

<sup>24</sup> इसलिए जैसे तेरे प्राण आज मेरी वृष्टि में प्रिय ठहरे, वैसे ही मेरे प्राण भी यहोवा की वृष्टि में प्रिय ठहरे, और वह मुझे समस्त विपत्तियों से छुड़ाए।”

### 1 Samuel 26:25

<sup>25</sup> शाऊल ने दाऊद से कहा, “हे मेरे बेटे दाऊद तू धन्य है! तू बड़े-बड़े काम करेगा और तेरे काम सफल होंगे।” तब दाऊद ने अपना मार्ग लिया, और शाऊल भी अपने स्थान को लौट गया।

### 1 Samuel 27:1

<sup>1</sup> तब दाऊद सोचने लगा, “अब मैं किसी न किसी दिन शाऊल के हाथ से नष्ट हो जाऊँगा; अब मेरे लिये उत्तम यह है कि मैं पलिशियों के देश में भाग जाऊँ; तब शाऊल मेरे विषय निराश होगा, और मुझे इसाएल के देश के किसी भाग में फिर न ढूँढ़ेगा, तब मैं उसके हाथ से बच निकलूँगा।”

### 1 Samuel 27:2

<sup>2</sup> तब दाऊद अपने छ: सौ संगी पुरुषों को लेकर चला गया, और गत के राजा माओक के पुत्र आकीश के पास गया।

### 1 Samuel 27:3

<sup>3</sup> और दाऊद और उसके जन अपने-अपने परिवार समेत गत में आकीश के पास रहने लगे। दाऊद तो अपनी दो स्त्रियों के साथ, अर्थात् यिज्रेली अहीनोअम, और नाबाल की स्त्री कर्मेली अबीगैल के साथ रहा।

### 1 Samuel 27:4

<sup>4</sup> जब शाऊल को यह समाचार मिला कि दाऊद गत को भाग गया है, तब उसने उसे फिर कभी न ढूँढ़ा।

### 1 Samuel 27:5

<sup>5</sup> दाऊद ने आकीश से कहा, “यदि मुझ पर तेरे अनुग्रह की वृष्टि हो, तो देश की किसी बस्ती में मुझे स्थान दिला दे जहाँ मैं रहूँ; तेरा दास तेरे साथ राजधानी में क्यों रहे?”

### 1 Samuel 27:6

<sup>6</sup> तब आकीश ने उसे उसी दिन सिकलग बस्ती दी; इस कारण से सिकलग आज के दिन तक यहूदा के राजाओं का बना है।

### 1 Samuel 27:7

<sup>7</sup> पलिशियों के देश में रहते-रहते दाऊद को एक वर्ष चार महीने बीत गए।

### 1 Samuel 27:8

<sup>8</sup> और दाऊद ने अपने जनों समेत जाकर गशूरियों, गिर्जियों, और अमालेकियों पर चढाई की, ये जातियाँ तो प्राचीनकाल से उस देश में रहती थीं जो शूर के मार्ग में मिस्स देश तक है।

### 1 Samuel 27:9

<sup>9</sup> दाऊद ने उस देश को नष्ट किया, और स्त्री पुरुष किसी को जीवित न छोड़ा, और भेड़-बकरी, गाय-बैल, गदहे, ऊँट, और वस्त्र लेकर लौटा, और आकीश के पास गया।

**1 Samuel 27:10**

<sup>10</sup> आकीश ने पूछा, “आज तुम ने चढ़ाई तो नहीं की?” दाऊद ने कहा, “हाँ, यहूदा यरहमेलियों और केनियों की दक्षिण दिशा में।”

**1 Samuel 27:11**

<sup>11</sup> दाऊद ने स्त्री पुरुष किसी को जीवित न छोड़ा कि उन्हें गत में पहुँचाए; उसने सोचा था, “ऐसा न हो कि वे हमारा काम बताकर यह कहें, कि दाऊद ने ऐसा-ऐसा किया है। वरन् जब से वह पलिश्टियों के देश में रहता है, तब से उसका काम ऐसा ही है।”

**1 Samuel 27:12**

<sup>12</sup> तब आकीश ने दाऊद की बात सच मानकर कहा, “यह अपने इस्साएली लोगों की दृष्टि में अति धृणित हुआ है; इसलिए यह सदा के लिये मेरा दास बना रहेगा।”

**1 Samuel 28:1**

<sup>1</sup> उन दिनों में पलिश्टियों ने इस्साएल से लड़ने के लिये अपनी सेना इकट्ठी की तब आकीश ने दाऊद से कहा, “निश्चय जान कि तुझे अपने जवानों समेत मेरे साथ सेना में जाना होगा।”

**1 Samuel 28:2**

<sup>2</sup> दाऊद ने आकीश से कहा, “इस कारण तू जान लेगा कि तेरा दास क्या करेगा।” आकीश ने दाऊद से कहा, “इस कारण मैं तुझे अपने सिर का रक्षक सदा के लिये ठहराऊँगा।”

**1 Samuel 28:3**

<sup>3</sup> शमूएल तो मर गया था, और समस्त इस्साएलियों ने उसके विषय छाती पीटी, और उसको उसके नगर रामाह में मिट्टी दी थी। और शाऊल ने ओझों और भूत-सिद्धि करनेवालों को देश से निकाल दिया था।

**1 Samuel 28:4**

<sup>4</sup> जब पलिश्टी इकट्ठे हुए और शूनेम में छावनी डाली, तो शाऊल ने सब इस्साएलियों को इकट्ठा किया, और उन्होंने गिलबो में छावनी डाली।

**1 Samuel 28:5**

<sup>5</sup> पलिश्टियों की सेना को देखकर शाऊल डर गया, और उसका मन अत्यन्त भयभीत हो काँप उठा।

**1 Samuel 28:6**

<sup>6</sup> और जब शाऊल ने यहोवा से पूछा, तब यहोवा ने न तो स्वप्न के द्वारा उसे उत्तर दिया, और न ऊरीम के द्वारा, और न भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा।

**1 Samuel 28:7**

<sup>7</sup> तब शाऊल ने अपने कर्मचारियों से कहा, “मेरे लिये किसी भूत-सिद्धि करनेवाली को छूँटो, कि मैं उसके पास जाकर उससे पूछँ।” उसके कर्मचारियों ने उससे कहा, “एनदोर में एक भूत-सिद्धि करनेवाली रहती है।”

**1 Samuel 28:8**

<sup>8</sup> तब शाऊल ने अपना भेष बदला, और दूसरे कपड़े पहनकर, दो मनुष्य संग लेकर, रातों-रात चलकर उस स्त्री के पास गया; और कहा, “अपने सिद्धि भूत से मेरे लिये भावी कहलवा, और जिसका नाम मैं लूँगा उसे बुलवा दे।”

**1 Samuel 28:9**

<sup>9</sup> स्त्री ने उससे कहा, “तू जानता है कि शाऊल ने क्या किया है, कि उसने ओझों और भूत-सिद्धि करनेवालों का देश से नाश किया है। फिर तू मेरे प्राण के लिये क्यों फंदा लगाता है कि मुझे मरवा डाले।”

**1 Samuel 28:10**

<sup>10</sup> शाऊल ने यहोवा की शपथ खाकर उससे कहा, “यहोवा के जीवन की शपथ, इस बात के कारण तुझे दण्ड न मिलेगा।”

**1 Samuel 28:11**

<sup>11</sup> तब स्त्री ने पूछा, “मैं तेरे लिये किसको बुलाऊँ?” उसने कहा, “शमूएल को मेरे लिये बुला।”

**1 Samuel 28:12**

<sup>12</sup> जब स्त्री ने शमूएल को देखा, तब ऊँचे शब्द से चिल्लाई; और शाऊल से कहा, “तूने मुझे क्यों धोखा दिया? तूतो शाऊल है।”

**1 Samuel 28:13**

<sup>13</sup> राजा ने उससे कहा, “मत डर; तुझे क्या देख पड़ता है?” स्त्री ने शाऊल से कहा, “मुझे एक देवता पृथ्वी में से चढ़ता हुआ दिखाई पड़ता है।”

**1 Samuel 28:14**

<sup>14</sup> उसने उससे पूछा, “उसका कैसा रूप है?” उसने कहा, “एक बूद्धा पुरुष बागा ओढ़े हुए चढ़ा आता है।” तब शाऊल ने निश्चय जानकर कि वह शमूएल है, औंधे मुँह भूमि पर गिरकर दण्डवत् किया।

**1 Samuel 28:15**

<sup>15</sup> शमूएल ने शाऊल से पूछा, “तूने मुझे ऊपर बुलाकर क्यों सताया है?” शाऊल ने कहा, “मैं बड़े संकट में पड़ा हूँ; क्योंकि पलिश्ती मेरे साथ लड़ रहे हैं और परमेश्वर ने मुझे छोड़ दिया, और अब मुझे न तो भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा उत्तर देता है, और न स्वप्नों के; इसलिए मैंने तुझे बुलाया कि तू मुझे जता दे कि मैं क्या करूँ।”

**1 Samuel 28:16**

<sup>16</sup> शमूएल ने कहा, “जब यहोवा तुझे छोड़कर तेरा शत्रु बन गया, तब तू मुझसे क्यों पूछता है?

**1 Samuel 28:17**

<sup>17</sup> यहोवा ने तो जैसे मुझसे कहलाया था वैसा ही उसने व्यवहार किया है; अर्थात् उसने तेरे हाथ से राज्य छीनकर तेरे पड़ोसी दाऊद को दे दिया है।

**1 Samuel 28:18**

<sup>18</sup> तूने जो यहोवा की बात न मानी, और न अमालेकियों को उसक भड़के हुए कोप के अनुसार दण्ड दिया था, इस कारण यहोवा ने तुझ से आज ऐसा बर्ताव किया।

**1 Samuel 28:19**

<sup>19</sup> फिर यहोवा तुझ समेत इसाएलियों को पलिश्तियों के हाथ में कर देगा; और तू अपने बेटों समेत कल मेरे साथ होगा; और इसाएली सेना को भी यहोवा पलिश्तियों के हाथ में कर देगा।”

**1 Samuel 28:20**

<sup>20</sup> तब शाऊल तुरन्त मुँह के बल भूमि पर गिर पड़ा, और शमूएल की बातों के कारण अत्यन्त डर गया; उसने पूरे दिन और रात भोजन न किया था, इससे उसमें बल कुछ भी न रहा।

**1 Samuel 28:21**

<sup>21</sup> तब वह स्त्री शाऊल के पास गई, और उसको अति व्याकुल देखकर उससे कहा, “सुन, तेरी दासी ने तो तेरी बात मानी; और मैंने अपने प्राण पर खेलकर तेरे वचनों को सुन लिया जो तूने मुझसे कहा।”

**1 Samuel 28:22**

<sup>22</sup> तो अब तू भी अपनी दासी की बात मान; और मैं तेरे सामने एक टुकड़ा रोटी रखूँ; तू उसे खा, कि जब तू अपना मार्ग ले तब तुझे बल आ जाए।”

**1 Samuel 28:23**

<sup>23</sup> उसने इन्कार करके कहा, “मैं न खाऊँगा।” परन्तु उसके सेवकों और स्त्री ने मिलकर यहाँ तक उसे दबाया कि वह उनकी बात मानकर, भूमि पर से उठकर खाट पर बैठ गया।

**1 Samuel 28:24**

<sup>24</sup> स्त्री के घर में तो एक तैयार किया हुआ बछड़ा था, उसने फूर्ती करके उसे मारा, फिर आटा लेकर गूँधा, और अखमीरी रोटी बनाकर

**1 Samuel 28:25**

<sup>25</sup> शाऊल और उसके सेवकों के आगे लाई; और उन्होंने खाया। तब वे उठकर उसी रात चले गए।

**1 Samuel 29:1**

<sup>1</sup> पलिश्तियों ने अपनी समस्त सेना को अपेक में इकट्ठा किया; और इसाएली पित्रेल के निकट के सोते के पास डेरे डाले हुए थे।

**1 Samuel 29:2**

<sup>2</sup> तब पलिश्तियों के सरदार अपने-अपने सैंकड़ों और हजारों समेत आगे बढ़ गए, और सेना के पीछे-पीछे आकीश के साथ दाऊद भी अपने जनों समेत बढ़ गया।

**1 Samuel 29:3**

<sup>3</sup> तब पलिश्ती हाकिमों ने पूछा, “इन इब्रियों का यहाँ क्या काम है?” आकीश ने पलिश्ती सरदारों से कहा, “क्या वह इसाएल के राजा शाऊल का कर्मचारी दाऊद नहीं है, जो क्या जाने कितने दिनों से वरन् वर्षों से मेरे साथ रहता है, और जब से वह भाग आया, तब से आज तक मैंने उसमें कोई दोष नहीं पाया।”

**1 Samuel 29:4**

<sup>4</sup> तब पलिश्ती हाकिम उससे क्रोधित हुए; और उससे कहा, “उस पुरुष को लौटा दे, कि वह उस स्थान पर जाए जो तूने उसके लिये ठहराया है; वह हमारे संग लड़ाई में न आने पाएगा, कहीं ऐसा न हो कि वह लड़ाई में हमारा विरोधी बन जाए। फिर वह अपने स्वामी से किस रीति से मेल करे? क्या लोगों के सिर कटवाकर न करेगा?

**1 Samuel 29:5**

<sup>5</sup> क्या यह वही दाऊद नहीं है, जिसके विषय में लोग नाचते और गाते हुए एक दूसरे से कहते थे, ‘शाऊल ने हजारों को, पर दाऊद ने लाखों को मारा है?’”

**1 Samuel 29:6**

<sup>6</sup> तब आकीश ने दाऊद को बुलाकर उससे कहा, “यहोवा के जीवन की शापथ तू तो सीधा है, और सेना में तेरा मेरे संग आना-जाना भी मुझे भावता है; क्योंकि जब से तू मेरे पास आया तब से लेकर आज तक मैंने तो तुझ में कोई बुराई नहीं पाई। तो भी सरदार लोग तुझे नहीं चाहते।

**1 Samuel 29:7**

<sup>7</sup> इसलिए अब तू कुशल से लौट जा; ऐसा न हो कि पलिश्ती सरदार तुझ से अप्रसन्न हों।”

**1 Samuel 29:8**

<sup>8</sup> दाऊद ने आकीश से कहा, “मैंने क्या किया है? और जब से मैं तेरे सामने आया तब से आज तक तूने अपने दास में क्या पाया है कि मैं अपने प्रभु राजा के शत्रुओं से लड़ने न पाऊँ?”

**1 Samuel 29:9**

<sup>9</sup> आकीश ने दाऊद को उत्तर देकर कहा, “हाँ, यह मुझे मालूम है, तू मेरी दृष्टि में तो परमेश्वर के दूत के समान अच्छा लगता है; तो भी पलिश्ती हाकिमों ने कहा है, ‘वह हमारे संग लड़ाई में न जाने पाएगा।’

**1 Samuel 29:10**

<sup>10</sup> इसलिए अब तू अपने प्रभु के सेवकों को लेकर जो तेरे साथ आए हैं सवेरे को तड़के उठना; और तुम तड़के उठकर उजियाला होते ही चले जाना।”

**1 Samuel 29:11**

<sup>11</sup> इसलिए दाऊद अपने जनों समेत तड़के उठकर पलिश्तियों के देश को लौट गया। और पलिश्ती पित्रेल को चढ़ गए।

**1 Samuel 30:1**

<sup>1</sup> तीसरे दिन जब दाऊद अपने जनों समेत सिकलग पहुँचा, तब उन्होंने क्या देखा, कि अमालेकियों ने दक्षिण देश और सिकलग पर चढ़ाई की। और सिकलग को मार के फूँक दिया,

**1 Samuel 30:2**

<sup>2</sup> और उसमें की स्त्री आदि छोटे बड़े जितने थे, सब को बन्दी बनाकर ले गए; उन्होंने किसी को मार तो नहीं डाला, परन्तु सभी को लेकर अपना मार्ग लिया।

**1 Samuel 30:3**

<sup>3</sup> इसलिए जब दाऊद अपने जनों समेत उस नगर में पहुँचा, तब नगर तो जला पड़ा था, और स्लियाँ और बेटे-बेटियाँ बँधुआई में चली गई थीं।

**1 Samuel 30:4**

<sup>4</sup> तब दाऊद और वे लोग जो उसके साथ थे चिल्लाकर इतना रोए, कि फिर उनमें रोने की शक्ति न रही।

**1 Samuel 30:5**

<sup>5</sup> दाऊद की दोनों स्लियाँ, यित्रेली अहीनोअम, और कर्मली नाबाल की स्त्री अबीगैल, बन्दी बना ली गई थीं।

**1 Samuel 30:6**

<sup>6</sup> और दाऊद बड़े संकट में पड़ा; क्योंकि लोग अपने बेटे-बेटियों के कारण बहुत शोकित होकर उस पर पथरवाह करने की चर्चा कर रहे थे। परन्तु दाऊद ने अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण करके हियाव बोंधा।

**1 Samuel 30:7**

<sup>7</sup> तब दाऊद ने अहीमेलेक के पुत्र एब्यातार याजक से कहा, “एपोद को मेरे पास ला।” तब एब्यातार एपोद को दाऊद के पास ले आया।

**1 Samuel 30:8**

<sup>8</sup> और दाऊद ने यहोवा से पूछा, “क्या मैं इस दल का पीछा करूँ? क्या उसको जा पकड़ा?” उसने उससे कहा, “पीछा कर; क्योंकि तू निश्चय उसकी पकड़ेगा, और निःसन्देह सब कुछ छुड़ा लाएगा;”

**1 Samuel 30:9**

<sup>9</sup> तब दाऊद अपने छः सौ साथी जनों को लेकर बसोर नामक नदी तक पहुँचा; वहाँ कुछ लोग छोड़े जाकर रह गए।

**1 Samuel 30:10**

<sup>10</sup> दाऊद तो चार सौ पुरुषों समेत पीछा किए चला गया; परन्तु दो सौ जो ऐसे थक गए थे, कि बसोर नदी के पार न जा सके वहाँ रहे।

**1 Samuel 30:11**

<sup>11</sup> उनको एक मिस्री पुरुष मैदान में मिला, उन्होंने उसे दाऊद के पास ले जाकर रोटी दी; और उसने उसे खाया, तब उसे पानी पिलाया,

**1 Samuel 30:12**

<sup>12</sup> फिर उन्होंने उसको अंजीर की टिकिया का एक टुकड़ा और दो गुच्छे किशमिश दिए। और जब उसने खाया, तब उसके जी में जी आया; उसने तीन दिन और तीन रात से न तो रोटी खाई थी और न पानी पिया था।

**1 Samuel 30:13**

<sup>13</sup> तब दाऊद ने उससे पूछा, “तू किसका जन है? और कहाँ का है?” उसने कहा, “मैं तो मिस्री जवान और एक अमालेकी मनुष्य का दास हूँ; और तीन दिन हुए कि मैं बीमार पड़ा, और मेरा स्वामी मुझे छोड़ गया।

**1 Samuel 30:14**

<sup>14</sup> हम लोगों ने करेतियों की दक्षिण दिशा में, और यहूदा के देश में, और कालेब की दक्षिण दिशा में चढ़ाई की; और सिकलग को आग लगाकर फूँक दिया था।”

**1 Samuel 30:15**

<sup>15</sup> दाऊद ने उससे पूछा, “क्या तू मुझे उस दल के पास पहुँचा देगा?” उसने कहा, “मुझसे परमेश्वर की यह शपथ खा, कि तू मुझे न तो प्राण से मारेगा, और न मेरे स्वामी के हाथ कर देगा, तब मैं तुझे उस दल के पास पहुँचा दूँगा।”

**1 Samuel 30:16**

<sup>16</sup> जब उसने उसे पहुँचाया, तब देखने में आया कि वे सब भूमि पर छिटके हुए खाते पीते, और उस बड़ी लूट के कारण, जो वे पलिशियों के देश और यहूदा देश से लाए थे, नाच रहे हैं।

**1 Samuel 30:17**

<sup>17</sup> इसलिए दाऊद उन्हें रात के पहले पहर से लेकर दूसरे दिन की साँझ तक मारता रहा; यहाँ तक कि चार सौ जवानों को छोड़, जो ऊँटों पर चढ़कर भाग गए, उनमें से एक भी मनुष्य न बचा।

**1 Samuel 30:18**

<sup>18</sup> और जो कुछ अमालेकी ले गए थे वह सब दाऊद ने छुड़ाया; और दाऊद ने अपनी दोनों स्त्रियों को भी छुड़ा लिया।

**1 Samuel 30:19**

<sup>19</sup> वरन् उनके क्या छोटे, क्या बड़े, क्या बेटे, क्या बेटियाँ, क्या लूट का माल, सब कुछ जो अमालेकी ले गए थे, उसमें से कोई वस्तु न रही जो उनको न मिली हो; क्योंकि दाऊद सब का सब लौटा लाया।

**1 Samuel 30:20**

<sup>20</sup> और दाऊद ने सब भेड़-बकरियाँ, और गाय-बैल भी लूट लिए; और इन्हें लोग यह कहते हुए अपने जानवरों के आगे हाँकते गए, कि यह दाऊद की लूट है।

**1 Samuel 30:21**

<sup>21</sup> तब दाऊद उन दो सौ पुरुषों के पास आया, जो ऐसे थक गए थे कि दाऊद के पीछे-पीछे न जा सके थे, और बसेर नाले के पास छोड़ दिए गए थे; और वे दाऊद से और उसके संग के लोगों से मिलने को चले; और दाऊद ने उनके पास पहुँचकर उनका कुशल क्षेम पूछा।

**1 Samuel 30:22**

<sup>22</sup> तब उन लोगों में से जो दाऊद के संग गए थे सब दुष्ट और ओछे लोगों ने कहा, “ये लोग हमारे साथ नहीं चले थे, इस कारण हम उन्हें अपने छुड़ाए हुए लूट के माल में से कुछ न देंगे, केवल एक-एक मनुष्य को उसकी स्त्री और बाल-बच्चे देंगे, कि वे उन्हें लेकर चले जाएँ।”

**1 Samuel 30:23**

<sup>23</sup> परन्तु दाऊद ने कहा, “हे मेरे भाइयों, तुम उस माल के साथ ऐसा न करने पाओगे जिसे यहोवा ने हमें दिया है; और उसने हमारी रक्षा की, और उस दल को जिसने हमारे ऊपर चढ़ाई की थी हमारे हाथ में कर दिया है।

**1 Samuel 30:24**

<sup>24</sup> और इस विषय में तुम्हारी कौन सुनेगा? लड़ाई में जानेवाले का जैसा भाग हो, सामान के पास बैठे हुए का भी वैसा ही भाग होगा; दोनों एक ही समान भाग पाएँगे।”

**1 Samuel 30:25**

<sup>25</sup> और दाऊद ने इसाएलियों के लिये ऐसी ही विधि और नियम ठहराया, और वह उस दिन से लेकर आगे को वरन् आज लों बना है।

**1 Samuel 30:26**

<sup>26</sup> सिक्कलग में पहुँचकर दाऊद ने यहूदी पुरनियों के पास जो उसके मित्र थे लूट के माल में से कुछ कुछ भेजा, और यह सन्देश भेजा, “यहोवा के शत्रुओं से ली हुई लूट में से तुम्हरे लिये यह भेंट है।”

**1 Samuel 30:27**

<sup>27</sup> अर्थात् बेतेल के दक्षिण देश के रामोत, यत्तीर,

**1 Samuel 30:28**

<sup>28</sup> अरोएर, सिपमोत, एश्तमो,

**1 Samuel 30:29**

<sup>29</sup> राकाल, यरहमेलियों के नगरों, केनियों के नगरों,

**1 Samuel 30:30**

<sup>30</sup> होर्मा, कोराशान, अताक,

**1 Samuel 30:31**

<sup>31</sup> हेब्रोन आदि जितने स्थानों में दाऊद अपने जनों समेत फिरा करता था, उन सब के पुरनियों के पास उसने कुछ कुछ भेजा।

**1 Samuel 31:1**

<sup>1</sup> पलिश्ती तो इस्माएलियों से लड़े; और इस्माएली पुरुष पलिश्तियों के सामने से भागे, और गिलबो नाम पहाड़ पर मारे गए।

**1 Samuel 31:2**

<sup>2</sup> और पलिश्ती शाऊल और उसके पुत्रों के पीछे लगे रहे; और पलिश्तियों ने शाऊल के पुत्र योनातान, अबीनादाब, और मल्कीशूअ को मार डाला।

**1 Samuel 31:3**

<sup>3</sup> शाऊल के साथ घमासान युद्ध हो रहा था, और धनुधरियों ने उसे पा लिया, और वह उनके कारण अत्यन्त व्याकुल हो गया।

**1 Samuel 31:4**

<sup>4</sup> तब शाऊल ने अपने हथियार ढोनेवाले से कहा, “अपनी तलवार खींचकर मुझे भोंक दे, ऐसा न हो कि वे खतनारहित लोग आकर मुझे भोंक दें, और मेरा ठट्ठा करें।” परन्तु उसके हथियार ढोनेवाले ने अत्यन्त भय खाकर ऐसा करने से इन्कार किया। तब शाऊल अपनी तलवार खड़ी करके उस पर गिर पड़ा।

**1 Samuel 31:5**

<sup>5</sup> यह देखकर कि शाऊल मर गया, उसका हथियार ढोनेवाला भी अपनी तलवार पर आप गिरकर उसके साथ मर गया।

**1 Samuel 31:6**

<sup>6</sup> अतः शाऊल, और उसके तीनों पुत्र, और उसका हथियार ढोनेवाला, और उसके समस्त जन उसी दिन एक संग मर गए।

**1 Samuel 31:7**

<sup>7</sup> यह देखकर कि इस्माएली पुरुष भाग गए, और शाऊल और उसके पुत्र मर गए, उस तराई की दूसरी ओर वाले और यरदन के पार रहनेवाले भी इस्माएली मनुष्य अपने-अपने नगरों को छोड़कर भाग गए; और पलिश्ती आकर उनमें रहने लगे।

**1 Samuel 31:8**

<sup>8</sup> दूसरे दिन जब पलिश्ती मारे हुओं के माल को लूटने आए, तब उनको शाऊल और उसके तीनों पुत्र गिलबो पहाड़ पर पड़े हुए मिले।

**1 Samuel 31:9**

<sup>9</sup> तब उन्होंने शाऊल का सिर काटा, और हथियार लूट लिए, और पलिश्तियों के देश के सब स्थानों में दूतों को इसलिए भेजा, कि उनके देवालयों और साधारण लोगों में यह शुभ समाचार देते जाएँ।

**1 Samuel 31:10**

<sup>10</sup> तब उन्होंने उसके हथियार तो अश्तोरेत नामक देवियों के मन्दिर में रखे, और उसके शव को बेतशान की शहरपनाह में जड़ दिया।

**1 Samuel 31:11**

<sup>11</sup> जब गिलादवाले याबेश के निवासियों ने सुना कि पलिश्तियों ने शाऊल से क्या-क्या किया है,

**1 Samuel 31:12**

<sup>12</sup> तब सब शूरवीर चले, और रातों-रात जाकर शाऊल और उसके पुत्रों के शव बेतशान की शहरपनाह पर से याबेश में ले आए, और वहीं फूँक दिए

**1 Samuel 31:13**

<sup>13</sup> तब उन्होंने उनकी हड्डियाँ लेकर याबेश के झाऊ के पेड़ के नीचे गाड़ दीं, और सात दिन तक उपवास किया।